देहल्वी - एक परीचय

90 वर्षो से अधिक प्राचीन परम्परा का भरोसा ....

देहल्वी एक गतीशील संगठट है जो पुराने व पेटेन्ट यूनानी और आयुर्वेदिक योगों के निर्माण में कार्यरत है। 'देहल्वी' ब्राण्ड, 'शमा ग्रुप' के संस्थापक हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ देहल्वी के पोते और मुहम्मद इलयास देहल्वी के सुपुत्र मोहसिन देहल्वी द्वारा, आज सफलता की नई ऊंचाईयां छू रहा है। 1978 में मोहसिन देहल्वी अपने दादा की हर्बल संस्था, 'बड़ा दवाख़ाना' से संलग्न हो गए जो 1926 में स्थापित हुई थी और 1956 के बाद 'शमा (यू एण्ड ए) लैबोरेट्रीज़' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

अपने यशस्वी दादा के पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए मोहसिन देहल्वी ने भी, उत्पादनों के पारम्परिक गुणों से समझोता किए बिना, न केवल गुणवत्ता व शुद्धता पर पूरा नियंत्रण रखा, बल्कि उनकी आाधुनिक पैकेजिंग व प्रस्तुतीकरण पर भी विशेष ध्यान दिया। दोनों ही कम्पनियां, **देहल्वी नैचुरल्ज़** व **देहल्वी अम्बर हर्बल्ज़ प्रा.लि.**, अपनी सफलता का श्रेय अपने अनुभवी एवं निपुण हकीमों और वैद्यों को देते हैं जो अपने पेशे और दवाएं बनाने में विशेष अनुभव रखते हैं। आज देहल्वी न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय हर्बल औषधि मार्केट में भी एक आदर्णीय नाम है।

अपने 700 से अधिक हर्बल हेल्थकेयर उत्पादों द्वारा, जिनमें सौंदर्य प्रसाधन एवं आहार परिपूरक भी शामिल है, देहल्वी ने मानव जाति को दुख देने वाले रोगों को दूर करने के लिये प्रगतिशील और संघर्ष पूर्ण युद्ध छेड़ रखा है। प्रचीन यूनानी एवं आयुर्वेदिक महापुरूषों द्वारा निर्धारित विवरण का पालन सख़ती से किया जाता हैं। इसकी सभी औषधियां देशी कानून के अनुसार रजिस्टर्ड होती हैं और ड्रग कन्ट्रोलर ऑफ इन्डिया के द्वारा स्वीकृत व जी.एम.पी. प्रमाणित होती हैं।

देहल्वी अपने तमाम नुस्ख़ों में निरन्तर शोध के साथ–साथ नए प्रयोग करती रहती है और इसी आधार पर अपनी औषधियों को विश्वसनीय नुस्ख़ों के अनुसार तैयार करती है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि हमारी दवाओं को जानवरों पर प्रयोग नहीं किया जाता है।

चूंकि वनस्पति एवं जड़ी बूटियों का कोई स्तर निर्धारित नहीं किया गया है, इसलिये विभिन्न जगहों पर उनके विभिन्न प्रभाव देखने को मिलते हैं। इन कमियों को दूर करने के लिये देहल्वी पूरी गहराई के साथ आधुनिक शोध व परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए औषधि गुणवत्ता के नियमों का पालन करती है। अपने उत्पाद को उपभोक्ताओं तक पहुंचाने के लिये कम्पनी आरम्भिक जांच पड़ताल में कम से कम दो वर्ष का समय लगाती है और इस बात का पूरा ध्यान रखती है कि इस उद्योग में शोध व संशोधन की क्रिया जारी रहे। यही कारण है कि इसकी तमाम उत्पादों की गुणवत्ता और प्रमाण पर अनुभवी डाक्टरों, हकीमों और वैद्यों की एक टीम सदैव नज़र रखती है और यही टीम अपने पूरे भरोसे व विशवास के साथ रोगियों के लिए औषधियां पेश करती है जो उन्हें स्वस्थ व तन्दुरुस्त रखने में सहायक सिद्ध होती हैं।

यही कारण है कि देहल्वी उत्पादनों पर सभी हकीम एवं वैद्य आंख मूंद कर भरोसा करते हैं।

इन प्रयासों को मान्यता प्रदान करते हुए देहल्वी संस्थान को 1997 में 'बेस्ट यूनानी मैनुफ़ैक्चरिंग कम्पनी' और 2010 में 'बेस्ट मैनुफ़ैक्चरिंग कम्पनी फ़ार मॉडर्नाइज़िंग यूनानी सिस्टम आफ़ मेंडिसन' नामक 'हकीम अजमल ख़ां ग्लोबल अवार्ड' प्रदान किए जा चुके हैं।

आज देहल्वी के उत्पादन न केवल देश में प्रचलित हैं बल्कि इंगलैंड, अमरीका, दक्षिण अफ़रीका, हंगरी, मलेशिया, मालद्वीप, जर्मनी, सुमालिया, किन्या तथा यूक्रेन समेत विभिन्न देशों को सफलता पूर्वक निर्यात किए जाते हैं।

विषय सूची

मस्तिष्क और स्नायु संबंधी रोग	**12**
सिर दर्द, आधे सिर का दर्द और सिर चकराना	12
मस्तिष्क की दुर्बलता	13
सुषुम्ना रज्जू (स्पाइनल कॉर्ड) की दुर्बलता	13
मानसिक अवसाद	13
चिन्ता	13
तनाव	14
अनिद्रा (नींद न आना)	14
भूल (स्मृति लोप)	15
लू लग जाना	16
मस्तिष्क संबंधी झिल्लियों की सूजन	16
मालीख़ूलिया (उन्माद)	16
अपस्मार (मिर्गी)	17
स्नायुओं की सूजन	17
गृध्रसी	17
फ़ालिज, लक़वा और कंपन्न	17
रक्ताघात	18
इम्यूनो रोग	**18**
प्रतिरक्षा प्रणाली रोग	18
अंतःस्त्रावी प्रणाली रोग	**21**
थायराइड रोग	21
नेत्र रोग	**21**
नेत्रज्योति क्षीणता	21
पपोटों की खुजली, आंख आना और गुहांजनी	21
मोतिया बिंद	21
कर्ण रोग	**22**
कनफ़ैड़	22
कर्ण पीड़ा	22
कान की फुन्सियां तथा कर्णस्राव (कान बहना)	22
कान की खुजली	22
ऊंचा सुनना	22
कान बजना	22
नासिका रोग	**22**
छीकें आना	22
नासिका रक्तस्राव (नक्सीर फूटना)	22
नज़ला, ज़ुकाम एवं इनफ़्लुएंज़ा	23
वायुविवरशोथ (साइनॉसाइटिस)	24
नाक की दुर्गंध	25
नासिका कृमि (नाक के कीड़े)	25
सूंघने की शक्ति का ह्रास	25
दांतों और मसूढ़ों के रोग	**25**
दंतपीड़ा	25
दंत मलिनता	25
मसूढ़ों से ख़ून आना	25
मसूढ़ों से पीप आना	25
मसूढ़ों की सूजन	26
दंत अस्थिरता (दांतों का हिलना)	26
मुंह और जीभ के रोग	**26**
मुंह आना (मुख पाक)	26
राल बहना	26
मुंह की बदबू	26
होंठ फटना और होंठो का सूखापन	26
हकलाहट	26
हलक़ और गले के रोग	**26**
कव्वे का लटक जाना	26
गले के गुदूदों का सूजना (तुंडिकेरी)	26
हलक़ की फुन्सियां	26
नर्ख़रे की सूजन और आवाज़ बैठ जाना	27
रोहिणी	27
सीने के रोग	**27**
खांसी	27
दमा	27
रक्तष्ठीवन (ख़ून थूकना)	28
राजयक्ष्मा तथा टी0 बी0	29
निमोनिया व पसली का दर्द	29
हृदय रोग	**29**
हृदय दुर्बलता	29
हृदय की धड़कन	31
ब्लड प्रैशर का बढ़ना (उच्च रक्तचाप)	32

ब्लड प्रेशर का कम होना (निम्न रक्तचाप)	33
कोलेस्ट्रॉल का ऊँचा स्तर	33
बेहोशी (मूर्च्छा)	33
आमाशय रोग	**33**
आमाशय की दुर्बलता	33
आमाशय पीड़ा	36
अपाचन और अफारा	36
हचकी	37
मतली व कै	37
भूख की कमी	37
अम्लपित्त वृद्धि	38
हैज़ा	38
ख़ून की कै	38
आमाशय की गर्मी	38
प्यास की अधिकता	38
अपाचन के दस्त और कै	38
यकृत तथा पित्ते के रोग	**38**
यकृत की सूजन और कठोरता	38
यकृत की दुर्बलता	40
यकृत की गर्मी	41
यकृत की ठंड	41
पित्ते की सूजन व पथरी	41
जलंधर (प्यास)	41
तिल्ली के रोग	**41**
तिल्ली का बढ़ जाना	41
पीलिया	41
रक्त का ह्रास	41
मोटापा	**42**
सेलुलाईट	**42**
आंत्रिक रोग	**42**
दस्त व पेचिश	42
क़ब्ज़	43
बवासीर और भगंदर	45
अंतड़ियों के कीड़े	45
उदर पीड़ा	46
आमाशय, गुर्दा और मूत्राशय रोग	**46**
गुर्दे और मूत्राशय की पथरी	46
मूत्र मार्ग संक्रमण	47
गुर्दे और मूत्राशय की दुर्बलता	47
पेशाब की अधिकता	47
पेशाब में शक्कर आना	47
गीली गैंग्रीन	48
पेशाब का कठिनाई से आना	48
बिस्तर में पेशाब का निकल जाना	48
बेइरादा बूंद बूंद पेशाब निकल जाना	48
जलन से पेशाब आना	49
पेशाब में एलब्यूमिन स्राव	49
गुर्दे और मूत्राशय की गर्मी	49
गुर्दे का दर्द	49
पेशाब में रक्त आना (रक्त मेह)	49
पुरूष संबंधी ख़ास रोग	**49**
पौरूष शक्ति की कमी	49
स्वप्नदोष की अधिकता और प्रमेह	52
शीघ्र वीर्य पतन	54
वीर्य स्राव	54
वीर्य की कमी	55
लिंग का ढीला और टेढ़ापन	55
बैनाइन प्रोस्टेटिक हाइपरप्लेसिया	57
अंडकोषों की सूजन	57
अंडकोषों की खाज	57
स्त्रियों के विशेष रोग	**57**
श्वेत प्रदर और गर्भाशय की सूजन	57
बच्चेदानी की कमज़ोरी	58
गर्भपात	58
गर्भ धारण में असुविधा	58
रक्तप्रदर	59
मासिक धर्म का अधिक मात्रा में आना (अत्यार्त्तव)	59
कष्टार्त्तव और अनार्त्तव	59
मासिक धर्म या ऋतु स्त्रव का रुक जाना	59
योनि का फैलाव	60
योनि की खाज	60
बच्चेदानी का बाहर निकलना	60
यौनइच्छा की कमी	60
स्तन के आकार में कमी	60

बांझपन	61
वातोन्माद	61
गर्भाशय की सख़्ती	61
दूध की कमी	61
दूध की अधिकता	61
बच्चे की पैदाइश के बाद	61
जोड़ों के रोग	**62**
गठिया, सन्धिशोथ, जोड़ों का दर्द तथा कमर का दर्द	62
हड्डियों में छिद्रलता	63
खेल के दौरान घाव	64
कैल्सियम हीनता संलक्षण	64
रक्त विकार और त्वचा रोग	**64**
फुन्सी, घाव और खुजली	64
एक्ज़ीमा	66
सोरिएसिस	66
घाव	66
रसौलियां (कंठ माला)	66
सफ़ेद दाग़	66
मुहासे	67
दाद	67
पित्ती उछलना	67
रतिज रोग	**67**
उपदंश	67
मूत्रनली में मवाद पड़ना	68
बालों के रोग	**68**
बालों का गिरना	68
समय पूर्व बालों का सफ़ेद होना	69
बालख़ोरा	69
सिर की जुंए	69
विभिन्न प्रकार के रोग	**69**
सामान्य ज्वर	69
डेंगु बुख़ार	70
मलेरिया	70
मोती झर्रा	70
ख़सरा	70
बाल रोग	**70**
अजीर्ण तथा क़ब्ज	70
बाल मिर्गी	70
सामान्य दुर्बलता	71
बच्चों के दस्त	71
पसली चलना	71
बच्चों की काली खांसी	71
सामान्य शारीरिक दुर्बलता	**71**
घरेलू औषधियां	**75**
आयुर्वेदिक औषधियां	**76**

औषधि सूची

अ	
अर्क़ अफसनतीन	38
अर्क़ अजवाएन	33
अर्क़ अंबर	29
अर्क़ अरबा	38
अर्क़ उश्बा	64
अर्क़ कासनी	39
अर्क़ गावज़बां	31
अर्क़ गुलाब	31
अर्क़ गुलाब (आई ड्राप)	21
अर्क़ चिरायता	64
अर्क़ ज़च्चा	61
अर्क़ ज़ीरा	42
अर्क़ दशमूल	62
अर्क़ नाना	37
अर्क़ नीलोफ़र	69
अर्क़ पोदीना	37
अर्क़ ब्रंजासिफ़	33
अर्क़ बादियान	34
अर्क़ बेद मुश्क	31
अर्क़ मकोह	39
अर्क़ माउल्लहम ख़ास	71
अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा	71
अर्क़ माउल्लहम मकोह कासनी वाला	39
अर्क़ मुण्डी	
अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून	64
अर्क़ राहत	68
अर्क़ शाहतरा	64
अक़रक़राह कैप्सूल	17
अप्सरा एड	54
अर्बियन नुस्ख़ा	29
अदरक कैप्सूल	34
अर्जुना आमला रस	29
अर्जुना कैप्सूल	29
अर्जुना रस	29
अल अहमर	49
अशोका कैप्सूल	59
अश्वगन्धा कैप्सूल	71
अश्वगन्धा रस (संतरा रस युक्त)	71
असबी प्लस	49
असरोल कैप्सूल	32
आमला एलोवेरा जामुन करेला रस	47
आमला एलोवेरा रस	19
आमला कैप्सूल	18
आमला रस	19
आमलीना	15,72
ऑस्टो–पी	63
ओस्टोपेन आइण्टमेंट	62
ओस्टोपेन टैबलेट्स	62
ओस्टोपेन मसाज आयॅल	62
ओबेलीन	42
औलिगो–एस	55
इ	
इकसीर ख़वातीन	59
इकसीर ख़वातीन–SF	59
इकसीर गुर्दा	46
इकसीर जिगर	39
इकसीर जिर्यान	52
इकसीर मेदा ख़ास	34
इम्यूनो बूस्ट	19
इम्यूनो–हल्दी	19
इतरीफ़ल उस्तख़ुद्दूस	23
इतरीफ़ल किशनीज़ी	12
इतरीफ़ल ग़दूदी	66
इतरीफ़ल ज़मानी	12
इतरीफ़ल दीदान	45
इतरीफ़ल मुक़व्वी दिमाग	13
इतरीफ़ल मुक़िल	45
इतरीफ़ल मुलय्यन	43
इतरीफ़ल शाहतरा	21
इंदमाल	68
ईसब–केयर	43
ईज़ी–हील	48
ए	
एक्ज़ी क्रीम	66
एनर्जाईन	72
एनर्जी–एड	72
एलोवेरा कैप्सूल	19
एलोवेरा जेली	62
एलोवेरा जूस	20
ऐक्टिलाइफ़ कैप्सूल	20
ऐपी–कैप	17
ऐस्मा–कैप	27
क	
कफ़नो सिरप	27
कफ़नो–SF	27
कफ़नो टैबलेट्स	27
क़ब्ज़–क्योर सिरप	43
क़ब्ज़–क्योर पिल्ज़	43
करेला कैप्सूल	47

करेला जामुन रस	48
करेला रस	48
कलौंजी कैप्सूल	72
कार्डियो–सिप	30
काम–डाउन	13
कासनी कैप्सूल	40
कुलिया बजूरी–SF	40
कुल्थी कैप्सूल	46
कुश्ता अक़ीक़	31
कुश्ता अबरक कलां	28
कुश्ता अबरक सफ़ेद	27
कुश्ता अबरक स्याह	27
कुश्ता क़र्नुलएल	29
कुश्ता क़लई	52
कुश्ता ख़बसुल हदीद	41
कुश्ता गौदन्ती	62
कुश्ता ज़मर्रुद	47
कुश्ता तिला	72
कुश्ता नुक़रा	30
कुश्ता फ़ौलाद	22
कुश्ता बैज़ा मुर्ग़	47
कुश्ता मरजान	23
कुश्ता मरजान जवाहर	15
कुश्ता मरवारीद	30
कुश्ता सदफ	52
कुश्ता हजरूल यहूद	41
कुर्स अलकलीन	38
कुर्स कहरूबा	37
कुर्स जिर्यान	52
कुर्स दवाए गुर्दा	46
कुर्स दीदान	46
कुर्स दीदान जदीद	46
कुर्स पोदीना	34
कुर्स बंदिश ख़ून	28
कुर्स बवासीर ख़ास	45
कुर्स मुलय्यन	43
कुर्स मुसक्किन	12
कुर्स मालती बसंत	34
कैप्सूल कुलयाती	47
कैरुती अरद क्रसना	29
कैल्विट–सी	64
कोहलुल जवाहर	21
कौंच कैप्सूल	49
कौन्सटिवैक	44
ख	
ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला	28
ख़मीरा आबरेशम सादा	21
ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला	30
ख़मीरा ख़शख़ाश	23
ख़मीरा गावज़बां अंबरी	13
ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला	17
ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला	13
ख़मीरा गावज़बां सादा	13
ख़मीरा बनफ़शा	23
ख़मीरा मरवारीद	70
ख़मीरा मरवारीद बनुस्ख़ा कलां	16
ख़मीरा सन्दल सादा	31
ग	
गावज़बां कैप्सूल	23
गैसट्रीट सिरप	34
गैसट्रीट–SF	34
गैस–टैब	34
गिलो कैप्सूल	69
गिलो आमला रस	20
गोखरू कैप्सूल	55
गोली वाजिद नवाबी	54
गुग्गल कैप्सूल	33
गुड़मार कैप्सूल	48
ज	
ज़माद वर्म उन्सेयेन	57
जवारिश अनारैन	34
जवारिश आमला सादा	22
जवारिश ऊद तुर्श	37
जवारिश ऊद शीरीं	37
जवारिश कमूनी	36
जवारिश कमूनी कबीर	36
जवारिश कमूनी मुसहिल	44
जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां	34
जवारिश ज़रऊनी सादा	34
जवारिश ज़ंजबील	36
जवारिश जालीनूस	34
जवारिश तबाशीर	35
जवारिश तमर हिंदी	35
जवारिश पोदीना	35
जवारिश पोदीना विलाएती	35
जवारिश बिसबासा	37
जवारिश मस्तगी	42
जवारिश मेदा	35
जवारिश शाही	30
जवाहर मोहरा	30
ज़ाफ़रान (केसर)	75

जामुन रस	48
जामुन सिरका	48
जिगरॉन कैप्सूल	39
जिगरॉन सिरप	39
जिगरॉन–SF	39
जिगरॉन टैबलेट्स	39
जिर्यानिल	52
जीवन तिलाई पिल्ज़	49
जीवन–रक्षक	73
जौहर खुसिया	55
जौहर मुनक़्क़ा	67
जौहर सीन	50
ट	
ट्रीट पाउडर	68
ट्रीट बालों का काला साबुन	68
ट्रीट हर्बल शैम्पू	68
ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल	68
ट्रीट हेयर केयर कैप्सूल	69
टैस्ट्रॉन	55
टॉन्सिलिन	26
ड	
डर्मा–एड आइण्टमेंट	66
डायब–ईज़	48
डिप्रैसोनिल	13
ड्रैगन फोर्स	50
त	
तगर कैप्सूल	14
तिला ख़ास	55
तिला दारचीनी	55
तिला बेनज़ीर	56
तिला मुक़व्वी	56
तिला मुमसिक ख़ास	52
तिला सुर्ख़	56
तुलसी कैप्सूल	75
तुलसी रस	20
त्रिकटु कैप्सूल	35
त्रिफला अमलतास रस	44
त्रिफला एलोवेरा रस	44
त्रिफला कैप्सूल	75
त्रिफला चूर्ण	76
त्रिफला रस	44
थ	
थायरो–कैप	21
द	
दवाए टकोर	56
दवाए बालख़ोरा	69

दवाए मालिश	56
दवाउलमिस्क बारिद जवाहरवाली	31
दवाउलमिस्क बारिद सादा	32
दवाउलमिस्क मोतदिल	32
दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली	32,33
दवाउलमिस्क हार जवाहर	17
दवाउलमिस्क हार सादा	17
दवाउश्शिफ़ा	16
दया कूज़ा	23
दाफ़े बुख़ार	70
देहल्वी अंबर शिलाजीत कैप्सूल	13
देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़	30
देहल्वी आर्द ख़ुर्मीन कैप्सूल	52
देहल्वी इसबग़ोल	44
देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तखुद्दूस) कैप्सूल	23
देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल	50
देहल्वी कमून कैप्सूल	36
देहल्वी कलोंजी ऑयल	73
देहल्वी गेलीनूस पिल्ज	35
देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल	35
देहल्वी जलाल कैप्सूल	50
देहल्वी जोशांदा	23
देहल्वी जोशांदा ड्राप्स	23
देहल्वी जोशांदा ग्रेन्यूल्ज़	23
देहल्वी जौहरी कैप्सूल	67
देहल्वी डी0एम0एम0 जवाहरी कैप्सूल	32
देहल्वी डी0वर्द कैप्सूल	39
देहल्वी ब्लू बाम	75
देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल	50
देहल्वी माजून कलोंजी	73
देहल्वी मुहासा पैक	67
देहल्वी नैचूरल घुट्टी	70
देहल्वी नैचूरल बेबी टॉनिक	70
देहल्वी नैचूरल शहद	75
देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक	73
देहल्वी पी आर टैबलेट्स	62
देहल्वी रोग़न फ़ास्फ़ोरस	62
देहल्वी रोग़न ज़रारीह	69
देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल	50
देहल्वी सूरंजान मुफ़ासिल कैप्सूल	62
देहल्वी सेहाटोन	73
देहल्वी हार्टोन–डी आर	30
न	
नीम कैप्सूल	65
नीलोफ़र कैप्सूल	14

नूरो नज़र सुर्मा	21
नैचुरो–ज़ाईम	35
नोपेन टैबलेट्स	62
नोशदारू	35
नौरस	75
प	
पर्ल कैल्सियम कैप्सूल	64
पपीता लीफ़ कैप्सूल	70
पंबादाना कैप्सूल	61
पाएलीना कैप्सूल	45
पाएलीना मरहम	45
पावर–जेन कैप्सूल	50
पीनाइल ऑयल	56
पीनाइल कैप्सूल	56
पुदीनौल	38,75
पुनर्नवा कैप्सूल	47
प्रेशर–ईज़	32
प्रोस्टेट–बी एच	57
फ	
फर्म–अप कैप्सूल	60
फर्म–अप लोशन	60
फ़िमॉन	60
फ़िमॉन जेली	58
फ्रेशेन अप	65
ब	
बनादिकुल बज़ूर	49
बरशाशा	24
बहमन कैप्सूल	30
बाबूना कैप्सूल	14
ब्राह्मी कैप्सूल	15
ब्रह्मी शंखपुष्पी रस	15
बीजबंद कैप्सूल	28
बेल कैप्सूल	43
ब्रेनी	15
ब्रेनी मिक्स	73
म	
मकोह कासनी रस	39
मकोह कैप्सूल	39
मरहम आतशक	67
मरहम काफूरी	66
मरहम दाख़लियून	61
मरहम बवासीर	45
मरहम राल	66
मस्तगी कैप्सूल	43
माईग्रा–कैप	12
माजून अक़रब	46

माजून अज़ाराक़ी	17
माजून अंजदान	53
माजून अस्पंद सोख़तनी	50
माजून आर्द ख़ुर्मा	53
माजून इंजीर	44
माजून उश्बा	65
माजून कुंदर	47
माजून चोबचीनी	63
माजून चोबचीनी बनुस्ख़ा ख़ास	18
माजून जलाली	51
माजून जालीनूस लूलवी	51
माजून जिर्यान ख़ास	53
माजून जोगराज गूगल	18
माजून तल्ख़	18
माजून दबीदुल वर्द	39
माजून नजाह	16
माजून नानख़ाह	36
माजून प्याज़	51
माजून फ़लासफ़ा	51
माजून मासिकुल बोल	47
माजून मुक़व्वी मेदा	36
माजून मुक़व्वी रहम	58
माजून मुग़ल्लिज़	53
माजून मुग़ल्लिज़ जवाहर	53
माजून मुग़ल्लिज़ मूसली	53
माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास	67
माजून मोचरस	57
माजून लना	18
माजून संगदाना मुर्ग़	43
माजून संगसरे माही	46
माजून सालब	51
माजून सीर अलवी ख़ानी	18
माजून सुपारी पाक	58
माजून सूरंजान	63
माजून हजरूल यहूद	41
माजून हमल अंबरी अलवी ख़ानी	58
मुलेठी कैप्सूल	40
मुसफ़्फ़ी आज़म	65
मूसली केसर कैप्सूल	73
मूसली केसर प्राश	73
मूसली सफ़ैद कैप्सूल	53
मेथी कैप्सूल	48
मैमोराईज़	15
मैनसो–पी	59
मोचरस कैप्सूल	45
मौरिंगा कैप्सूल	74

य	
यूनीकैल कैप्सूल	46
र	
रह्युमा	63
रियाहीन चूर्ण	37
रूह अर्क़ केवड़ा	32
रूह अर्क़ गुलाब	32
रेग्युलेट	59
रोग़न अरंडी	44
रोग़न अरबा	14
रोग़न आमला ख़ास	69
रोग़न कद्दू	12
रोग़न काहू	12
रोग़न कीमिया	18
रोग़न ख़रातीन	57
रोग़न ख़शख़ाश	14
रोग़न गुल	16
रोग़न चंबेली	69
रोग़न ज़ैतून	41
रोग़न जोंक	56
रोग़न दर्द	63
रोग़न दारचीनी	25
रोग़न नीम	45
रोग़न बनफ़शा	12
रोग़न बादाम शीरीं	13
रोग़न बाबची	66
रोग़न बाबूना	62
रोग़न बीर बहूटी	57
रोग़न बैज़ा मुर्ग़	69
रोग़न मालकंगनी	62
रोग़न लबूब सबा	15
रोग़न लौंग	25
रोग़न संदल	68
रोग़न सुर्ख़	18
रोग़न सूंरजान	18
ल	
लऊक़ कतां	28
लऊक़ बादाम	29
लऊक़ मोतदिल	24
लऊक़ सपिस्तां	24
लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी	28
ल्यूको–क्योर	57
लबूब कबीर	51
लबूब बारिद	51
लिपोकैप	33
लेहसुन कैप्सूल	33

लैक्टा–एम	61
लैवेंडर कैप्सूल	24
व	
वसाका कैप्सूल	28
वाजिद नवाबी ऑयल	57
विग–विट कैप्सूल	51
विलायती इमली कैप्सूल	42
वीटग्रास कैप्सूल	20
वीटग्रास रस	20
श	
शंखपुष्पी कैप्सूल	15
शर्बत अंगूर शीरीं	32
शर्बत अंजबार	28
शर्बत अंजीर	44
शर्बत अनार शीरीं	16
शर्बत अरज़ानी	44
शर्बत अरबा	40
शर्बत अहमद शाही	16
शर्बत उन्नाब	65
शर्बत उश्बा ख़ास	65
शर्बत उस्तख़ुद्दूस	24
शर्बत आलू बालू	46
शर्बत एजाज़	29
शर्बत कासनी	40
शर्बत केवड़ा	16
शर्बत ख़स	16
शर्बत ख़ाकसी	70
शर्बत गुलाब	16
शर्बत ज़ूफ़ा मुरक्कब	28
शर्बत ज़ूफ़ा सादा	28
शर्बत तूत स्याह	26
शर्बत दीनार	40
शर्बत नज़ला	24
शर्बत नीलोफ़र	16
शर्बत फ़ौलाद	74
शर्बत बज़ूरी बारिद	41
शर्बत बज़ूरी मोतदिल	41
शर्बत बज़ूरी हार	40
शर्बत बनफ़शा	24
शर्बत बेलगिरी	43
शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून	65
शर्बत मुहल्लिल	40
शर्बत सदर	27
शर्बत संदल	16
शर्बत हब्बुल आस	43
शाही गुलबर्ग	16

शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर	51
शिलाजीत केयर	74
शिलाजीत कैप्सूल	74
स	
स्ट्रैसोनिल	14
सबातीन	53
सनून जदीद	25
सनून सुर्ख़	25
सफूफ़ असलुस्सूस	53
सफूफ़ इंद्रि जुल्लाब	49
सफ़ूफ़उल इमलाह	36
सफूफ़ नमक सुलेमानी	36
सफूफ़ बर्स	66
सफूफ़ बीजबंद	53
सफूफ़ मुकलियासा	43
सफ़ूफ़ मुहज़्जिल	42
सफ़ूफ़ सीलान	57
सतावर कैप्सूल	60
सना कैप्सूल	44
सलाई–गुग्गुल कैप्सूल	63
साईनस–आई कैप्सूल	24
साईनस–आई आयल	25
स्किन–क्लिअर कैप्सूल	65
स्किन–क्लिअर सिरप	65
स्किन–क्लिअर –SF	65
स्पिरूलीना कैप्सूल	74
सीलानी	57
सुपारी पाक पाउडर	58
सेब सिरका	76
सेन–केयर कैप्सूल	44
सेन–केयर पाउडर	44
सेलुलाईट कंट्रोल आयल	42
सेहत बख़्श	29
सोरो–एड आइण्टमेंट	66
ह	
हब्बे अज़ाराक़ी	18
हब्बे अंबर मोमियाई	51
हब्बे अयारिज	12
हब्बे असगंद	17
हब्बे आसाब नुक़रई	18
हब्बे कबिद नौशादरी	40
हब्बे ख़ास	74
हब्बे जदवार	51
हब्बे जवाहर	31
हब्बे जालीनूस	52
हब्बे जिर्यान ख़ास	53

हब्बे ज़ीकुन्नफ़स	28
हब्बे जुन्द	70
हब्बे तिन्कार	37
हब्बे तिलाई	24
हब्बे निशात	54
हब्बे पपीता	36
हब्बे पेचिश	43
हब्बे बनफ़शा	12
हब्बे बवासीर ख़ूनी	45
हब्बे बवासीर बादी	45
हब्बे बहतुस्सौत	27
हब्बे मर्वारीदी	58
हब्बे मुक़व्वी तिलाई	52
हब्बे मुक़व्वी नुक़रई	54
हब्बे मुदिर	59
हब्बे मुमसिक ख़ास	54
हब्बे मुमसिकी नुक़रई	54
हब्बे मुसफ़्फ़ी ख़ून	65
हब्बे मुक़िल	45
हब्बे मुक़िल जदीद	45
हब्बे रसौत	45
हब्बे राल	43
हब्बे लीमू	67
हब्बे शिफ़ा	12
हब्बे सलाजीत	74
हब्बे सरा	17
हब्बे सुमाक	43
हब्बे सूरंजान	17
हब्बे हमल	59
हब्बे हलतीत	36
हल्दी कैप्सूल	64
हलवा घीकवार	63
हाज़मीन	37
हार्ट–केयर	31
हिम तुलसी	69
हुस्ने राना	66

मस्तिष्क और स्नायु संबंधी रोग
(Diseases of Brain & Nerves)
सिर दर्द, आधे सिर का दर्द और सिर चकराना
(Headache, Migraine & Vertigo)

इतरीफ़ल किशनीज़ी : आमाशय की गर्मी को दूर करता है। हाथों, पैरों और सिर से गर्मी निकलती महसूस होने के दोष को दूर करता है। क़ब्ज़ को दूर करता है। इसके अनवरत सेवन से स्थायी नज़ला सदैव के लिए ख़त्म हो जाता है। साथ ही नज़ले से उत्पन्न अन्य रोग जैसे सिर दर्द, चक्कर आना, आंखों की लाली और कान का दर्द भी इसके सेवन से ठीक हो जाते हैं।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय हल्के गर्म पानी या दूध से सेवन कराएं। बच्चों को उनकी आयु के अनुसार 3 ग्राम से 5 ग्राम तक सेवन कराएं।

इतरीफ़ल ज़मानी : स्थायी नज़ला, ज़ुकाम, सिर दर्द, आधे सिर का दर्द, मालीख़ूलिया (उन्माद), फलंज, उदर शूल और सिर के भारीपन को दूर करता है। इसके सेवन से स्थायी क़ब्ज़ भी दूर हो जाता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय हल्के गर्म पानी या दूध से खिलाएं। स्थायी कब्ज़ की अवस्था में 10 ग्राम से 20 ग्राम तक सेवन कराएं।

कुर्स मुसक्किन : शरीर के किसी भी भाग में महसूस होने वाला दर्द इसके सेवन से अति शीघ्र चला जाता है। स्नायुविक शांति के लिए भी लाभकर है।
सेवन विधि : एक टिकिया 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहरवाला के साथ खिलाएं।

माईग्रा–कैप : माइग्रेन (जिसमें तीव्र व धड़कन के साथ सिर के एक तरफ़ दर्द होता है) में लाभकारी है। इस तरह का दर्द अचानक आंख या कनपटी में या उनके आस–पास उठता है और फ़िर यह आधे सिर या पूरे सिर में फ़ैल जाता है और फ़िर भूख की कमी, मतली, उलटी, प्रकाश और ध्वनि के प्रति संवेदनशीलता और खाने को मन नहीं करना आदि पैदा हो जाते हैं।
सेवन विधि : एक या दो कैप्सूल्स दिन में दो बार पानी से खिलाएं। एक बार सूर्य निकलने से पहले ज़रूर खिलाएं।

रोग़न कद्दू : मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करके ठंडक पैदा करता और निद्रा लाता है। गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द को दूर करता है।
प्रयोग विधि : आवश्यक्तानुसार रात को सोते समय सिर और माथे पर मालिश करें। नाक और कानों में भी एक–दो बूंदें डालें।

रोग़न काहू : गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द को दूर करता है। मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करता है तथा निद्रा लाता है।
प्रयोग विधि : आवश्यक्तानुसार रात को सोते समय सिर और माथे पर मालिश करें। नाक और कानों में भी एक–दो बूंदें डालें।

रोग़न बनफ़शा : सिर दर्द में लाभकर है। मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करता है तथा निद्रा लाता है।
प्रयोग विधि : सिर और माथे पर मालिश करें।

हब्बे अयारिज : पुराने सिर दर्द, मिर्गी और अन्य मस्तिष्क रोगों में लाभकर है। मस्तिष्क के गंदे द्रव्यों को निकाल कर मानसिक रोगों में लाभकर सिद्ध होती है।
सेवन विधि : जब चार घड़ी रात शेष हो तो 3 ग्राम गोलियां (24 गोलियां) अर्क़ गावज़बां 125 मिली लीटर के साथ खिलाएं। प्रातःकाल जागने के बाद जुल्लाब की औषधि पिलाएं।

हब्बे बनफ़शा : मस्तिष्क तथा सीने के गंदे द्रव्यों का विरेचन करती है। गर्मी से पैदा होने वाले सिर दर्द को शांति देती है। दमा और सांस फूलने में लाभकारी है।
सेवन विधि : एक–दो गोलियां रात को सोते समय दें।

हब्बे शिफ़ा : सिर दर्द के लिए लाभकर है। प्रायः स्नायुविक और पुराने ज्वर में उपयोगी है। यौवन को बनाए रखती है और स्वास्थ्य रक्षक है। इसके सेवन से अफ़ीम खाने की आदत छूट जाती है।
सेवन विधि : एक गोली प्रातःकाल निहार मुंह पानी से खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल उस्तख़ुद्दूस, इतरीफ़ल मुलय्यन, कुश्ता मरजान, कुश्ता मरजान जवाहर, ख़मीरा गावज़बां अंबरी, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला, ख़मीरा मरवारीद, दवाउलमिस्क मोतदिल, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तख़ुद्दूस) कैप्सूल, देहल्वी ब्लू बाम, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, नौरस, रोग़न गुल, लैवेंडर कैप्सूल और हब्बे जवाहर का भी सेवन सिर दर्द, आधे सिर का दर्द और सिर चकराना में कराया जा सकता है।

मस्तिष्क की दुर्बलता
(Cerebral Atony)

इतरीफ़ल मुक़व्वी दिमाग़ : मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है व नेत्रों की शक्ति को बढ़ाता है। पुराने नज़ले और सिर दर्द में लाभकर है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय हल्के गर्म पानी या दूध से खिलाएं।

ख़मीरा गावज़बां अंबरी : हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है। हृदय की धड़कन, घबराहट और बुरे विचारों की परेशानी को दूर करता है। नेत्र शक्ति को बढ़ाता है, मस्तिष्क की दुर्बलता को दूर करता है और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। मानसिक कर्मियों के लिए इसका दैनिक सेवन लाभकर है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातःकाल निहार मुंह या आवश्यक्तानुसार पानी से खिलाएं।

ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला : हृदय एवं मस्तिष्क की शक्ति और प्रफुल्लता के लिए अति लाभकर है। इसका शीघ्र प्रभाव सामान्य शारीरिक दुर्बलता और विषाद रोग (मालीख़ूलिया) को दूर करता है। मानसिक दुर्बलता को दूर करता है तथा बुद्धि एवं मस्तिष्क को कुशाग्र करता है।
सेवन विधि : 5 ग्रम प्रातःकाल निहार मुंह या आवश्यक्तानुसार दूध के साथ सेवन कराएं।

ख़मीरा गावज़बां सादा : हृदय और मास्तिष्क को शक्ति और प्रफुल्लता देता है। हृदय की धड़कन, घबराहट और उन्माद (मालीख़ूलिया) को दूर करता है। नेत्र ज्योति को बनाए रखता है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल निहार मुंह चांदी के वर्क़ में लपेट कर खिलाएं। 125 मिली लीटर अर्क़ बादयान या ताज़ा पानी से भी सेवन करा सकते हैं।

रोग़न बादाम शीरीं : इसकी मालिश से मस्तिष्क को शक्ति और तरावट प्राप्त होती है। स्नायविक थकन दूर हो कर नींद आ जाती है। आंतरिक रूप से इसके सेवन से आंतों की ख़ुश्की दूर हो जाती है। अगर आंतों की ख़ुश्की से क़ब्ज़ रहता है तो इसके सेवन से वह भी दूर हो जाता है।
प्रयोग विधि : 5 मिली लीटर से 10 मिली लीटर तक सिर पर लगाएं। नाक और कानों में भी एक दो बूंदें टपकाएं। कब्ज़ को दूर करने के लिए निश्चित मात्रा में 250 मिली लीटर दूध में मिलाकर पिलाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त आमलीना, इतरीफ़ल उस्तख़ुद्दूस, इतरीफ़ल किश्नीज़ी, कुश्ता तिला, कुश्ता नुक़रा, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तख़ुद्दूस) कैप्सूल, ब्रेनी, ब्रेनी मिक्स, मैमोराईज़, नौरस, लैवेंडर कैप्सूल और हब्बे अंबर मोमियाई भी मस्तिष्क की दुर्बलता में सेवन कराए जा सकते हैं।

सुषुम्ना रज्जू (स्पाइनल कॉर्ड) की दुर्बलता
(Weakness of Spinal Cord)

देहल्वी अंबर शिलाजीत कैप्सूल : केंद्रीय स्नायु संस्थान को पोषण देता है। ये ख़ून का संचारण सुधारता है और सामान्य शरीरिक दुर्बलता तथा सुस्ती में लाभदायक है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातः सेवन कराएं।

मानसिक अवसाद
(Depression)

डिप्रैसोनिल : प्राकृतिक जड़ी बूटियों के मिश्रण से बनी असरकारक दवा है जो मानसिक अवसाद (डिप्रेशन), चिन्ता, अनिद्रा, भूख की कमी और अयोग्यता के अहसास को कम करती है। यह शान्ति का अहसास कराती है, अधिक भावुकता को कम करती है, मनःस्थिति को सुधारती है, दूसरों से मिलनसार बनाती है, दर्द और थकावट को कम करती है और मानसिक चौकसी ठीक करती है। अवसाद को रोकने वाली अंग्रेज़ी दवाओं के विपरीत डिप्रैसोनिल को आसानी से बर्दाश्त किया जा सकता है क्योंकि यह शत प्रतिशत प्राकृतिक है और इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के बाद पानी के साथ सेवन कराएं। इस दवा का सेवन दी गई मात्रा में उस समय तक कराते रहें जब तक कि रोग के लक्षण पाए जाएं और जैसे–जैसे यह लक्षण कम होते जाएं दवा की मात्रा कम करते जाएं। जब रोग के लक्षण समाप्त हो जाएं तो कुछ सप्ताह तक इस दवा का सेवन जारी रखने के बाद इसे बंद करादें।

नोट : उपर्युक्त औषधि के अतिरिक्त असबी प्लस, नौरस, मुलेठी कैप्सूल, लैवेंडर कैप्सूल और स्ट्रैसोनिल भी अवसाद की अवस्था में सेवन कराए जा सकते हैं।

चिन्ता
(Anxiety)

काम–डाउन : पुरानी चिन्ता व परेशानी को बिना किसी हानिकारक प्रभाव के कम करती है। इसमें ऐसी जड़ी बूटियां शामिल हैं जो अधिवृक्क ग्रन्थि

तथा मस्तिष्क की सहायता करती हैं जिसके द्वारा चिन्ता व परेशानी नियंत्रण में हो जाती हैं। काम–डाउन मानसिक शान्ति देती है और सामान्य नींद लाती है। शरीर व मस्तिष्क के बीच एक सामंजस्य पैदा करती है।

सेवन विधि : एक या दो कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के बाद पानी के साथ सेवन कराएं। 6 साल से अधिक उम्र के बच्चों को एक–एक कैप्सूल दिन में दो बार सेवन कराएं। इस दवा का सेवन दी गई मात्रा में उस समय तक कराते रहें जब तक कि रोग के लक्षण पाए जाएं और जैसे–जैसे यह लक्षण कम होते जाएं दवा की मात्रा कम करते जाएं। जब रोग के लक्षण समाप्त हो जाएं तो कुछ सप्ताह तक इस दवा का सेवन जारी रखने के बाद इसे बंद करादें।

तगर कैप्सूल : यह चिंता व परेशानी, मस्तिष्क की उलझन, हिस्टीरिया, रोगभ्रम, मस्तिष्क की अशान्ति, काम में ध्यान न लगना, मनोवैज्ञानिक दबाव, एकाग्रता की कमी, उत्तेज्यता व मासिक धर्म रुक जाने के बाद के परीवर्तन में लाभकर हैं। हकीम जालीनूस ने सबसे पहले इसे अनिद्रा में सेवन कराया। मस्तिष्क की अतिक्रियाशीलता, स्नायुओं की उत्तेजनशीलता व उच्च रक्तचाप में भी लाभदायक हैं।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें। अनिद्रा में बिस्तर पर जाने से लगभग एक घण्टा पूर्व 2 कैप्सूल पानी के साथ दें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त असबी प्लस, असरोल कैप्सूल, अश्वगन्धा कैप्सूल, एनर्जी–ऐड, डिप्रैसोनिल, बाबूना कैप्सूल, नौरस, नीलोफ़र कैप्सूल, शंखपुष्पी कैप्सूल और स्ट्रैसोनिल भी चिन्ता की अवस्था में सेवन कराए जा सकते हैं।

तनाव
(Stress)

स्ट्रैसोनिल : ऐसी जड़ी बूटियों का मिश्रण है जो मनोवैज्ञानिक दबाव और चिन्ता में अपना प्रभाव दिखाती है। दबाव और बीमारी की लम्बी अवस्था के बाद खोई हुई ताकत वापस लाती है। दबाव के सामान्य लक्षण हैं चिड़चिड़ापन, चिन्ता, सिर में दर्द, मूड का बार–बार बदलना, मानसिक अवसाद, पाचनक्रिया में अवरोध, दिल धड़कना, रोगक्षमता में कमी, कोलेस्ट्रॉल की सतह बढ़ जाना, माइग्रेन, मांसपेशियों में दर्द तथा अनिद्रा। अगर मनोवैज्ञानिक दबाव का इलाज ठीक से न किया जाये तो और गंभीर बीमारी हो सकती हैं। स्ट्रैसोनिल की आदत नहीं पड़ती और न ही इसके छोड़ने से कोई हानिकारक प्रभाव होता है।

सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार पानी से सेवन कराएं। इस दवा का सेवन दी गई मात्रा में उस समय तक कराते रहें जब तक कि रोग के लक्षण पाए जाएं और जैसे–जैसे यह लक्षण कम होते जाएं दवा की मात्रा कम करते जाएं। जब रोग के लक्षण समाप्त हो जाएं तो कुछ सप्ताह तक इस दवा का सेवन जारी रखने के बाद इसका सेवन बंद करादें।

नोट : उपर्युक्त औषधि के अतिरिक्त अर्जुना आमला रस, अर्जुना रस, असबी प्लस, अश्वगन्धा कैप्सूल, अश्वगन्धा रस (औरेन्ज जूस के साथ), असरोल कैप्सूल, आमलीना, एनर्जी–ऐड, डिप्रैसोनिल, तुलसी कैप्सूल, नीलोफ़र कैप्सूल, नौरस, ब्रेनी, लैवेंडर कैप्सूल और शंखपुष्पी कैप्सूल भी चिंता की अवस्था में सेवन कराए जा सकते हैं।

अनिद्रा (नींद न आना)
(Insomnia)

नीलोफ़र कैप्सूल : मानसिक शान्ति देती है और सामान्य नींद लाती हैं। शरीर व मस्तिष्क के बीच एक सामंजस्य पैदा करती हैं।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दो बार भोजन लेने के पश्चात् पानी के साथ दें।

बाबूना कैप्सूल : तंत्रिकाओं को शांत करता है और अच्छी निद्रा लाता हैं। यह चिंता व परेशानी को दूर करता है और बच्चों में अधिक क्रियाशीलता और आक्रामक व्यवहार कम करने में लाभदायक हैं।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दो बार भोजन लेने से पूर्व पानी के साथ दें।

रोग़न अरबा : मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करके ठंडक पैदा करता है। अनिद्रा की अवस्था में लाभकर है। कुछ दिन के प्रयोग से गहरी नींद आने लगती है। सिर दर्द में भी लाभकारी है।

प्रयोग विधि : आवश्यक्तानुसार रात को सोते समय सिर पर मालिश करें और नाक व कानों में भी एक दो बूंद डालें।

रोग़न ख़शख़ाश : गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द को आराम देता है। मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करके निद्रा लाता है।

प्रयोग विधि : आवश्यक्तानुसार रात को सोते समय सिर पर मालिश करें और नाक व कानों में भी एक दो बूंद डालें।

रोग़न लबूब सबा : मस्तिष्क की ख़ुश्की को दूर करके ठंडक पैदा करता है। अनिद्रा की अवस्था में लाभकर है। कुछ दिन के प्रयोग से गहरी नींद आने लगती है। सिर दर्द में भी लाभकारी है।

प्रयोग विधि : आवश्यक्तानुसार रात को सोते समय सिर पर मालिश करें और नाक व कानों में भी एक दो बूंद डालें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त असरोल कैप्सूल, काम–डाउन, तगर कैप्सूल, दवाउश्शिफ़ा, बरशाशा, डिप्रैसोनिल, रोग़न कद्दू, रोग़न काहू, रोग़न बनफ़शा, रोग़न बादाम शीरीं, लैवेंडर कैप्सूल, शंखपुष्पी कैप्सूल और स्ट्रैसोनिल भी अनिद्रा की अवस्था में सेवन और प्रयोग कराए जा सकते हैं।

भूल (स्मृति लोप)
(Amnesia)

आमलीना : यह औषधि ताज़ा आमले से तैयार की गई है। यह अपने आप में एक संपूर्ण टॉनिक है जो मानव शरीर की समस्त आवश्यक्ताओं को पूरा करता है। इस में ''विटामिन सी'' भरपूर मात्रा मे है जो मानसिक शक्ति और शांति के लिए प्रयोगशील है। आमलीना उन लोगों के लिए लाभदायक है जो मानसिक परिश्रम में व्यस्त रहते हैं जैसे विद्यार्थी, वैज्ञानिक, वकील, अकाउन्टेन्ट एवं इंजीनियर आदि। अधिक समय तक मानसिक परिश्रम एक प्रकार की शून्यता को जन्म देता है फलस्वरूप मस्तिष्क बोझल हो जाता है जो मानसिक थकावट के लक्षण हैं। यह दवा खिलाड़ियों, शारीरिक श्रमिकों, गृहणियों आदि के लिए समान रूप से लाभकारी है जिनकी मांसपेशियों को अधिक शक्ति चाहिए। भूलने, मानसिक तनाव, मानसिक दबाव एवं थकावट, शिथिलता, सुस्ती आदि में भी आमलीना लाभकारी है।

सेवन विधि : 20 ग्राम प्रातःकाल नाश्ते में रोज़ाना खिलाएं। ब्रेड–स्लाइस पर लगाकर खिलाने में स्वादिष्ट है।

कुश्ता मरजान जवाहर : हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति देता है। मानसिक तथा हृर्दिक दुर्बलता के कारण उत्पन्न सिर दर्द, खांसी, नज़ला और ज़ुकाम में भी लाभकर है।

सेवन विधि : 30 मिलीग्राम से 60 मिलीग्राम या एक या दो टिकियां 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी के साथ प्रातः और सायंकाल सेवन कराएं।

ब्रह्मी कैप्सूल : अति उत्तम मस्तिष्क और स्नायु टॉनिक हैं जो मस्तिष्क के कार्य एवं आत्मा दोनों को लाभ पहुंचाती हैं तथा बुद्धि एवं अन्तर्ज्ञान को सुधारती हैं। मस्तिष्क की तीव्रता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती हैं।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दो बार भोजन के साथ पानी से दें।

ब्रह्मी शंखपुष्पी रस : दो विशिष्ट मस्तिष्क टॉनिक औषधियों से परिपूर्ण मांसिक शांति बढ़ाता व तनाव को दूर करता है। मांसिक सतर्कता व चिंतन शक्ति बढ़ाता और स्मरण शक्ति तेज़ करता है।

सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

ब्रेनी : यह दवा ही नहीं अद्वितीय हर्बल टॉनिक भी है। यह औषधि विशेषतः उन लोगों को ज़हन में रखकर तैयार की गई है जिन्हें दैनिक कार्यों के लिए अधिक मानसिक शक्ति अपेक्षित है। ऐसे लोग वकील, इंजीनियर और छात्र–छात्राएं हैं जो देर तक मानसिक कार्य करने के परिणाम स्वरूप मानसिक थकन, बोझलपन और अपने को ख़ाली दिमाग़ महसूस करने लगते हैं। यह दोष उन की मानसिक थकन का लक्षण है। ब्रेनो शारीरिक श्रम कर्मियों जैसे खिलाड़ी, हस्तशिल्पी व घरेलू काम काजी स्त्रियों के लिए भी लाभकर है। यह औषधि ब्राह्मी जैसी विशेष जड़ी–बूटियों से तैयार की जाने वाली औषधि है जिसका सेवन परीक्षण से सिद्ध हो चुका है।

सेवन विधि : 20 ग्राम रोज़ाना प्रातः खिलाएं।

मैमोराईज़ : दिमाग़ी थकन और लम्बे समय तक पढ़ने या दूसरे मानसिक काम करने से, दिमाग का एक भाग खाली होना, भूलना, काम से बचने की कोशिश, मानसिक असमर्थता, मानसिक अवसाद, सुस्ती, निष्कासन की समस्या या बीमारी, पेशियों में खिंचाव या कमज़ोरी और चिन्ता, परीक्षा के समय दबाव आदि में लाभकारी है।

सेवन विधि : एक या दो कैप्सूल्स दिन में दो बार खाने के साथ पानी से खिलाएं।

शंखपुष्पी कैप्सूल : यह मस्तिष्क योग्यता जैसे स्मरण शक्ति, बुद्धि व जागरूकता को बढ़ाती हैं। यह अनिद्रा, चिड़चिड़ापन व मिर्गी के रोगों में अत्यधिक लाभदायक हैं क्योंकि यह मस्तिष्क को सकून देती हैं। यह एक प्राकृतिक शामक हैं जो गहरी एवं शान्तिमय निद्रा लाती हैं। मस्तिष्क जब अतिसक्रिय, उत्तेजिक और बेचैन हो जाने में इनका प्रयोग कराया जाता है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त आमला कैप्सूल, ख़मीरा गावज़बां अंबरी, ख़मीरा गावज़बां

अंबरी जवाहर वाला, नौरस, ब्रेनी मिक्स, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, लैवेंडर कैप्सूल और शर्बत उस्तखुद्दूस भी भूल रोग में लाभकर हैं।

लू लग जाना
(Sun Stroke)

शर्बत अनार शीरीं : हृदय और यकृत को शक्ति प्रदान करता है, प्रफुल्लता लाता है तथा प्यास को बुझाता है। ख़ूनी दस्तों और क़ै व मतली को रोकता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत केवड़ा : हृदय को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करता है। घबराहट और धड़कन को समाप्त करता है। प्यास को शांत करता है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

शर्बत ख़स : प्रफुल्लता लाता है। गर्मी और प्यास को दूर करता है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत गुलाब : गुलाब के ताज़ा फूलों से तैयार किया गया है। हृदय को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करता है। गर्मी को शांत करता है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत नीलोफ़र : पित्त संबंधी ज्वर में पित्त की तेज़ी को कम करता है और प्यास को बुझाता है। बिना ज्वर के भी बढ़ी हुई गर्मी को शांत करता है। हृदय को शक्ति देता हैं। लू लगने की अवस्था में लाभकर है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर से 50 मिली लीटर तक ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत संदल : धड़कन तथा घबराहट को दूर करता है। यकृत और आमाशय की गर्मी को शांत करता है। गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द को दूर करता है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शाही गुलबर्ग : प्रफुल्लता लाता है। गर्मी और प्यास को दूर करता है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

मस्तिष्क संबंधी झिल्लियों की सूजन
(Meningitis)

ख़मीरा मरवारीद बनुस्ख़ा कलां : हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देने के लिए लाभकर है। शरीर को पुष्ट करता है। घबराहट और चिन्ता में लाभकर है।
सेवन विधि : 1 ग्राम से 5 ग्राम प्रातः पानी के साथ खिलाएं।

रोग़न गुलः सरसाम के आरंभ में और मस्तिष्क संबंधी झिल्लियों की सूजन में लाभकर है। गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द को दूर करता है।
प्रयोग विधि : सरसाम की आंरभिक दशा मे 10 मिली लीटर रोग़न गुल, अर्क़ गुलाब और विशुद्ध सिरका मिला कर उसमें रूई भिगोकर सिर पर रखें। सिर दर्द की अवस्था में सिर और माथे पर लगाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त दवाउलमिस्क बारिद जवाहर और दवाउलमिस्क हार जवाहर भी सरसाम की अवस्था में सेवन कराई जा सकती हैं।

मालीख़ूलिया (उन्माद)
(Melancholia)

दवाउश्शिफ़ा : पागलपन की प्रसिद्ध औषधि है। मिर्गी, हिस्टीरिया, अनिद्रा आदि रोगों में भी लाभकर है। हाई ब्लड प्रैशर को कम करती है।
सेवन विधि : एक टिकिया रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

माजून नजाह : पागलपन, मालीख़ूलिया और अन्य वात संबंधी रोगों में लाभ पंहुचाती है। मिर्गी तथा हिस्टीरिया में भी सेवन कराई जा सकती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

शर्बत अहमद शाही : वात संबंधी रोगों विशेषतः मालीख़ूलिया और स्थायी क़ब्ज़ में लाभकर है। हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर पानी में या 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां में मिलाकर पिलाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त असरोल कैप्सूल, इतरीफ़ल ज़मानी, कुश्ता मरवारीद, ख़मीरा आबरेशम हकीम अरशद वाला, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला, ख़मीरा गावज़बां सादा, दवाउलमिस्क मोतदिल, दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली, देहल्वी अरशद गोल्ड पिल्ज़, देहल्वी डी.एम.एम.जवाहरी कैप्सूल, देहल्वी सेहाटोन,

बरशाशा और हार्ट–केयर भी मालीख़ूलिया की अवस्था में सेवन कराई जा सकती हैं।

अपस्मार (मिर्गी) (Epilepsy)

ऐपी–कैपः स्नायु प्रणाली को शक्ति देती है और यह एक दौरा निरोधक दवा है। क्योंकि यह दवा दौरा निरोधक है इसलिए यह शरीर की ऐंठन और दौरे जैसे मिर्गी का दौरा, बालमिर्गी तथा मांसपेशीय लहर में लाभदायक है।
सेवन विधि : दो कैप्सूल्स दिन में दो बार पानी से खिलाएं।

ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला : मिर्गी में विशेषतः लाभकारी है। फ़ालिज, लक़वा, बाल मिर्गी, कम्पन और हिस्टीरिया आदि रोगों में भी लाभकर है। स्नायुओं और मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल निहार मुंह 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां या दूध के साथ दें।

हब्बे सरा : मिर्गी और बालमिर्गी की अचूक औषधि है। मिर्गी के दौरों की तेज़ी को धीरे–धीरे कम करके रोग का निराकरण करती है।
सेवन विधि : एक या दो गोलियां प्रातः और सांयकाल 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला के साथ मिलाकर सेवन कराएं। बच्चों को आधी से एक गोली तक मां के दूध में घिसकर पिलाएं। दूध, दही, मिर्च और तेल वाले पदार्थों के सेवन से बचाएं। भारी और देर से पचने वाले आहार का सेवन न कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अक़रक़राह कैप्सूल, असरोल कैप्सूल और शंखपुष्पी कैप्सूल भी मिर्गी की अवस्था में सेवन कराई जा सकती हैं।

स्नायुओं की सूजन (Neuritis)

अक़रक़राह कैप्सूल, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला, रोग़न ज़ैतून और हब्बे सरा स्नायुओं की सूजन में लाभकारी हैं।

गृध्रसी (Sciatica)

हब्बे असगंद : जोड़ों के दर्द, गठिया, कमर दर्द तथा कूल्हों के दर्द में लाभकर है। बलग़मी और वायु संबंधी पेट रोगों में भी लाभ पहुंचाती है।
सेवन विधि : एक या दो गोलियां प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

हब्बे सूरंजान : जोड़ों के दर्द, गृध्रसी तथा गठिया आदि रोगों में अचूक और लाभकर है। क़ब्ज़ तोड़ती है।
सेवन विधि : एक या दो गोलियां प्रातः तथा सायंकाल पानी के साथ सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त ओस्टोपेन मरहम, ओस्टोपेन टेबलेट्स, ओस्टोपेन मसाज आयल, एलोवेरा कैप्सूल, एलोवेरा जैली, क़ुर्स मुसक्किन, देहल्वी ब्लू बाम, देहल्वी रोग़न फ़ास्फ़ोरस, देहल्वी पी.आर. टैबलेट्स, देहल्वी सूरंजान मुफ़ासिल कैप्सूल, रह्युमा ऑइन्ट्मन्ट, रोग़न कीमिया, रोग़न दर्द, रोग़न सुर्ख़, रोग़न सूरंजान, रोग़न मालकंगनी, क़ुर्स मुसक्किन, माजून अज़ाराक़ी, माजून जोगराज गुगल, माजून चौबचीनी, माजून सूरंजान, माजून सीर अलवी ख़ानी, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, नोपेन टैबलेट्स और हब्बे अज़ाराक़ी भी खिलाई व लगाई जा सकती हैं।

फ़ालिज, लक़वा और कंपन्न (Paralysis, Facial Paralysis & Chorea)

अक़रक़राह कैप्सूल : फ़ालिज, पक्षाघात, मिर्गी, कंपन्न तथा स्नायुओं के दर्द व गठिया में लाभकर है। नपुंसकता, शीघ्र वीर्य पतन, वीर्य के विकार और पौरूष शक्ति की कमी में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

दवाउलमिस्क हार जवाहर : ह्रदय, मस्तिष्क तथा यकृत को शक्ति देती है। चिंता व भ्रम तथा घबराहट में लाभदायक है। फ़ालिज, लक़वा, कंपन्न आदि पुट्ठों व कफ़ के रोगों में लाभदायक है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल अर्क़ गावज़बां 125 मिली लीटर के साथ खिलाएं।

दवाउलमिस्क हार सादा : फ़ालिज, लक़वा, कंपन्न आदि पुट्ठों व कफ़ के रोगों में लाभदायक है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां के साथ दें।

माजून अज़ाराक़ी : स्नायुओं को सशक्त एवं सुचारू करती है। फ़ालिज, लक़वा, कंपन्न, गठिया तथा अन्य प्रकार की स्नायविक तथा बलग़म जनित पीड़ा के लिए अचूक है। जोड़ों के दर्द में भी लाभ पहुँचाती है। शीत ऋतु में वृद्ध लोगों को हल्का

सेवन सर्दी से सुरक्षित रखती है।
सेवन विधि : 3 से 5 ग्राम तक प्रातःकाल नाश्ते के उपरांत या दोनों समय भोजनोपरांत पानी से खिलाएं।

माबून चोबचीनी बनुस्ख़ा ख़ासः फ़ालिज, लक़वा, कपकपाहट, उपदंश तथा कफ़ और पित्त दोष रोगों में लाभ पहुंचाती है। आमाशय की कमज़ोरी दूर करती है। ताज़ा ख़ून पैदा करके चेहरा निखारती है। गुर्दे तथा मूत्राशय की शक्ति के लिए लाभकारी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः तथा सायंकाल पानी से खिलाएं।

माजून जोगराज गूगल : फ़ालिज, लक़वा, गठिया आदि स्नायविक एवं बलग़म जनित रोगों में अचूक है। स्नायविक व्यवस्था पर अच्छा प्रभाव डालती है। जोड़ों के दर्द और आतशक में भी लाभ पहुंचाती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या रात्रि में पानी से खिलाएं।

माजून तल्ख़ : फ़ालिज, लक़वा, कंपन्न तथा मिर्गी में लाभदायक है। अमाशय तथा यकृत को शक्ति देती है और कमर के दर्द को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या रात को सोते समय पानी से दें।

माजून लना : फ़ालिज, लक़वा, कंपन्न एवं आतशक के लिए विचित्र टांनिक है। जोड़ों के दर्द में लाभकर है। संभोग शक्ति को बढ़ाती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम पानी के साथ खिलाएं।

माजून सीर अलवी ख़ानी : फ़ालिज, लक़वा, गठिया, जोड़ों की सूजन, गृध्रसी आदि स्नायविक रोगों तथा कफ़ जनित रोगों के लिए अचूक औषधि है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या रात्रि में पानी से सेवन कराएं।

रोग़न कीमिया : उदर वायु संबंधी पीड़ा, जोड़ों के दर्द और फ़ालिज में अचूक है। रक्त प्रवाह को बढ़ाता है। स्नायुओं और पुट्ठों पर इसकी हल्की मालिश से तत्काल प्रभाव पड़ता है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार इसको पीड़ित भाग पर दस मिनट तक मालिश करें और हल्की गर्म सिकाई करें।

रोग़न सुर्ख़ : फ़ालिज, गठिया, गृध्रसी, जोड़ों की सूजन और कमर के दर्द में लाभकारी है। चोट का दर्द भी इसके प्रयोग से दूर हो जाता है।
प्रयोग विधि : इस तेल को हल्का गर्म करके धीरे–धीरे दर्द की जगह पर मालिश करें। ऊपर रूई गर्म करके बांध दें।

रोग़न सूंरजान : फ़ालिज, लक़वा, गृध्रसी, सन्धिवात, वातरक्त और कमर के दर्द में लाभ पहुंचाता है। चोट का दर्द भी इसके प्रयोग से दूर हो जाता है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार गर्म करके दर्द वाले स्थान पर मालिश करें।

हब्बे अज़ाराक़ी : स्नायुओं को सुचारू और सशक्त करती है। फ़ालिज, लक़वा, कम्पवात तथा आमवात आदि रोगों में भी लाभकर है।
सेवन विधि : एक से दो गोली प्रातः और सायंकाल खिलाएं।

हब्बे आसाब नुकरईः स्नायुओं और मस्तिष्क को शक्ति देती है। फ़ालिज, लक़वा तथा कंपन्न में लाभकर है।
सेवन विधि : 1 से 2 गोली सुबह शाम दूध से दें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त कुश्ता गौदन्ती, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला, देहल्वी जौहरी कैप्सूल, जौहर मुनक्क़ा और रोग़न मालकंगनी का भी सेवन फ़ालिज, लक़वा और कंपन्न में कराया जा सकता है।

रक्ताघात
(Apoplexy)

ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला, माजून जोगराज गुगल, शर्बत दीनार और हब्बे सरा का सेवन रक्ताघात की अवस्था में लाभकारी है।

इम्यूनो रोग
(Immunodeficiency Diseases)
प्रतिरक्षा प्रणाली रोग
(Dysfunction of the Immune System)

आमला कैप्सूल : एक प्राकृतिक और आक्सीकरण को रोकने अथवा उसे कम करने वाला (Antioxidants) फ़ल है जिसमें विटामिन–सी

प्राकृतिक रूप में सबसे अधिक मात्रा में पाई जाती है। चिन्ता व परेशानी, मेलन्कोलिया (खिन्नता), रक्तस्राव, मधुमेह और दस्त व पेचिश में लाभदायक हैं। प्राचीन पुस्तकों में आमला समयपूर्व बुढ़ापे को रोकने के लिए उत्तम औषधि बताया गया है। इसके नियमित सेवन से पुनर्योवन प्राप्ति होती है तथा स्मृति और नेत्र ज्योति में वृद्धि करती है। लोहे के साथ यह रक्त की कमी, पीलिया और दुष्पचन में लाभदायक है। यह हानिकारक तत्वों के दंष्प्रभाव को दूर करके शरीर के सभी अंगों के कार्य को मज़बूत करता है और रोग से प्रतिरक्षा करता है। यह भी कहा जाता है कि आमला बालों को बढ़ाता है, उन्हें चमकदार बनाता है और समयपूर्व सफ़ेद होने से रोकता है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1–1 कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात पानी से सेवन कराएं।

आमला रसः अधिकतम प्राकृतिक विटामिन 'सी' युक्त, शक्ति शाली रोग रोधक व बुढ़ापे की प्रक्रिया को कम करता, त्वचा व बालों को स्वस्थ बनाता, समय पूर्व बाल झड़ने व सफ़ेदी को रोकता, आंखों की रोशनी बढ़ाता, यकृत को विष मुक्त करता, पाचनक्रिया प्रबल करता और मस्तिष्क को शक्ति देता है।

सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

आमला एलोवेरा रसः समस्त आमला व एलोवेरा रस के गुणों से परिपूर्ण है।

सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

इम्यूनो बूस्ट : प्राकृतिक पदार्थो का ऐसा मिश्रण है जो विशेषकर स्वस्थ इम्यून प्रणाली के लाभ हेतु ही बनाया गया है ताकि रोगों से जल्दी और आसानी से लड़ा जा सके और बार–बार बीमार होने की प्रक्रिया पर नियंत्रण पाया जाए। यह प्राकृतिक इम्यून प्रणाली को सुदृढ़ कर रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ाता है और लम्बे समय तक प्रयोग करने पर पूर्णतया सुरक्षित है।

सेवन विधि : 1 से 2 कैप्सूल प्रतिदिन प्रातःकाल। 12 वर्ष से अधिक के बच्चों को एक कैप्सूल दिया जा सकता है।

इम्यूनो–हल्दी : हज़्म शक्ति को सुचारू करता है और नेत्र ज्योति को बढ़ाता है। यह रोग फैलाने वाले किटाणुओं का विनाश करके ख़ून को शुद्ध करता है। इसके अतिरिक्त अनिद्रा, साइनॉसाइटिस, खांसी, नज़ला, जुकाम और सांस की सभी बीमारियों में लाभकारी है। इम्यूनो–हल्दी ख़ून को गाढ़ा होने व ख़ून में LDL कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ने से रोकता है। पेट–उदर की सुरक्षा करता है। घावों को भरता है। सूजन और शौफ में गुणकारी है। क्योंकि इसमें लोहतत्व प्रचुर मात्रा में होता है इसलिए रक्त की कमी दूर करता है। इसके अतिरिक्त यकृत को विषैले पदार्थों से सुरक्षित रखता है, विशेषकर शीशा जैसे भारी धातु को निष्कासित करता है और पित्त के प्रवाह को बढ़ाता है। माहवारी के दिनों में होने वीले कष्टों को दूर करता है इसलिए महिलाऐं इसकी प्रशंसा करती हैं। यह माहवारी की अनियमितता को दूर करता। सूजन दूर करने के गुणकारी प्रभाव के कारण जोड़ों के दर्द व अस्थिसन्धिशोथ और सन्धिशोथ में असरकारक है।

हल्दी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाकर जोड़ों के दर्द, एलर्जी, दमा, हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर जैसे रोगों को नियमित करने में सहायक है। यह एक शक्तिशाली ऑक्सीकरण रोधी (antioxidant) के रूप में भी जाना जाता है। यह शरीर को हानि पहुंचाने वाले मुक्त मूलकों (Free radicals) की क्रियाशीलता को समाप्त कर उन्हें निष्क्रिय कर देता है, कैंसर जैसे रोग से सुरक्षा प्रदान करता है, इसके अतिरिक्त कीमोथेरेपी से होने वाले दंष्प्रभाव से शरीर की सुरक्षा करता है। हल्दी ऐन्टीआक्सिडन्ट क्षमता को विटामिन सी और विटामिन ई जैसी गुणकारी ऐन्टीआक्सिडन्ट की श्रेणी में आता है। यह वतावरण के प्रदूषण से सुरक्षा प्रदान करता है और विटामिन डी और गुर्दे की ग्रन्थियों के हार्मोन्स की प्रक्रिया में सहायक है। परीणाम स्वरूप उच्चरक्त चाप धमनियों की कठोरता व हृदय रोग से सुरक्षा प्रदान करता है। हल्दी शरीर को हानि पहुंचाने वाले मुक्त मूलकों (Free radicals) की क्रियाशीलता को समाप्त कर उन्हें निष्क्रिय कर देता है, इसलिए जोड़ों के दर्द व सूजन में लाभकारी है।

सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन एक कप दूध में उबालकर रात को पिलाऐं। गर्भवति व स्तनपान कराने वाली महिलाओं को इसका सेवन न कराएं।

एलोवेरा कैप्सूलः यह एक प्राकृतिक डिटाक्सिफायर (विषहरण) है जो इम्यून प्रणाली को सुदृढ़ करता है, पाचन नली के सूक्ष्म जीव को बढ़ाता है तथा क्षतिग्रस्त व सूजे हुए ऊतकों को सुधारता है। यकृत की कोशिकाओं के उत्थान में मदद करता है और यकृत शोथ, रसायन, दवाइयों व शराब के कारण यकृत के बिगाड़ को ठीक करता है। यकृत की एंज़ाइम प्रणाली में सकारात्मक प्रभाव दिखाता

है।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक या दो कैप्सूल सुबह नाश्ते के समय पानी के साथ दें।

एलोवेरा जूसः विषाक्त प्रभाव नाशक, रोग सुरक्षा प्रणाली मज़बूत करता है, अपचन, अफारा, सीने की जलन, क़ब्ज़, अम्लपित्त व नासूर में लाभकारी, वज़न घटाता, चर्म रोगों, खाज, फोड़ा, फुंसी आदि में लाभकारी, त्वचा का लचीलापन बनाए रखता, बुढ़ापे की प्रक्रिया को कम करता तथा ऊतकों व जोंड़ों को मज़बूत कर संधिवात में लाभकारी है।
सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

ऐक्टिलाइफ़ कैप्सूल : इसके सम्पूर्ण प्रभावों को वर्णित करना कठिन है क्योंकि इसका प्रभाव व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग होता है। यदि आप मानसिक या शारीरिक रूप से थकावट का अनुभव कर रहें हैं तो यह कैप्सूल आप के अंदर कार्यशक्ति, तेजस्विता एवं जीवन का आनंद प्रदान करेगा – परन्तु यह सामान्य उत्तेजक नहीं है। यदि आप किसी मनोवैज्ञानिक दबाव में हैं या भावात्मक रूप से थके हुए हैं और ज़िंदगी से निपटने में असमर्थ हैं तो ऐक्टिलाइफ़ कैप्सूल आप को शान्ति पहुंचाता है और ज़िंदगी से निपटने में मदद करता है परन्तु यह ट्रैन्क्वीलाइज़र (शामक) नहीं है और आपके शरीर पर नशीले पदार्थ जैसा प्रभाव भी नहीं होगा। ऐक्टिलाइफ़ कैप्सूल में ऑक्सीकरण को रोकने अथवा उसे कम करने वाले कारक (Antioxidants) हैं जो शरीर को हानि पहुंचाने वाले मुक्त मूलकों (Free radicals) की क्रियाशीलता को समाप्त कर उन्हें निष्क्रिय कर देते हैं जो शरीर के चयापचय के समय ऑक्सीकरण की प्रक्रिया द्वारा निकलते हैं और जिनसे बहुत सारे रोग उत्पन्न होतें हैं जैसे कोशिकाओं का व्यपजनन, कैंसर, समय से पूर्व वृद्धावस्था और कई अन्य रोग। ऐक्टिलाइफ़ कैप्सूल्स पूर्ण रूप से सुरक्षित एवं प्रभावी हैं।

सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातः सेवन कराएं। इसे 2–3 माहं तक निरंतर सेवन कराएं।

गिलो आमला रसः आमला रस के सभी गुणों सहित, रोग सुरक्षा प्रणाली मज़बूत करता, त्वचा रोग, यकृत विकार, बुख़ार व पीलिया में लाभकारी है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

तुलसी रसः चुस्ती, फुर्ती बढ़ाता, रोग सुरक्षा प्रणाली मज़बूत करता, सर्दी, ज़ुकाम, खांसी, श्वास रोग, साइनोसाईटिस व ज्वर आदि में लाभकारी, रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल घटाने में सहायक है तथा त्वचा विकारों में लाभकारी है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

वीटग्रास कैप्सूल : इसमें विटामिन व खनिज पदार्थ शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को पुष्ट करते हैं जिसके कारण जीवाणु जो संक्रमण व सूजन पैदा करते हैं वह नष्ठ हो जाते हैं। यह शरीर को हानि पहुंचाने वाले मुक्त मूलकों (Free radicals) की क्रियाशीलता को समाप्त कर उन्हें निष्क्रिय कर देती हैं। डिटाक्सिफिकेशन (विषहरण) के कारण मोटापे को कम करती हैं। मधुमेह में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल नाश्ते के 1 घन्टे के बाद सेवन कराएं।

वीटग्रास रसः रोगों से बचाव करने वाले पोषक तत्वों से भरपूर आषधि, सशक्त विषाक्त प्रभाव नाशक जो शरीर में विषैले पदार्थों की हानि से रोकता, रक्तचाप घटाता, पाचन बढ़ाता, क़ब्ज़ दूर करता, आमाशय के ज़ख़्म व आंत्र विकारों में लाभदायक, रक्त में लाल कोशिकाओं व धमनियों में रक्त प्रवाह को बढ़ाता, थाईरायड (गल) ग्रन्थि प्रक्रिया नियंत्रित करता, मधुमेह से बचाता और सांस की दुर्गंध व दांतों की कमज़ोरी को रोकता है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार दें। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त तुलसी कैप्सूल, गिलो कैप्सूल, जिगरॉन कैप्सूल, जिगरॉन सिरप, जिगरॉन–**SF**, जिगरॉन टैबलेट्स, बाबूना कैप्सूल, बीजबन्द कैप्सूल, बेहमन कैप्सूल, मुलेठी कैप्सूल, मोरिंगा कैप्सूल, नीम कैप्सूल, नौरस, लेहसुन कैप्सूल, शीलाजीत कैप्सूल, शीलाजीत केयर, स्पिरूलीना कैप्सूल और स्ट्रैसोनिल भी प्रतिरक्षा प्रणाली रोग में सेवन कराए जा सकते हैं।

अंतःस्त्रावी प्रणाली रोग

(Diseases of the Endocrene System)

थायराइड रोग
(Thyroidism)

थायरो–कैप : यह एक समन्वित प्राकृतिक मिश्रण है जो थायराइड ग्रंथि को पोषित व संतुलित करती है। यह दोनो हाइपो व हाइपर थायराइडिस्म और ग्रंथियों के विस्तार में लाभकर है। यह थायरोक्सिन के उत्पादन को संतुलन में लाता है जिसके कारण वज़न, तंत्रिकापेशीय व हृदय स्वास्थ्य को सामान्य रखता है।

सेवन विधि : 1 से 2 कैप्सूल प्रतिदिन प्रातःकाल खिलाएं।

नेत्र रोग

(Diseases of the Eyes)

नेत्रज्योति क्षीणता
(Weakness of Eyesight)

कोहलुल जवाहर : अमूल्य तत्वों से तैयार किया जाता है जो नेत्रों की शक्ति के रक्षक हैं। नेत्र ज्योति में वृद्धि करता है और इसे अंतिम आयु तक बनाए रखता है। दैनिक प्रयोग से नेत्र को समस्त रोगों से मुक्त कराता है।
प्रयोग विधि : प्रातः और सायंकाल इस सुर्मे को सलाई से नेत्रों में लगाएं।

ख़मीरा आबरेशम सादा : नेत्र ज्योति में वृद्धि करता है। हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है। धड़कन, घबराहट और व्याग्रता आदि अवस्थाओं में लाभ पहुंचाता है। चिपचिपे बलग़म को निकाल बाहर करता है। हृदय, मस्तिष्क, आमाशय तथा यकृत को शक्ति प्रदान करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल निहार मुंह या रात्रि काल सोते समय पानी से सेवन कराएं।

नूरो नज़र सुर्मा : यह सुर्मा अमूल्य तत्वों से निर्मित होता है। नेत्र शक्ति का रक्षक है। नेत्र ज्योति में वृद्धि करता है और इसे अंतिम आयु तक बनाए रखता है। धुन्ध, लाली और आंखों से बहते पानी को रोकने में लाभकर है। दैनिक प्रयोग करने से आंखें स्वस्थ रहती हैं और उनमें कोई रोग नहीं होने पाता। हर आयु के लिए समान रूप से लाभ पहुंचाता है।
प्रयोग विधि : प्रातः व सायंकाल सलाई से नेत्रों में लगाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ मुण्डी, आमला कैप्सूल, आमलीना, इतरीफ़ल मुक़्वी दिमाग़, ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला, ख़मीरा गावज़बां अंबरी, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला, ख़मीरा गावज़बां सादा, त्रिकाटू कैप्सूल, त्रिफ़ला कैप्सूल, त्रिफ़ला एलो–वेरा रस, त्रिफ़ला रस और ब्रेनी भी नेत्रज्योति क्षीणता में सेवन कराए जा सकते हैं।

पपोटों की खुजली, आंख आना और गुहांजनी
(Blepharitis, Conjunctivitis and Stye)

अर्क़ गुलाब (आई ड्राप) : आंखों की खटक और आंखों में धूल व बाह्री कणों को बाहर निकालता है। आंखों की लाली को हटाता है।
सेवन विधि : एक दो बूंद आंखों में डालें तथा आंखों को एक मिनट तक बंद रखें।

इतरीफ़ल शाहतरा : ज्वर एवं रक्त विकार से होने वाले कष्ट, आंखो की लाली, खटक, विचलन आदि में लाभकर है। आतशक में भी लाभकरी है। रक्त को भी शुद्ध करता है। खाज और त्वचा रोगों में उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

नोट : इसके अतिरिक्त स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन भी पपोटों की खुजली, आंख आना और गुहांजनी में लाभकर हैं।

मोतिया बिंद
(Cataract)

इतरीफ़ल किशनीज़ी, कोहलुल जवाहर, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला और नूरो नज़र सुर्मा का सेवन मोतिया बिंद की अवस्था में लाभकर है।

कर्ण रोग
(Diseases of the Ear)
कनफ़ैड़
(Mumps)

इतरीफ़ल शाहतरा, माजून उश्बा, माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास, मुसफ़्फ़ी आज़म, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन कनफ़ैड रोग की अवस्था में लाभकर है।

कर्ण पीड़ा
(Otalgia)

इतरीफ़ल किशनीज़ी, कुर्स मुसक्किन और रोग़न बाबूना कर्ण पीड़ा को दूर करने में अचूक औषधियां हैं।

कान की फुन्सियां तथा कर्णस्राव (कान बहना)
(Ulceration & Otorrhoea)

अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून, अर्क़ चिरायता, अर्क़ शाहतरा, इतरीफ़ल शाहतरा, माजून उश्बा, माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास, मुसफ़्फ़ी आज़म, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप, स्किन–क्लिअर SF, शर्बत उन्नाब, शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून और हब्बे मुसफ़्फ़ी ख़ून कान की फुन्सियों तथा कर्णस्राव को दूर करने में लाभकारी औषधियां हैं।

कान की खुजली
(Itching in the Ear)

पुदीनौल 2 बूंद रोग़न गुल 5 बूंद में मिलाकर गुनगुना कान में टपकाएं तथा कान की फुन्सियों के अंतर्गत वर्णित औषधियां लाभकारी हैं।

ऊंचा सुनना
(Loss of Hearing)

इतरीफ़ल किशनीज़ी, इतरीफ़ल ज़मानी, इतरीफ़ल मुलय्यन, ख़मीरा गावज़बां अंबरी और रोग़न बादाम शीरीं ऊंचा सुनने (जन्म से न हो) की अवस्था में लाभकर हैं।

कान बजना
(Tinnitus)

इतरीफ़ल किशनीज़ी, इतरीफ़ल ज़मानी, इतरीफ़ल मुलय्यन, ख़मीरा गावज़बां अंबरी और रोग़न बादाम शीरीं कान बजने की अवस्था में लाभकर हैं।

नासिका रोग
(Diseases of the Nose)
छीकें आना
(Sneezing)

इतरीफ़ल उस्तख़ुद्दूस, कुश्ता मरजान, कुश्ता मरजान जवाहर, ख़मीरा बनफ़शा, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तख़ुद्दूस) कैप्सूल, देहल्वी जोशांदा, देहल्वी जोशांदा ड्राप्स, देहल्वी जोशांदा ग्रेन्यूल्ज़ और शर्बत नज़ला छीकें आने की अवस्था में लाभकर हैं।

नासिका रक्तस्राव (नक्सीर फूटना)
(Epistaxis)

कुश्ता फ़ौलाद : रक्त हीनता को दूर करता है तथा रक्त के लाल कणों की पैदावार को बढ़ाता है। रोगों से अच्छा होने के बाद की कमज़ोरी को दूर करता है। यकृत और आमाशय को शक्ति देता है और पौरूष शक्ति को भी बढ़ाता है।
सेवन विधि : 30 से 60 मिलीग्राम या एक से दो टिकियां 5 ग्राम जवारिश जालीनूस में रखकर खिलाएं। बच्चों को 7 से 15 मिलीग्राम या चौथाई टिकिया से आधी टिकिया तक 5 ग्राम मक्खन में मिलाकर ख़िलाएं।

जवारिश आमला सादा : आंतो की दुर्बलता को दूर करती है। आमाशय को शक्ति देती है और दस्तों को रोकती है। हृदय और यकृत की अधिक गर्मी को शांत करती है। ज्वर एवं हृदय की दुर्बलता में लाभ पहुंचाती है। आमला में रक्त प्रवाह को रोकने वाला विटामिन 'सी' सर्वाधिक मात्रा में होता है, इसी कारण यह नक्सीर फूटने की अवस्था में भी लाभकर है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और सायंकाल 40 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां या पानी के साथ सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त वर्णित औषधियों के अतिरिक्त कुर्स

कहरूबा, कुर्स बंदिश ख़ून, शर्बत अंजबार, शर्बत उश्बा ख़ास, शर्बत नीलोफ़र और शर्बत फ़ौलाद का भी सेवन नासिका रक्तस्राव में कराया जा सकता है।

नज़ला, ज़ुकाम एवं इनफ़्लुएंज़ा (Cold, Catarrh & Influenza)

इतरीफ़ल उस्तखुद्दूस : स्थायी नज़ले की अवस्था में लाभकर है। मस्तिष्क से बलग़मी गंदे द्रव्यों को निकाल बाहर करता है। सिर भारी रहने और पुराने सिर दर्द में लाभकर है। अगर उपयुक्त समय तक नियमित सेवन कराया जाए तो बालों की स्याही को भी बनाए रखता है। अगर नज़ले या किसी अन्य रोग के कारण बाल सफ़ेद हो जाएं तो उनको सही दशा में वापस लाता है। आमाशय और आंतों को पुष्टि देता है। क़ब्ज़ को दूर करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय हल्के गर्म पानी से सेवन कराएं।

कुश्ता मरजान : नज़ला, ज़ुकाम और खांसी में लाभकर है। हृदय और मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां 10 ग्राम ख़मीरा गावज़बां सादा में रखकर खिलाएं।

ख़मीरा ख़शख़ाश : नज़ला, ज़ुकाम और खांसी की शीघ्रगामी औषधि है।
सेवन विधि : प्रातः या सोते समय 5 से 10 ग्राम तक पानी या दूध के साथ खिलाएं।

ख़मीरा बनफ़शा : हर प्रकार के ज्वर, नज़ला, ज़ुकाम, खांसी, दमा और सीने के रोगों में लाभकर है। हलका क़ब्ज़ तोड़ भी है।
सेवन विधि : 25 से 50 ग्राम तक पानी या 125 मिली लीटर अर्क़ बादयान के साथ खिलाएं।

गावज़बां कैप्सूल : इसका विशेषकर उपयोग ज्वर और फेफड़ों के रोगों में होता है। चूंकि इसमें नमकीन घटक होते हैं यह वृक्क की क्रियाशीलता बढ़ाता है और इसी कारण नज़ला ज़ुकाम की वजह से ज्वर को समाप्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। यह श्वासनलियों के रोग (जैसे तपेदिक और फुफ्फुसावरणशोथ), मुंह एवं गले के रोग, यकृत की कठोरता, मासिक धर्म से पूर्व के कष्ट और वृक्कशोथ में लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन एक या दो कैप्सूल सुबह नाश्ते के समय पानी के साथ दें।

दया कूज़ा : सूखी खांसी में लाभकर है। नज़ला को रोकता है और सीने को साफ़ करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से सेवन कराएं।

देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तखुद्दूस) कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई इतरीफ़ल उस्तखुद्दूस का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। इतरीफ़ल उस्तखुद्दूस की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तखुद्दूस) कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। स्थायी नज़ले की अवस्था में लाभकर है। मस्तिष्क से बलग़मी गंदे द्रव्यों को निकाल बाहर करता है। सिर भारी रहने और पुराने सिर दर्द में लाभकर है। अगर उपयुक्त समय तक नियमित सेवन कराया जाए तो बालों की स्याही को भी बनाए रखता है। अगर नज़ले या किसी अन्य रोग के कारण बाल सफ़ेद हो जाएं तो उनको सही दशा में वापस लाता है। आमाशय और आंतों को पुष्टि देता है। क़ब्ज़ को दूर करता है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल रात को सोते समय पानी से सेवन कराएं।

देहल्वी जोशांदा : नज़ला, ज़ुकाम, खांसी और इनफ़्लुएंजा के लिए मशहूर यूनानी जड़ी बूटियों से निर्मित जोशांदा है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर खौलते हुए पानी में जोशांदे की औषधियों को डाल दें और पांच मिनट तक बर्तन ढका रहने दें। बाद में साफ़ कपड़े में छान कर हल्का गर्म पिलाएं।

देहल्वी जोशांदा ड्राप्स : सदियों की आज़माया हुआ जोशांदा का विकसित रूप है जो ड्राप्स के रूप में प्रस्तुत है। जोशांदा की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी जोशांदा ड्राप्स निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। नज़ला, ज़ुकाम, खांसी और इनफ़्लुएंजा लाभदायक हैं।
सेवन विधि : 5 से 10 ड्राप्स आधा कप खौलते हुए पानी में मिला लें और प्रातःकाल निहार मुंह पिलाएं। रात्रि काल सोते समय भी यही विधि अपनाएं।

देहल्वी जोशांदा ग्रेन्यूल्ज़ : सदियों की आज़माया हुआ जोशांदा का विकसित रूप है जो ग्रेन्यूल्ज़ के रूप में प्रस्तुत है। जोशांदा की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी जोशांदा ग्रेन्यूल्ज़ निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। नज़ला, ज़ुकाम, खांसी और इनफ़्लुएंजा लाभदायक है।
सेवन विधि : एक पाउच आधा कप खौलते हुए

पानी में मिला लें और प्रातःकाल निहार मुंह पिलाएं। रात्रि काल सोते समय भी विधि अपनाएं।

बरशाशा : नज़ला, ज़ुकाम, मालीख़ूलिया, खांसी, स्नायुओं की कमज़ोरी, चितविभ्रम और अनिद्रा में लाभकर है।
सेवन विधि : 1/2 से 1 ग्राम तक ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला 5 ग्राम के साथ खिलाएं।

लऊक़ मोतदिल : नज़ला, ज़ुकाम और खांसी में लाभकर है। गर्म नज़ले में बहने वाले पतले गंदे द्रव्य को गाढ़ा करके बाहर निकालता है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातः और सांयकाल खिलाएं।

लऊक़ सपिस्तां : नज़ला व ज़ुकाम में लाभकारी है। खांसी को राहत देती है। बलग़म को निकालती है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातः और सायंकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

शर्बत उस्तखुद्दूस : नज़ला, ज़ुकाम, खांसी और अन्य फेफड़ों के रोगों में लाभकर है। मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है, मस्तिष्क से बलग़मी गंदे द्रव्यों को निकाल बाहर करता है और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर पिलाएं।

शर्बत नज़ला : मानवीय शरीर में बहुत पेचीदा आर्गेनिक तत्व जैसे चर्बी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट आदि के बनने और टूटने की रासायनिक प्रक्रिया जीवन के आरंभ से अंतिम क्षण तक चालू रहती है। इस रासायनिक प्रक्रिया के फ़ल स्वरूप शरीर के लिए उपयोगी तत्वों के साथ–साथ हानिकारक तत्व भी पैदा होते रहते हैं। जिनका स्राव स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है। ऐसे तत्वों को शरीर से बाहर निकालने के लिए शरीर का अपना तरीका है। शरीर के अन्य भागों की तरह ही मस्तिष्क में भी रासायनिक प्रक्रिया के फलस्वरूप हानिकारक तत्व पैदा होते रहते हैं। जिनके स्राव की विधि अभी भी ठीक प्रकार नहीं समझी जा सकी है। यूनानी हकीमों के अनुसार मस्तिष्क में रासायनिक प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप जनित गंदे द्रव्य अगर सीने की ओर से बाहर निकलने का रास्ता अपनाते हैं तो उसको नज़ला और अगर यही गंदे द्रव्य नाक के रास्ते बाहर निकलते है तो उसे ज़ुकाम कहते हैं। इससे यह प्रकट है कि नज़ला और ज़ुकाम एक ही स्राव के दो विभिन्न नाम हैं जिन के बाहर निकलने के रास्ते के अनुसार नज़ला या ज़ुकाम कहते हैं।

''**शर्बत नज़ला**'' गंदे द्रव्यों की स्राव प्रक्रिया मे तेज़ी लाता है। नाक ठसी हुई होना, नाक बंद होना या नाक से पानी बहना, ज़ुकाम, खांसी, ख़ुश्क या बलग़मी, दमे या एलर्जी के कारण हो, ऐसी शिकायतों में शर्बत नज़ला उपयोगी है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रातः और सांयकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत बनफ़शा : बुख़ार, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम और सीने के रोगों जैसे पसली के दर्द में उपयोगी है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

हब्बे तिलाई : नए और पुराने दोनों प्रकार के नज़ले में लाभकर है। नज़ले के कारण गले और सीने पर जो प्रभाव हो जाता है वह भी दूर हो जाता है।
सेवन विधि : एक एक गोली प्रातः एवं सायंकाल पानी से खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त वर्णित औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल किशनीज़ी, इतरीफ़ल ज़मानी, कुश्ता मरजान जवाहर, कैलविट–सी, तुलसी कैप्सूल, देहल्वी ब्लू बाम, बीजबंद कैप्सूल, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी, लैवेंडर कैप्सूल, लेहसुन कैप्सूल, वसाका कैप्सूल और शर्बत सदर का भी सेवन व प्रयोग नज़ला, ज़ुकाम एवं इनफ्लुएंज़ा में कराया जा सकता है।

वायुविवरशोथ (साइनॉसाइटिस) (Sinusitis)

लैवेंडर कैप्सूल : चिंता व परेशानी, मानसिक अवसाद, मानसिक तनाव और मनोवैज्ञानिक दबाव में उपयोगी हैं। तनाव के कारण सिर दर्द, साइनस, माइग्रेन, अनिद्रा और मस्तिष्क की कमज़ोरी में भी लाभकर हैं।
सेवन विधि : प्रतिदिन दो कैप्सूल सुबह पानी के साथ दें।

साईनस–आई कैप्सूल : इसमें ऐसे पदार्थ शामिल हैं जो वायुविवरशोथ में लाभदायक हैं। यह नाक की हड्डियों के रास्तों और फेफड़े की नालियों के लिए लाभकारी है जिससे निद्रालुता, भूख की कमी, घबराहट या पेट में दर्द नहीं होता। यह विवर को स्वस्थ बनने में मदद करता है तथा श्लेष्मिक स्राव को प्रेरित करता है तथा रोगक्षमता को बढ़ाता है।
सेवन विधि : एक कैप्सूल दिन में दो बार पानी से खिलाएं।

साईनस–आई आयलः यह शुद्ध वनस्पति तेलों का गुणकारी मिश्रण है जो श्लेष्मिक स्राव को बाहर निकालता है और संक्रमण को मिटाता है जो वायुविवरशोथ में लाभकारी है और उसे सुचारू रूप प्रदान करता है। यह संक्रमण और साइनस के पुराने रोगियों को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है।
प्रयोग विधि : 2–3 बूंदें दिन में 2–3 बार नाक में टपकाएं।

नाक की दुर्गंध (Ozena)

इतरीफ़ल उस्तखुद्दूस, इतरीफ़ल ज़मानी, इतरीफ़ल मुलय्यन, इतरीफ़ल शाहतरा, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तखुद्दूस) कैप्सूल, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन नाक की दुर्गंध दूर करने के लिए उपयोगी हैं। पुदीनौल अन्य लाभ रखने के अतिरिक्त नाक की दुर्गंध दूर करता है। पुदीनौल की 2 बूंदे 5 बूंदे रोग़न गुल में मिलाकर प्रातः एवं सायंकाल नाक में टपकाएं।

नासिका कृमि (नाक के कीड़े) (Nasal Worms)

इतरीफ़ल शाहतरा, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन नाक के कीड़े पैदा हो जाने की दशा में उपयोगी है।

सूंघने की शक्ति का ह्रास (Anosmia)

इतरीफ़ल उस्तखुद्दूस, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तखुद्दूस) कैप्सूल, पुदीनौल और रोग़न गुल का सेवन नाक के सूंघने की शक्ति चले जाने की दशा में उपयोगी है।

दांतों और मसूढ़ों के रोग (Diseases of the Teeth and Gums)

दंतपीड़ा (Toothache)

रोग़न दारचीनी : दाढ़–दांत के दर्द को दूर करता है। साथ ही भिड़, बिच्छू जैसे विषैले कीड़ों द्वारा काटे हुए स्थान पर लगाने से दर्द, जलन, चसक को तुरंत दूर करता है।
प्रयोग विधि : रूई की फुरैरी को भिगोकर दाढ़ पर रखें तथा कीड़े काटे के स्थान पर 1–2 बूंदें लगाएं।

रोग़न लौंग : दाढ़–दांत के दर्द को शांति देता है। सिर दर्द को समाप्त करता है।
प्रयोग विधि : रूई की फुरैरी को भिगोकर दाढ़ पर रखें। सिर दर्द की अवस्था में माथे पर मालिश करें।

सनून जदीद : दांतों के दर्द और मसूढ़ों की सूजन के लिए उपयोगी है। अधिक मीठा खाने से जब दांत गलने लगते हैं तो ऐसी दशा में भी यह औषधि लाभकर है।
प्रयोग विधि : प्रातः और सांयकाल कुल्ली करके दांतों पर मलें और आधे घंटे तक दांतों पर पानी न लगने दें।

नोट : वर्णित औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल शाहतरा और कुर्स मुसक्किन का भी सेवन व प्रयोग दंतपीड़ा में कराया जा सकता है।

दंत मलिनता (Stained Teeth)

सनून जदीद और सनून सुर्ख़ दंत मलिनता की अवस्था में लाभकर हैं।

मसूढ़ों से ख़ून आना (Bleeding Gums)

सनून सुर्ख़ : दांतों की सफ़ाई और मुंह की दुर्गंध के लिए लाभकर है। मसूढ़ों से ख़ून आने को रोकता है। गंदे मुंह के कारण उत्पन्न मुंह के कीटाणुओं को मारता है। इसके नियमित प्रयोग से हिलते हुए दांत जम जाते हैं।
प्रयोग विधि : प्रातः और सांयकाल कुल्ली करके दांतों पर मलें और आधे घंटे तक पानी न लगने दें।

नोट : इसके अतिरिक्त कुर्स केहरूबा, जवारिश आमला सादा और सनून जदीद भी मसूढ़ों से ख़ून आने में प्रयोग कराए जा सकते हैं।

मसूढ़ों से पीप आना (Pyorrhoea)

इतरीफ़ल शाहतरा, माजून उश्बा, सनून जदीद और

सनून सुर्ख़ का सेवन और प्रयोग भी मसूढ़ों से पीप आने की अवस्था में कराया जा सकता है।

मसूढ़ों की सूजन
(Gingivitis)

जवारिश आमला सादा, जवारिश ज़ंजबील, जवारिश तबाशीर, जवारिश मस्तगी, जवारिश शाही, मस्तगी कैप्सूल, सनून जदीद और सनून सुर्ख़ का सेवन और प्रयोग मसूढ़ों की सूजन में उपयोगी है।

दंत अस्थिरता (दांतों का हिलना)
(Loose Teeth)

दांतों के हिलने की अवस्था में सनून जदीद और सनून सुर्ख़ का प्रयोग लाभ पहुंचाता है।

मुंह और जीभ के रोग
(Diseases of the Mouth and Tongue)

मुंह आना (मुख पाक)
(Thrush)

कुश्ता फ़ौलाद, जवारिश आमला सादा और जवारिश शाही मुंह आने के रोग में लाभकारी हैं।

राल बहना
(Ptyalism)

जवारिश कमूनी, जवारिश कमूनी मुसहिल, जवारिश जालीनूस, जवारिश मस्तगी, देहल्वी कमून कैप्सूल, देहल्वी गैलेनूस पिल्ज़, मस्तगी कैप्सूल और माजून नानख़ाह का सेवन राल बहने में लाभकर है।

मुंह की बदबू
(Halitosis)

जवारिश जालीनूस, जवारिश बिसबासा, देहल्वी गैलेनूस पिल्ज़, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, माजून फ़लासफ़ा, सनून जदीद और सनून सुर्ख़ मुंह की दुर्गंध को दूर करने के लिए लाभकर हैं।

होंठ फटना और होंठो का सूखापन
(Cracked & Dry Lips)

रोग़न कद्दू और रोग़न गुल का प्रयोग होंठ फटने और होंठो का सूखापन दूर करने के लिए लाभकर है।

हकलाहट
(Stammering)

कुश्ता गौदन्ती का सेवन हकलाहट को दूर करने में सहायक है। एक अक़रक़राह कैप्सूल खोल कर पाउडर जीभ पर 5 मिनट तक रखें, फिर धो डालें।

हलक़ और गले के रोग
(Diseases of the Pharynx & Throat)

कव्वे का लटक जाना
(Elongation of the Uvula)

शर्बत तूत स्याह : गले के दर्द, ख़राश और सूजन को दूर करता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर प्रातः और सांयकाल गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

गले के ग़ुदूदों का सूजना (तुंडिकेरी)
(Tonsillitis)

टौन्सिलिन : विशुद्ध देसी औषधियों का मिश्रण है जो गले की सरसराहट, ख़राश, गले का घाव, टांसिलाइटिस (तुंडिकेरी), आवाज़ भारी हो जाना, कव्वा लटक जाना आदि के लिए अचूक है। बढ़ी हुई गले की गांठो वाले रोगी जिन्हे आपरेशन प्रस्तावित किया गया है, वे आपरेशन से पूर्व इस औषधि का प्रयोग करके राहत पा सकते हैं।
प्रयोग विधि : दिन में दो या तीन बार रूई की फुरैरी से गले में लगाएं या एक गिलास हल्के गर्म पानी में आधा चमचा यह दवा और 1/4 चमचा नमक मिलाकर ग़रारे कराना भी उपयोगी है।

नोट : इसके अतिरिक्त कफ़नो सिरप, कफ़नो–SF, कफ़नो टैबलेट्स, लऊक़ सस्पितां ख़्यार शंबरी और शर्बत तूत स्याह भी गले के ग़ुदूदों की सूजन में उपयोगी हैं।

हलक़ की फुन्सियां
(Granular Pharyngitis)

टौन्सिलिन, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी और शर्बत

तूत स्याह हलक़ की फुन्सियों में लाभ पहुंचाती हैं।

नर्ख़रे की सूजन और आवाज़ बैठ जाना (Laryngitis & Hoarseness of Voice)

हब्बे बहतुस्सौत : आवाज़ साफ़ करती है। बलग़म को निकालती है। खांसी और दमे के लिए भी लाभकारी है।
सेवन विधि : 1–1 गोली मुंह में रखकर चूसें।

नोट : इसके अतिरिक्त कफ़नो सिरप, कफ़नो–SF, कफ़नो टैबलेट्स, टौन्सिलिन, लऊक़ बादाम, लऊक़ सपिस्तां, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी और शर्बत तूत स्याह भी नर्ख़रे की सूजन और आवाज़ बैठ जाने की अवस्था में उपयोगी हैं। आवाज़ बैठने की सूरत में शीघ्र लाभ के लिए कफ़नो टैबलेट्स की 2 टिकियां आधा गिलास खौलते हुए पानी में डालें और भाप का भपारा गले में दें। थोड़ी देर तक खाने पीने की कोई चीज़ न दें। पानी ठंडा होने पर घूंट–घूंट पिलाएं।

रोहिणी (Diphtheria)

जो औषधियां गले के गुदूदों की सूजन के लिए प्रस्तावित की गई हैं वे सब रोहिणी में भी लाभकर हैं।

सीने के रोग (Diseases of the Chest)

खांसी (Cough)

कफ़नो सिरप : नज़ला, ज़ुकाम, खांसी की प्रभावशाली औषधि है। गले की ख़राश और सांस की नाली की सूजन में लाभकारी है। फ़ेफ़ड़ों को शक्ति देता है तथा बलग़म आसानी से निकालता है। राजयक्ष्मा और टी0बी0 जैसे घातक रोगों से बचाता है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रातः तथा सायंकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

कफ़नो–SF : इसके वही लाभ हैं जो उपर कफ़नो सिरप के लिखे गए हैं लेकिन यह शुगर–फ्री है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रातः तथा सायंकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

कफ़नो टैबलेट्स : हर प्रकार की खांसी, सर्दी, नज़ला, ज़ुकाम, गले और सीने के रोगों की अचूक औषधि है। इसे देसी जड़ी बूटियों के सत्त से तैयार किया जाता है। इस में मिश्रित तत्व सांस की नालियों में पहुंचकर बलग़म को उखाड़ कर सीने को साफ़ करते हैं। साथ ही खांसी से मुक्ति दिलाते हैं। इसके सेवन से गले की ख़राश, आवाज़ बैठ जाना, गले का दर्द, नाक और हवाई नालियों की सूजन भी जाती रहती है।
सेवन विधि : दो–दो टैबलेट्स प्रातः और सायंकाल मुंह में रख कर चूसने को दें। बच्चों की खांसी में एक टैबलेट गर्म पानी में घोल कर पिलाएं।

कुश्ता अबरक सफ़ेद : खांसी और दमे को दूर करता है तथा काम शक्ति को बढ़ाता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या 2 टिकियां 10 ग्राम शहद में मिलाकर खिलाएं।

कुश्ता अबरक स्याह : यह कुश्ता अबरक सफ़ेद जैसे लाभ रखता है, परन्तु यह अधिक प्रभावकारी है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है।
सेवन विधि : 30 मिलीग्राम से 60 मिलीग्राम या 1 या 2 टिकियां 10 ग्राम शहद में मिलाकर खिलाएं।

शर्बत सदर : नज़ला, ज़ुकाम तथा खांसी की प्रभावशाली औषधि है। गले की ख़राश और सांस की नाली की सूजन में लाभकारी है। फ़ेफ़ड़ों को शक्ति देता है तथा बलग़म आसानी से निकालता है। राजयक्ष्मा और टी0बी0 जैसे घातक रोगों से बचाता है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रातः तथा सायंकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त ऐस्मा–कैप, कुश्ता ज़मर्रूद, ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला, ख़मीरा आबरेशम सादा, गावज़बां कैप्सूल, तुलसी कैप्सूल, मुलेठी कैप्सूल, देहल्वी जोशांदा, देहल्वी जोशांदा ड्राप्स, देहल्वी जोशांदा ग्रेन्यूल्ज़, लऊक़ बादाम, लऊक़ सपिस्तां, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी, लऊक़ मोतदिल, वसाका कैप्सूल, शर्बत एजाज़, शर्बत तूत स्याह और शर्बत नज़ला भी खांसी की अचूक औषधियां हैं।

दमा (Bronchial Asthma)

ऐस्मा–कैप : यह दमा और श्वास नलियों की श्लेष्मिक कला की सूजन (ब्रोन्काइटिस) में लाभदायक है। इसमें श्वास नलियों का विस्कारण करने वाली, हिस्टामीन के प्रभावों को निष्फल करने

वाली तथा बलग़म को निकालने वाली जड़ी–बूटियां हैं जो एलर्जी पैदा करने वाली वस्तुओं के विरुद्ध प्राकृतिक बचाव करती हैं। श्वास नलियों की सूजन और तंगी को दूर करती है और सार्वदैहिक शोफ (इडीमा)– फेफड़ों में तरल पदार्थ व बलग़म जमने से रोकती है और श्वास मार्ग को फ़ैलाती है जिसके कारण सांस लेने में आसानी होती है। एलर्जी से पैदा होने वाले दमा के रोगी को मौसम के दुष्प्रभाव से बचाव करती है। ऐस्मा–कैप विशेष जड़ी–बूटियों से बनाई गई दवा है जिसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता। यह पूर्णतयाः सुरक्षित है और इसका सेवन लम्बे समय तक कराया जा सकता है।
सेवन विधि : एक कैप्सूल दिन में दो या तीन बार पानी से खिलाएं।

कुश्ता अबरक कलां : खांसी और दमे को दूर करता है तथा काम शक्ति को बढ़ाता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या 2 टिकियां 10 ग्राम शहद में मिलाकर खिलाएं।

ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला : मस्तिष्क और फ़ेफ़ड़ों की कमज़ोरी, सूखी खांसी, राजयक्ष्मा तथा टी0 बी0 में लाभकर है। घबराहट, बेचैनी और विचारों की परेशानी को दूर करता है। पाकस्थली के ताप में भी लाभकारी है। नेत्र ज्योति में वृद्धि करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल निहार मुंह 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां या पानी से खिलाएं।

बीजबंद कैप्सूल : दमा, नज़ला व ज़ुकाम, फ्लू, सर दर्द, खांसी और सांस बाहर छोड़ने में सीटी बजने जैसी आवाज़ निकलना में लाभकर हैं। मोटापा, प्रमेह, वीर्य का पतलापन व शीघ्र वीर्य और पतन प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहने में भी लाभकर हैं।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल दिन में दो बार पानी के साथ दें।

लऊक़ कतां : दमे में उपयोगी है। बलग़म को निकाल बाहर करता है। क़ब्ज़ को भी दूर करता है।
सेवन विधि : 10–10 ग्राम प्रातः और सांयकाल चटाएं।

लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी : नज़ला व ज़ुकाम तथा उस के द्वारा जनित अधिक खांसी में लाभकारी है। बलग़म को निकालता है और क़ब्ज़ को समाप्त करता है। हलक़ और नर्ख़रे की सूजन को दूर करता है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातः और सायंकाल थोड़े गर्म पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

वसाका कैप्सूल : दमा, ब्रोन्काइटिस, थूक के साथ खांसी, धूम्रपान के कारण खांसी और तपेदिक में लाभदायक हैं।
सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दो बार भोजन लेने के पश्चात् पानी के साथ दें।

शर्बत ज़ूफ़ा मुरक्कब : दमे और बलग़मी खांसी में अचूक औषधि है। सीने को बलग़म से साफ़ करता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर हल्के गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत ज़ूफ़ा सादा : दमे और बलग़म वाली खांसी में उपयोगी है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर हल्के गर्म पानी में मिलाकर पिलाएं।

हब्बे ज़ीकुन्नफ़स : दमे और अधिक खांसी के लिए लाभकर हैं।
सेवन विधि : एक एक गोली प्रातः और सायंकाल पानी के साथ खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अर्बियन नुस्ख़ा, गावज़बां कैप्सूल, तुलसी कैप्सूल, मुलेठी कैप्सूल, कुश्ता मरजान, कुश्ता मरजान जवाहर और कैरूती आरद क्रसना का सेवन दमे में भी कराया जा सकता है।

रक्तष्ठीवन (ख़ून थूकना) (Haemoptysis)

क़ुर्स बंदिश ख़ून : रक्तष्ठीवन (ख़ून थूकना), नकसीर, मूत्र में ख़ून, बवासीर का ख़ून, अर्थात किसी भी भाग से ख़ून निकलता हो, इनके सेवन से बन्द हो जाता है।
सेवन विधि : दो–दो टैबलेट्स प्रातः और सायंकाल दोनों समय दूध या पानी से सेवन कराएं।

शर्बत अंजबार : ख़ूनी दस्तों को रोकता है। मुंह से ख़ून निकलने के रोग में लाभकर है। आमाशय और यकृत को शक्ति देता है। आंतों की मरोड़ को दूर करता है। बुख़ार में शांति देता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर पानी में मिला कर पिलाएं।

नोट : इस औषधि के अतिरिक्त कुश्ता अक़ीक़, कुश्ता मरजान, कुश्ता मरजान जवाहर, कुश्ता मरवारीद, कुर्स कहरूबा, जवारिश आमला सादा, मोचरस कैप्सूल और शर्बत एजाज़ भी ख़ून थूकने

के रोग में सेवन कराए जा सकते हैं।

राजयक्ष्मा तथा टी0 बी0
(Phthisis & Tuberculosis)

लऊक़ बादाम : सीने की खुश्की और सूखी खांसी में उपयोगी है। मस्तिष्क को शक्ति देता है।
सेवन विधि : प्रातः और सायंकाल 10–10 ग्राम पानी से सेवन कराएं।

शर्बत एजाज़ : राजयक्षमा, टी0 बी0 और सूखी खांसी में उपयोगी है। मुंह से ख़ून आने में लाभकार है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर अर्क़ गांवजबां 125 मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

सेहत बख़्श : हर प्रकार के ज्वर में उपयोगी है। यह औषधि रोगी की शक्ति को घटने और मूल द्रव्यों तथा शारीरिक गरिमा को समाप्त होने से बचाती है। अगर ''सेहत बख़्श'' राजयक्ष्मा के आरंभ में ही शुरू करा दी जाए तो राजयक्ष्मा और टी0 बी0 के कीटाणु बहुत जल्दी मर जाते हैं और धीरे–धीरे फ़ेफ़ड़े के घाव भरने लगते हैं और खांसी से राहत मिल जाती है। बच्चों के सूखा मसान और मलेरिया ज्वर में भी लाभकारी औषधि है।
सेवन विधि : 30–30 मिली लीटर प्रातः एवं सायंकाल पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त कुश्ता अक़ीक़, कुश्ता फ़ौलाद, कुश्ता मरवारीद, ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला, ख़मीरा मरवारीद, तुलसी कैप्सूल और शर्बत फ़ौलाद भी राजयक्ष्मा तथा टी0 बी0 में लाभकर हैं।

निमोनिया व पसली का दर्द
(Pneumonia and Pleurisy)

कुश्ता क़र्नुलएल : सीने और पसली के दर्द में उपयोगी है। बलग़मी खांसी और निमोनिया में भी लाभकर है। कंठमाला की गिल्टियों को भी घुलाता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां 10 ग्राम लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी में रखकर खिलाएं।

क़ैरूती अरद क्रसना : निमोनिया, पसली का दर्द, दमे और सीने के दर्द में लाभकर है। सीने से बलग़म को निकालती है।
प्रयोग विधि : इस औषधि की 10 ग्राम मात्रा में 5 मिली लीटर तारपीन का तेल मिलाकर पसिलयों और सीने पर मालिश करें। अगर तारपीन को तेल उपलब्ध न हो तो कवेल इसी औषधि की हल्की गर्म मालिश करें। ऊपर से रूई को गर्म करके बांधें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त कफ़नो सिरप, कफ़नो–SF, शर्बत दीनार और शर्बत बनफ़शा भी निमोनिया व पसली के दर्द में सेवन कराई जा सकती हैं।

हृदय रोग
(Cardiovascular Disorders)

हृदय दुर्बलता
(Weakness of Heart)

अर्क़ अंबर : हृदय को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करता है। यकृत, आमाश्य और मस्तिष्क को शक्ति देता हैं। मूर्च्छा एवं सामान्य शारीरिक दौर्बल्य को दूर करता है।
सेवन विधि : 60 मिली लीटर प्रातः एवं सायंकाल 20 मिली लीटर शर्बत अनार शीरीं में मिलाकर पिलाएं।

अर्बियन नुस्ख़ा : यह एक प्राकृतिक औषधि है जो हार्ट ब्लॉकेज व ऐंजाईना में लाभकर है और मोटापा व कोलेस्ट्राल घटाता है। ब्लड प्रेशर सामान्य करता है, रक्त गाढ़ा होने से रोकता है, फ़ालिज से बचाव करता है, पाचन ठीक करता है, शरीर को त्वचा विकारों से बचाता है, आंतों की कमज़ोरी दूर करता है और संधिवात में लाभदायक है।
सेवन विधि : दवा के साथ है।

अर्जुना आमला रसः समस्त अर्जुना व आमला रस के गुणों से परिपूर्ण है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

अर्जुना कैप्सूल : हृदय को शक्ति देता है। हृदय की धड़कन को कम करता है और हाई ब्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप) को भी कम करता है।
सेवन विधि : एक या दो कैप्सूल दिन में दो बार खाना खाने के पश्चात पानी से खिलाएं।

अर्जुना रसः हृदय को स्वस्थ व सामान्य रखता, मांसिक तनाव व डर को दूर करता, रक्तचाप व हृदय का संचालन नियमित करता, कोलेस्ट्रॅाल स्तर को नियंत्रित करता, हृदय विकार दूर करता, हृदय की धड़कन, ऐंजाईना तथा अन्य हृदय विकारों में

लाभ देता और हृदय को ऑक्सीजन पहुंचाने में सहायक है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन करा सकते हैं।

कार्डियो–सिप : ऐसा फार्मूला जो स्वस्थ हृदय को सुचारू रूप से कार्य करने में सहायक है। यह हृदय की मांसपेशियों को पौष्टिकता और शक्ति प्रदान कर रक्त प्रवाह बढ़ाता है, फलस्वरूप हृदय में ऑक्सीजन अधिक पहुंचती है। इसके अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स को सामान्य स्तर पर लाता है। यह एक रोगनिरोधी के रूप में हर किसी के लिए लाभकर है, विशेष रूप से उनके लिए जो तनावपूर्ण जीवन बिताते हैं या जिन के परिवार में हृदय–धमनी रोग की समस्या रही हो।
सेवन विधिः 10 मि.ली. प्रतिदिन दो बार पिलाएं।

कुश्ता नुक़रा : हृदय, मस्तिष्क और यकृत को शक्ति प्रदान करता है। हृदय की धड़कन तथा घबराहट को दूर करता है। संभोग शक्ति को बढ़ाता है। उपदंश, वीर्यस्राव और स्वप्नदोष में लाभकर है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकिया 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला में रखकर खिलाएं। काम शक्ति को बढ़ाने के लिए 5 ग्राम लबूब कबीर में रखकर खिलाएं और ऊपर से दूध पिलाएं।

कुश्ता मरवारीद : हृदय को शक्ति तथा प्रफुल्लता प्रदान करता है। हृदय की धड़कन, ख़ून थूकने, टी0बी0, पागलपन, कुविचारता तथा पौरूष उपदंश और स्त्रियों के श्वेत प्रदर में बहुत लाभकारी है।
सेवन विधि : 30 मिलीग्राम या एक टिकिया 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला में रखकर खिलाएं।

ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला : हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति देता है। मस्तिष्क के विभिन्न भागों को शक्ति देकर उनका विकार दूर करता है। स्नायुओं की बढ़ी हुई प्रक्रिया को सामान्य करता है। हृदय प्रक्रिया में संतुलन उत्पन्न करता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। हृदय की धड़कन, उन्माद और कुविचारता को शीघ्र दूर करता है। यकृत को शक्ति देकर रक्त की उत्पत्ति में सहायक होता है। हृदयशूल और रोग के बाद की दुर्बलता में उपयोगी है।
सेवन विधि : एक ग्राम से 6 ग्राम तक प्रातःकाल निहार मुंह दूध या पानी के साथ सेवन कराएं।

जवारिश शाही : हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करती है। घबराहट को दूर करती है। ज्वर को रोकती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातः निहार मुंह पानी से सेवन कराएं।

जवाहर मोहरा : यूनानी चिकित्सा पद्धति की श्रेष्ठ और प्रसिद्ध औषधियों में से एक है। हृदय को शक्ति देता है। शारीरिक गरिमा को बढ़ाता है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत व अमाशय को पौष्टिकता प्रदान करता है। मूर्च्छा में विचित्र प्रभाव दर्शाता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या 2 टिकियां 5 ग्राम ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला या दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली में मिलाकर सेवन कराएं। बच्चों को 30 मिलीग्राम या 1 टिकिया दें।

देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़ : क़दीमी नुस्ख़े में से शकर के अतिरिक्त कुछ निकाला नहीं, गुणकारिता के अतिरिक्त कुछ मिलाया नहीं।
देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज, सदियों से आज़माए हुए ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला का गोली के रूप में विकसित रूप है जो हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति देता है। शकर रहित, एक गोली, 5 ग्राम ख़मीरा का आधुनिक विकल्प है। बेही, अनार व सेब के रस के स्थान पर हम डीहाईड्रेटेड फलों का प्रयोग करते हैं ताकि इसके गुण बने रहें। मस्तिष्क को शक्ति देता, स्नायुओं की प्रक्रिया को सामान्य करता और हृदय को संतुलित करता तथा सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। धड़कन, उन्माद और कुविचार शीघ्र दूर कर, यकृत को शक्ति देता और उसकी उत्पत्ति में सहायक है। हृदशूल और रोग के बाद की दुर्बलता में उपयोगी है।
सेवन विधि : एक गोली प्रातःकाल निहार मुंह दूध या पानी के साथ सेवन कराएं।

देहल्वी हार्टोन–डी आर : हृदय को शक्ति देती है और उसकी प्रक्रिया व्यवस्था में सामान्यता और संतुलन पैदा करती है। दुर्बल हृदय के व्यक्ति इसका सेवन करें तो उनकी हृदयगति सामान्य रहती है और बंद नहीं होने पाती।
सेवन विधि : एक गोली 5 ग्राम ख़मीरा मर्वारीद में मिलाकर प्रातःकाल निहार मुंह या आवश्यकतानुसार खिलाएं। केवल गोली भी खिला सकते हैं।

बहमन कैप्सूल : वैज्ञानिक रिसर्च ने हृदय एवं रक्त वाहिनियों के बहाव की समस्याओं के परंपरागत प्रयोग से लाभ की पूर्ण रूप से पुष्टि कर दी है। हृदय में रक्त आपूर्ति कराने में बहमन अत्याधिक प्रभावी सिद्ध हुआ है। यह हृदयशूल के लक्षणों को कम करता है एवं हृदय के कार्य को सुधारता है।

दिल के दौरे से स्वस्थ्यलाभ होने वाले रोगियों को सहायता देता है और यह प्रतीत हुआ है कि इस गम्भीर स्थिती में भी इसने हृदय की क्रिया को सुधारने में सहायता दी। चिकित्सालीय जांच से सिद्ध हुआ कि बहमन को निरोधक के रूप में प्रयोग करना अत्याधिक लाभप्रद है न कि दिल का दौरा पड़ने के पश्चात। यह विशेषकर हृदय वाहिनियों में रक्त के दबाव के लिए लाभदायी है, रक्त धमनीयों की रगों को खोलता है और हृदय को रक्त प्रदान करने में सुधार उत्पन्न करता है और इसी कारण यह हृदयिक वाहिनियों के रोगों के लिए अधिक प्रभावशाली है। यद्यपि यह रक्त के दाब को कम नहीं करता, किन्तु यह रक्त वाहिनियों को ढीला करता है और समस्त शरीर को रक्त पहुंचाने का उत्तम कार्य करता है। यह रक्त को जमने से रोकता है और मायोकार्डियल इन्फार्कशन (दिल का दौरा) को रोकने और चिकित्सा करने में उपयोगी है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

हब्बे जवाहर : हृदय, मस्तिष्क, आमाश्य और यकृत को शक्ति देती है। शरीर की सामान्य ऊषणता की रक्षक है। हृदय की धड़कन में लाभकर है। लंबी रोगावस्था के बाद की दुर्बलता और सामान्य शारीरिक दौर्बल्य में भी लाभकर है।

सेवन विधि : एक एक गोली प्रातः और सांयकाल 5 ग्राम दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली या ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहर वाला में रखकर खिलाएं। ऊपर से 250 मिली लीटर दूध पिलाएं।

हार्ट–केयर : दिल को मज़बूत करता और घबराहट, चिंता, अवसाद, विषाद रोग (melancholia) और एनजाइना में उपयोगी है। हार्ट–केयर कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (LDL) को कम करके सीरम लिपिड्स को नियंत्रित करता है और उच्च घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (HDL) को बहाल करता है जोकि हृदय के लिए रक्षात्मक है। इसके अतिरिक्त शरीर की प्राकृतिक गर्मी बनाए रखने में मदद करता है और स्वास्थ्य लाभ में भी उपयोगी है। यह पूरी तरह से सुरक्षित है और लम्बी अवधि तक किसी भी दुष्प्रभाव के बिना दिया जा सकता है।

सेवन विधि : 1 कैप्सूल प्रातः ख़ाली पेट पानी से सेवन कराएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ गावज़बां, अर्क़ गुलाब, अर्क़ बेद मुश्क, आमला कैप्सूल, कुश्ता अक़ीक, कुश्ता मरजान जवाहर, कैलविट–सी, ख़मीरा आबरेशम सादा, ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला, ख़मीरा गावज़बां अंबरी, ख़मीरा गावज़बां सादा, ख़मीरा मरवारीद, ख़मीरा मरवारीद बनुस्ख़ा कलां, गुग्गल कैप्सूल, जवारिश आमला सादा, दवाउलमिस्क मोतदिल, दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली, देहल्वी डी.एम.एम. जवाहरी कैप्सूल, देहल्वी सेहाटोन, नौरस, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, रूह अर्क़ केवड़ा, रूह अर्क़ गुलाब, शर्बत अंगूर शीरीं, शर्बत अहमद शाही, शर्बत अनार शीरीं, शर्बत केवड़ा, शर्बत सन्दल और हब्बे ख़ास हृदय दुर्बलता में खिलाई जा सकती हैं।

हृदय की धड़कन (Palpitation)

अर्क़ गावज़बां : हृदय को शक्ति एवं प्रफुल्लता प्रदान करता है। घबराहट और मानसिक रोगावस्था में उपयोगी है। ज्वर को शांत करता है और प्यास को बुझाता है।

सेवन विधि : 125 मिली लीटर में 25 मिली लीटर शर्बत केबड़ा मिलाकर हल्का गर्म पिलाएं।

अर्क़ गुलाब : हृदय को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करता है। धड़कन, घबराहट और बेचैनी को दूर करता है। मस्तिष्क, आमाशय और यकृत संबंधी रोगों में भी उपयोगी है। मूर्च्छा की अवस्था में अत्यंत लाभकर है। गर्मी को दूर करता है तथा प्यास को बुझाता है।

सेवन विधि : 10 मिली लीटर अर्क़ गुलाब 25 मिली लीटर शर्बत संदल या पानी में मिलाकर पिलाएं।

अर्क़ बेद मुश्क : हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को शक्ति देता है। ज्वर को शांत करता है और प्यास को बुझाता है। हृदय की धड़कन को सामान्य करता है और सिर दर्द में लाभदायक है।

सेवन विधि : 50 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

कुश्ता अक़ीक़ : हृदय को शक्ति देता है। हृदय की धड़कन और घबराहट को दूर करता है। ख़ून थूकने और अत्याधिक मासिक धर्म में उपयोगी है। राजयक्ष्मा और टी0बी0 में फ़ेफ़ड़ों के घावों को भरता है।

सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां प्रातःकाल निहार मुंह 5 ग्राम ख़मीरा मरवारीद में रखकर खिलाएं।

ख़मीरा सन्दल सादा : हृदय की धड़कन को सामान्य करता है। घबराहट को दूर करता है।

सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल अनाहार खिलाएं।

दवाउलमिस्क बारिद जवाहरवाली : गर्म स्वभाव

व्यक्तियों में हृदय को शक्ति देने के लिए लाभकर है। हृदय की धड़कन और घबराहट को दूर करती है। मस्तिष्क और यकृत को भी शक्ति देती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल अनाहार खिलाएं और ऊपर से अर्क़ गावज़बां 125 मिली लीटर पिलाएं।

दवाउलमिस्क बारिद सादा : गर्म स्वभाव व्यक्तियों में हृदय को शक्ति देने के लिए लाभकर है। हृदय की धड़कन और घबराहट को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल अनाहार खिलाएं और ऊपर से अर्क़ गावज़बां 125 मिली लीटर पिलाएं।

दवाउलमिस्क मोतदिल : आमाशय, हृदय और यकृत की दुर्बलता को दूर करती है। घबराहट, कुविचार प्रक्रिया और मूर्च्छा की अवस्थाओं में लाभकर है। रोग के बाद की दुर्बलता और सामान्य शारीरिक दुर्बलता में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः एवं सायंकाल 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां या पानी के साथ सेवन कराएं।

दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली : हृदय को पुष्टि देती है। हृदय की अनियमित प्रक्रिया को संतुलित करती है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता, मूर्च्छा, घबराहट तथा रोगावस्था के बाद की दुर्बलता में लाभकर है। रक्त प्रवाह और रक्त उत्पत्ति को बढ़ाती है। यकृत तथा आमाशय को भी शक्ति प्रदान करती है।
सेवन विधि : 3 ग्राम से 6 ग्राम तक प्रातः एवं सायंकाल 50 मिली लीटर अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा के साथ खिलाएं।

देहल्वी डी. एम. एम. जवाहरी कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी डी0एम0एम0 जवाहरी कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। हृदय को पुष्टि देता है। हृदय की अनियमित प्रक्रिया को संतुलित करता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता, मूर्च्छा, घबराहट तथा रोगावस्था के बाद की दुर्बलता में लाभकर है। रक्त प्रवाह और रक्त उत्पत्ति को बढ़ाता है। यकृत तथा आमाशय को भी शक्ति प्रदान करता है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातः एवं सायंकाल 50 मिली लीटर अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा के साथ खिलाएं।

रूह अर्क़ केवड़ा : हृदय को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करती है। हृदय की धड़कन और घबराहट में उपयोगी है। गर्मी को शांत और प्यास को बुझाती है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर ताज़े पानी में मिलाकर पिलाएं।

रूह अर्क़ गुलाब : हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति और प्रफुल्लता प्रदान करती है। हृदय की धड़कन और घबराहट में लाभकर है। प्यास को बुझाती है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

शर्बत अंगूर शीरीं : हृदय को शक्ति देता है। पित्त का नाश करता है। अमाशय की गर्मी समाप्त करके उसकी प्रक्रिया को सुचारू करता है। हल्के क़ब्ज़ को भी ठीक करता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर थोड़े पानी में मिलाकर पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अंबर, कुश्ता नुक़रा, ख़मीरा आबरेशम सादा, ख़मीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला, ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला, ख़मीरा गावज़बां अंबरी, ख़मीरा गावज़बां सादा, ख़मीरा मरवारीद, देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़, देहल्वी हार्टोन—डी आर, देहल्वी सेहाटोन, नीलोफ़र कैप्सूल, नोशदारू, जवारिश आमला सादा, जवारिश शाही, शर्बत अनार शीरीं, शर्बत केवड़ा, शर्बत संदल और हार्ट—केयर भी हृदय की धड़कन में उपयोगी हैं।

ब्लड प्रैशर का बढ़ना (उच्च रक्तचाप) (Hypertension)

असरोल कैप्सूल : इसे सदियों से केंद्रीय स्नायु संस्थान विकारों (Central Nervous System Disorders) — मानसिक व मोटर न्यूरॉन, जैसे चिंता व परेशानी, अनिद्रा, उत्तेज्यता, लैंगिक एग्रेशन, रोगभ्रम, मानसिक क्रियाशीलता का ह्रास, हिस्टीरिया, पागलपन, मालीख़ूलिया व मिर्गी (अपस्मार) में सेवन कराया जा रहा है। उच्च रक्तचाप में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल रात को सोते समय पानी से सेवन कराएं।

प्रेशर—ईज़ : रक्तचाप को सामान्य बनाए रखने और पूर्ण रूप से कन्ट्रोल में रखता है और ऐसी क्रिया—विधियों को नष्ट करता है जो इसके मुख्य स्रोत का कारण हैं। इसके कुछ संघटक अंश विशेष रूप से उन रक्त वाहिनियों को निशाना बनाते हैं जो सुकुड़ गई हैं, जबकि दूसरे संघटक

अंश हृदय के द्वारा रक्त की सप्लाई को स्वस्थ्य बनाने में सहायता करते हैं और धमनीयों में होने वाली रुकावटों को होने से रोकते हैं। प्रेशर–ईज़ कैप्सूल मनोवैज्ञानिक दबाव को दूर करता है और शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल रात को सोते समय पानी से सेवन कराएं। निश्चित मात्रा से अधिक न दें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्बियन नुस्ख़ा, अर्जुना कैप्सूल, तगर कैप्सूल, दवाउश्शिफ़ा, नौरस और सेब सिरका उच्च रक्तचाप में भी सेवन कराए जा सकते हैं।

ब्लड प्रेशर का कम होना (निम्न रक्तचाप) (Hypotension)

जब रक्त का दबाव कम हो जाता है तो सामान्य शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है। काम करने को जी नहीं करता। अगर काम किया भी जाता है तो जल्दी ही थकान हो जाती है। प्रायः सुस्ती और उर्नीदापन आते रहते हैं। ऐसी अवस्था में अर्क़ माउल्लहम ख़ास, अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा, एनर्जाईन, कुश्ता फ़ौलाद, ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला, जवाहर मोहरा, देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़, देहल्वी सेहाटोन, देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक, दवाउलमिस्क मोतदिल, दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली, देहल्वी डी. एम. एम. जवाहरी कैप्सूल, हब्बे अंबर मोमियाई, हब्बे ख़ास और हार्ट–केयर का सेवन लाभकर रहता है।

कोलेस्ट्रॉल का ऊँचा स्तर (High Cholestrol Levels)

गुग्गल कैप्सूल : मोटापा और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए एक बहुत प्रभावी हर्बल दवा है। सीरम ट्राइग्लाइसेराइड्स व कोलेस्ट्रॉल और LDL और VLDL कोलेस्ट्रॉल (ख़राब कोलेस्ट्रॉल) को कम करता है। यह अच्छे HDL कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ाता है। धमनीकलाकाठिन्य, सन्धिशोथ, गाउट, कमर में दर्द, प्रातः को जोड़ों का अकड़ जाना, अस्थिसन्धिशोथ, आमवात और गृध्रसी में लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

लिपोकैप : प्राकृतिक ढ़ंग से कोलेस्ट्रॉल को कम करता है, कोलेस्ट्रॉल के संचालन को उचित करता है, रक्त में 'ख़राब LDL कोलेस्ट्रॉल' और ट्राइग्लाइसेराइड्स के स्तर को कम करता है और 'अच्छे HDL कोलेस्ट्रॉल' का स्तर बढ़ाता है।

सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार पानी से सेवन कराएं।

लेहसुन कैप्सूल : कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए बहुत प्रभावी है। गुर्दे की सफाई और मूत्र प्रवाह में वृद्धि करके यह शरीर को कमजवगपलि करता है। प्रतिरक्षा क्षमता में कमी, नज़ला जुकाम, फ्लू, बैक्टीरिया और कवक द्वारा त्वचा पर संक्रमण के लिए लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन दो कैप्सूल सुबह पानी के साथ दें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्बियन नुस्ख़ा, अर्जुना आमला रस, अर्जुना कैप्सूल, अर्जुना रस, कार्डियो–सिप, देहल्वी इसबग़ोल, मेथी कैप्सूल, विलायती इमली कैप्सूल, सेब सिरका, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और हार्ट–केयर उच्च रक्तचाप में भी सेवन कराए जा सकते हैं।

बेहोशी (मूर्च्छा) (Syncope)

दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली : अगर बेहोशी शारीरिक कमज़ोरी के कारण है तो होश और शक्ति को बहाल करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम दूध या पानी में घोल कर मूंह में डालें या इसे रूह अर्क़ गुलाब और अर्क़ अंबर में घोलकर चमचे से रोगी के मुंह में डालें और रूह अर्क़ गुलाब चेहरे पर छिड़कें।

आमाशय रोग (Diseases of the Stomach)

आमाशय की दुर्बलता (Atonic Stomach)

अर्क़ अजवाएन : यकृत व आमाशय को शक्ति देता है। उदर शूल, पेट दर्द, प्रवाहिका (पेचिश) तथा अपचन में उपयोगी है। वायु को निकालता है। छाती, पित्त और भोजन नली की जलन को दूर करता है। मतली और पित्त को रोकता है। भूख लगाता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर हल्का गर्म पिलाएं।

अर्क़ ब्रंजासिफ़ : आमाशय तथा यकृत को शक्ति देता है। पेट के दर्द और कफ़ ज्वर को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर पिलाएं।

अर्क़ बादियान : यकृत, आमाशय व आंतो को शक्ति देता है। उदर शूल, पेट दर्द, प्रवाहिका (पेचिश) तथा अपचन में उपयोगी है। वायु को निकालता है। छाती, पित्त और भोजन नली की जलन को दूर करता है। प्यास बुझाता है। मतली और पित्त को रोकता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर हल्का गर्म पिलाएं।

अदरक कैप्सूल : औषधियों में अदरक की महत्त्वता इस कारण अधिक है कि यह गैस को बाहर निकालती है और आमाश्य एवं आंतों को उत्तेजक करती है। यह जी मिचलाने एवं उल्टी को रोकने में प्रभावशाली है और इसी कारण लम्बी यात्रा से पाचन की गड़बड़ी को दूर करती है। अपाचन, वायु, दस्त, पेचिश, गैस, पेट फूलना, मितली, क़ै एवं ऐंठन से छुटकारा दिलाने एवं स्मरण शक्ति को बढ़ाने में लोग इसे एक घरेलू चिकित्सा के रूप में प्रयोग करते हैं। यकृत को शक्ति देती है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात पानी के साथ दें।

इकसीर मेदा ख़ास : आमाशय और आंतो के रोगों में उपयोगी औषधि है। अगर भूख कम लगती है, पेट में वायु ज़्यादा पैदा होती है, खाने के बाद पेट बोझल और भारी हो जाता है या खट्टी डकारें आती हैं तो इस औषधि का सेवन कराएं।
सेवन विधि : दो दो टिकियां भोजनोपरांत दोनों समय या आवश्यकतानुसार ताज़े पानी से खिलाएं।

क़ुर्स पोदीना : आमाशय तथा यकृत को शक्ति देती है। पाचन प्रक्रिया को ठीक करती है और भूख बढ़ाती है।
सेवन विधि : दो दो टिकियां प्रातः तथा सायंकाल या भोजनोपरांत दोनों समय पानी से खिलाएं।

क़ुर्स मालती बसंत : आमाशय और अंतडियों को शक्ति प्रदान करती है। उनकी दुर्बलता से जो दस्त आ जाते हैं उन्हें रोकती है।
सेवन विधि : 1 टिकिया माजून संगदाना मुर्ग़ के साथ खिलाएं।

गैसट्रीट सिरप : गैस सम्बन्धी विकारों के लिए प्राकृतिक जड़ी–बूटियों का उत्तम मिश्रण है। आमाशय में अम्ल की अधिकता के कारण पेट की गड़बड़ी, सीने में जलन और अपच में आराम देता है। डकार, अफ़ारा और पेट में कसाव को दूर करता है। मरोड़ व पेट की बार–बार गड़बड़ी में लाभकारी है। प्राकृतिक मिश्रण होने के कारण हर आयु वर्ग के लिए पूर्णतयः सुरक्षित है।
सेवन विधि : 10–10 मिली लीटर भोजनोपरांत दोनो समय तथा आवश्यकतानुसार दें।

गैसट्रीट–SF : इसके वही लाभ हैं जो उपर गैसट्रीट सिरप के लिखे गए हैं लेकिन यह शुगर–फ्री है।
सेवन विधि : 10–10 मिली लीटर भोजनोपरांत दोनो समय तथा आवश्यकतानुसार दें।

गैस–टैब : आमाशय और आंतों को शक्ति देती है। वायु को निकालती है, पेट के भारीपन तथा खट्टी डकारों, छाती की जलन, मतली तथा क़ब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : दो दो टिकियां भोजनोपरांत दोनों समय या आवश्यकतानुसार पानी से खिलाएं।

जवारिश अनारैन : पित्त की अधिकता को कम करती है। पित्त के कारण आने वाले दस्तों को रोकती है। गर्म स्वभाव वालों के आमाशय को पुष्टि प्रदान करती है व भूख लगाती है। पीलिया की अवस्था में लाभकर है। मतली और क़ै को रोकती है। अम्लपित्त को दूर करती है। इसके सेवन से शरीर में चुस्ती और प्रफुल्लता आती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या आवश्यकतानुसार पानी से खिलाएं।

जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्रवा कलां : गुर्दे, मूत्राशय, यकृत, आमाशय और मस्तिष्क की शक्ति हेतु उपयोगी है। कमर और रीढ़ को सशक्त करती है। पेशाब की अधिकता, सिर दर्द, कफ़, खांसी और जोड़ों की सूजन के लिए उपयोगी है। उदर वायु को घुलाती है तथा बालों के कालेपन को बनाए रखती है। वीर्य उत्पन्न करती है और पुरूषत्व को बढ़ाती हैं।
सेवन विधि : यकृत, आमाशय और मस्तिष्क को सशक्त करने हेतु 5 ग्राम में कुर्स कुश्ता फ़ौलाद की एक टिकिया या 30 मिलीग्राम कुश्ता मिलाकर प्रातः और सायंकाल खिलाएं। गुर्दे और मूत्राशय की शक्ति, कफ़, खांसी और जोड़ों की सूजन के लिए 5 ग्राम में कुर्स कुश्ता ज़र्मुरुद की एक टिकिया या 30 मिलीग्राम कुश्ता मिलाकर प्रातः और सायंकाल खिलाएं।

जवारिश ज़रऊनी सादा : गुर्दे, आमाशय, अंतड़ियों और मूत्राशय को शक्ति देती है। साथ ही यकृत की पौष्टिकता में भी सहायक है। पाचन प्रक्रिया को ठीक करती है। अधिक पेशाब आने को रोकती है। वीर्य उत्पत्ति में वृद्धि करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल पानी से खिलाएं।

जवारिश जालीनूस : यूनानी प्रणाली की मशहूर औषधि है। आमाशय, यकृत, आंतो तथा मूत्राशय को शक्ति प्रदान करती है। भोजन को पचाती है। उदर वायु को घुलाती है। अम्लपित्त और अम्लशूल

को दूर करती है। मूत्र की अधिकता को रोकती है। मुंह की दुर्गंध को दूर करती है। कफ़, खांसी और बवासीर में भी उपयोगी है। गुर्दे और मूत्राशय में बार बार पथरी पैदा हो जाने की अवस्था में इसके सेवन से पथरी की उत्पत्ति की प्रक्रिया रूक जाती है। बालों को समय पूर्व सफ़ेद होने से बचाती है।

सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम भोजनोपरांत ताज़े पानी के साथ खिलाएं।

जवारिश तबाशीर : आमाशय को शक्ति देती है। ज्वर को रोकती है। सिर दर्द, मतली, क़ै और गर्मी जनित दस्तों में उपयोगी है।

सेवन विधि : भोजनोपरांत 5–5 ग्राम पानी से खिलाएं।

जवारिश तमर हिंदी : पित्त की तेज़ी को तोड़ने के लिए अचूक औषधि है। गर्म स्वभाव वालों के आमाशय और यकृत को शक्ति और हृदय को प्रफुल्लता प्रदान करती है। भूख लगाती है, मतली और क़ै को रोकती है। गर्मी और हैज़े के दिनों में इसका उपयोग बहुत लाभकर है।

सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक भोजनोपरांत दोनों समय पानी से खिलाएं।

जवारिश पोदीना : आमाशय तथा यकृत को शक्ति देती है। मतली, क़ै और हिचकी को रोकती है। भूख लगाती है।

सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः तथा सायंकाल खिलाएं।

जवारिश पोदीना विलायती : आमाशय तथा यकृत को शक्ति देती है। मतली, क़ै और हिचकी को रोकती है। भूख लगाती है।

सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः तथा सायंकाल खिलाएं।

जवारिश मेदा : आमाशय, यकृत और अंतड़ियों की समस्त शक्तियों को सुरक्षित रखती है। आमाशय को सशक्त करती है तथा भोजन को पचाती है। भोजन को शरीर का तत्व बनाकर स्वच्छ रक्त का संचार करती है। अंतड़ियों की प्रक्रिया को सामान्य करके स्थायी क़ब्ज़ दूर करती है।

सेवन विधि : 5–5 ग्राम भोजन के बाद दोनो समय पानी से खिलाएं।

त्रिकटु कैप्सूल : यह अफ़ारा के साथ ख़राब आमाशय प्रणाली को प्राकृतिक व सुरक्षित तरीके से ठीक करती हैं। यह वज़न घटाती हैं तथा भोजन की लालसा को कम करती हैं। यह दमा, अपच, डकारें आना, कब्ज़, दुष्पचन, आंतों की सूजन में लाभदायक हैं।

सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात सेवन कराएं।

देहल्वी गैलीनूस पिल्ज़ : ग्रीस वासी प्रसिद्ध चिकित्सक क्लाडियस गेलिनूस, जिन्हें लोग गालेन भी कहते हैं और यूनानी पद्यति में हकीम जालीनूस के रूप में पहचानते हैं, द्वारा विकसित जवारिश जालीनूस का आधुनिक रूप है और गोली की शक्ल में प्रस्तुत किया गया है। दो गोलियां 5 ग्राम जवारिश के बराबर हैं। जवारिश जालीनूस की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़ में केवल शकर नहीं है ताकि मधुमेह के रोगी भी इसे प्रयोग कर सकें। निस्संदेह यह आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। आमाशय, यकृत, आंतो तथा मूत्राशय को शक्ति प्रदान करती है। भोजन को पचाती है, उदर वायु को समाप्त करती और अम्लपित्त और अम्लशूल को दूर करती है। मूत्र की अधिकता को रोकती है। मुंह की दुर्गंध को दूर करती है। कफ़, खांसी और बवासीर में भी उपयोगी है। गुर्दे और मूत्राशय में बार–बार पथरी पैदा हो ने को रोकती है। बालों को समय पूर्व सफ़ेद होने से बचाती है।

सेवन विधि : 1 या 2 गोली भोजनोपरांत ताज़े पानी के साथ खिलाएं।

देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई जवारिश ज़रऊनी सादा का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। जवारिश ज़रऊनी सादा की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। आमाशय, यकृत और अंतड़ियों की समस्त शक्तियों को सुरक्षित रखती है। आमाशय को सशक्त करती है तथा भोजन को पचाती है। भोजन को शरीर का तत्व बनाकर स्वच्छ रक्त का संचार करती है। अंतड़ियों की प्रक्रिया को सामान्य करके स्थायी क़ब्ज़ दूर करती है।

सेवन विधि : भोजन के बाद प्रातः और सायंकाल 1 या 2 कैप्सूल पानी से खिलाएं।

नैचुरो–ज़ाईम : एक उत्तम पाचन सहायक है जिसमें खाद्य पाचन एंज़ाइम पूर्ण रूप से हैं। कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा को तोड़ने में ये मूल्यवान एंज़ाइम मदद करते हैं जैसे स्टार्च, सेल्यूलोज़, लैक्टोज़ और अन्य शर्करा। खाना पकाने और प्रसंस्करण के दौरान खाद्य पदार्थों से खोए एंज़ाइमों को फिर से भरने का नैचुरो–ज़ाईम कैप्सूल एक शानदार प्राकृतिक तरीका है।

सेवन विधि : एक या दो कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के बाद सेवन कराएं।

नोशदारू : आमाशय और अंतडियों को शक्ति

प्रदान करती है। उनकी दुर्बलता से जो दस्त आ जाते हैं उन्हें रोकती है। पाचन तंत्र को सुचारू करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम निहार मुंह पानी मे सेवन कराएं।

माजून नानख़ाह : आमाशय को सशक्त करती है। भूख लगाती है तथा भोजन को पचाती है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

माजून मुक़्वी मेदा : आमाशय के पुट्ठों को शक्ति देती है, पाचन शक्ति की क्रिया को ठीक करके भूख ख़ूब लगाती है। क़ब्ज़ को दूर करती है और यकृत को शक्ति देती है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम भोजन के बाद दोनो समय पानी से खिलाएं।

सफ़ूफ़ नमक सुलेमानी : आमाशय और अंतडियों को शक्ति प्रदान करता है। भोजन को पचाता है तथा भूख लगाता है। इसके सेवन से पेट का दर्द, अफारा और तबीयत का भारीपन जाता रहता है। उदर वायु को निकालता है। यकृत को सशक्त करता है।
सेवन विधि : 1 ग्राम से 3 ग्राम तक खाना खाने के बाद दोनों समय पानी से खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त वर्णित औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ पोदीना, अर्क़ नाना, कुश्ता ख़बसुल हदीद, कुश्ता फ़ौलाद, जवारिश आमला सादा, जवारिश ऊद तुर्श, जवारिश ऊद शीरीं, जवारिश कमूनी, जवारिश ज़ंजबील, जवारिश मस्तगी, देहल्वी कमून कैप्सूल, मस्तगी कैप्सूल, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, रियाहीन चूर्ण, सेब सिरका, शर्बत हब्बुल आस और हाज़मीन का सेवन भी आमाशय की दुर्बलता में उपयोगी है।

आमाशय पीड़ा (Gastralgia)

जवारिश कमूनी : पेट के दर्द तथा पाचन विकार, वायु की अधिकता और अफारे को दूर करती है। आमाशय के लिए शक्तिदायक है। भूख लगाती है तथा खट्टी डकारों और हिचकी आने को रोकती है। क़ब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 5 से 10 ग्राम तक ताज़े पानी से खिलाएं।

जवारिश कमूनी कबीर : पेट दर्द तथा उदर शूल में उपयोगी है। वायु पीड़ा तथा पाचन विकार को दूर करती है। क़ब्ज़ में उपयोगी है।
सेवन विधि : भोजन के बाद 5 ग्राम पानी से खिलाएं।

देहल्वी कमून कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई जवारिश कमूनी का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। जवारिश कमूनी की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी कमून कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। पेट के दर्द तथा पाचन विकार, वायु की अधिकता और अफारे को दूर करती है। आमाशय के लिए शक्तिदायक है। भूख लगाती है तथा खट्टी डकारों और हिचकी आने को रोकती है। क़ब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : भोजन के बाद 1 या 2 कैप्सूल पानी से खिलाएं।

सफ़ूफ़उल इमलाह : पेट की वायु पीड़ा तथा उदर शूल में उपयोगी है। भोजन को पचाती है तथा भूख लगाती है।
सेवन विधि : 250 से 500 मिली ग्राम तक भोजनोपरांत 10 ग्राम जवारिश कमूनी में मिलाकर खिलाएं।

हब्बे पपीता : पाचन क्रिया को सुचारू करती है, वायु को घुलाती है और क़ब्ज़ को दूर करती है। पेट के दर्द में उपयोगी है। हैज़े के दिनों में अगर यह सावधानी स्वरूप सेवन कराई जाए तो संक्रामक रोगों से रक्षा करती है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 2–2 गोलियां पानी से खिलाएं।

हब्बे हलतीत : आमाशय और अंतड़ियों की पीड़ा को दूर करती है। वायु को निकालती है। भोजन को पचाती है और खुलकर भूख लगाती है।
सेवन विधि : 1 या 2 गोलियां भोजन के एक घंटे बाद या आवश्यकतानुसार खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त वर्णित औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अजवाएन, अर्क़ बादियान, अदरक कैप्सूल, गैसट्रीट सिरप, गैसट्रीट–SF, गैस–टैब, जामुन सिरका, जवारिश कमूनी मुसहिल, जवारिश जालीनूस, जवारिश बिसबासा, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, माजून नानख़ाह, पोदीनोल, रियाहीन चूर्ण, सफ़ूफ़ नमक सुलेमानी, हाज़मीन और हब्बे कबिद नौशादरी भी आमाशय पीड़ा में उपयोगी हैं।

अपाचन और अफारा (Dyspepsia and Flatulence)

जवारिश ज़ंजबील : आमाशय को शक्ति प्रदान करती है। भोजन को पचाती और भूख लगाती है।

वायु को निकालती है। मतली में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 5–5 ग्राम पानी के साथ खिलाएं।

जवारिश बिसबासा : भोजन को पचाती है। भूख लगाती है तथा आमाशय के कफ़ द्रव्यों को सुखाती और पेट को बढ़ने से रोकती है। बादीपन और बवासीर की वायु को लाभ पहुंचाती है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 5–5 ग्राम पानी के साथ खिलाएं।

रियाहीन चूर्ण : आमाशय को शक्ति प्रदान करता है। भोजन को पचाता है और भूख लगाता है। पेट के दर्द, अफारा और छाती की जलन को दूर करता है। वायु को निकालता है और स्थायी क़ब्ज़ को दूर करता है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 5–5 ग्राम पानी के साथ खिलाएं। क़ब्ज़ को दूर करने के लिए रात को सोते समय 10 ग्राम पानी के साथ खिलाएं।

हब्बे तिन्कार : आमाशय के भारीपन और दुर्बलता को दूर करती है। भूख लगाती और वायु को उदर से बाहर निकालती है। स्थायी क़ब्ज़ को दूर करती है। पेट को बढ़ने से रोकती है।
सेवन विधि : 2 से 4 गोलियां रात को सोते समय या खाने के बाद दोनों समय पानी के साथ खिलाएं।

हाज़मीन : भूख कम लगती हो, खट्टी डकारें आती हों, पेट में हवा अधिक बनती हो, खाना ठीक प्रकार न पचता हो तो इस औषधि के सेवन से यथोचित लाभ हो जाता है।
सेवन विधि : 2–2 टिकियां भोजनोपरांत दोनों समय खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अजवाएन, अर्क़ ज़ीरा, अर्क़ नाना, अर्क़ पोदीना, अर्क़ बादियान, इकसीर मेदा ख़ास, एलो–वेरा कैप्सूल, एलो–वेरा जूस, कुर्स अलकलीन, गैसट्रीट सिरप, गैसट्रीट–SF, गैस–टैब, त्रिकाटु कैप्सूल, त्रिफ़ला कैप्सूल, जामन सिरका, जवारिश कमूनी, जवारिश कमूनी कबीर, जवारिश जालीनूस, जवारिश ज़रऊनी सादा, जवारिश मेदा, देहल्वी कमून कैप्सूल, दहेल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, नैचुरो–ज़ाईम, नौरस, पोदीनोल, माजून नानख़ाह, सफ़ूफ़ नमक सुलेमानी, हब्बे पपीता और हब्बे हलतीत भी पाचन हीनता और अफ़ारे में उपयोगी हैं।

हिचकी
(Hiccups)

इकसीर मेदा ख़ास, जवारिश कमूनी, जवारिश पोदीना, जवारिश पोदीना विलायती, जवारिश मस्तगी, देहल्वी कमून कैप्सूल, मस्तगी कैप्सूल, माजून नानख़ाह, हाज़मीन और हब्बे हलतीत हिचकियों के रोग में उपयोगी हैं।

मतली व क़ै
(Nausea and Vomiting)

अर्क़ नाना : आमाशय को शक्ति देता है। पाचन क्रिया को सुचारु करता है। मतली और क़ै को बंद करता है।
सेवन विधि : 30 से 60 मिली लीटर भोजन के पश्चात दोनों समय पिलाएं।

अर्क़ पोदीना : मतली और क़ै को रोकता है। अपाचन के दस्त व क़ै और हैज़े में उपयोगी है। आमाशय को शक्ति देता है। भोजन को पचाता है और भूख लगाता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर सिकंजवीन लीमूनी 25 मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

जवारिश ऊद तुर्श : आमाशय को शक्ति प्रदान करती है। आमाशय अम्लपित्त की कमी को दूर करती है। भूख बढ़ाती है। गर्म स्वभाव वालों के लिए लाभकर है। पीलिया में भी उपयोग की जा सकती है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 5–5 ग्राम पानी के साथ खिलाएं। भोजन में दही, खिचड़ी या चावल दें।

जवारिश ऊद शीरीं : आमाशय को शक्ति देती है। भूख लगाती है और भोजन को पचाती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल अनाहर पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अदरक कैप्सूल, त्रिकाटु कैप्सूल, जामुन सिरका, जवारिश अनारैन, जवारिश तमरहिंदी, जवारिश पोदीना, जवारिश पोदीना विलायती, पोदीनोल, रियाहीन चूर्ण और हाज़मीन भी मतली और क़ै की अवस्था में उपयोगी है।

भूख की कमी
(Anorexia)

अर्क़ अजवाएन, अर्क़ पोदीना, अर्क़ माउल्लहम ख़ास, अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा, अदरक कैप्सूल, एनर्जाईन, कुश्ता तिला, गैसट्रीट सिरप,

गैसट्रीट–SF, गैस–टैब, जवारिश अनारैन, जवारिश कमूनी, जवारिश ज़ंजबील, जवारिश जालीनूस, जवारिश ऊद तुर्श, जवारिश ऊद शीरीं, देहल्वी कमून कैप्सूल, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक, माजून नानख़ाह, रियाहीन चूर्ण, शर्बत फ़ौलाद, हाज़मीन, हब्बे सलाजीत तथा आमाशय की पीड़ा में प्रयुक्त जो भी औषधियां हैं, सब भूख लगाती है।

अम्लपित्त वृद्धि (Acidity)

क़ुर्स अलकलीन : भोजन के ठीक प्रकार न पचने के कारण खट्टी डकारें आती हों और आमाशय, गले और छाती में जलन का अनुभव हो तो यह क़ुर्स लाभकारी हैं।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 2–2 टिकिया दोनों समय या आवश्यकतानुसार पानी से खिलाएं।

नोट : इसके अतिरिक्त इकसीर मेदा ख़ास, गैसट्रीट सिरप, गैसट्रीट–SF, गैस–टैब, जामुन सिरका और सेब सिरका भी अम्लपित्त वृद्धि में उपयोगी हैं।

हैज़ा (Cholera)

पोदीनोल : हैज़े के आरंभ में क़ै और दस्तों को रोकती है। आमाशय की दुर्बलता समाप्त करती है। बड़े स्तर पर हैज़ा फैल गया हो तो मिन्टौल सावधानी स्वरूप पिलाई जा सकती है।
सेवन विधि : 3 बूंदे अर्क़ पोदीना में मिलाकर हर आधे घंटे बाद पिलाते रहें जब तक क़ै व दस्त रूक न जाएं।

नोट : अर्क़ पोदीना और हब्बे पपीता भी हैज़े में उपयोगी है।

ख़ून की क़ै (Hematemesis)

क़ुर्स कहरूबा : रक्त के पतलेपन को रोकती है। ख़ून की क़ै को रोकती है और फ़ेफ़ड़ों से ख़ून आने और नकसीर में उपयोगी है।
सेवन विधि : 2 टिकियां 25 मिली लीटर शर्बत अंजबार के साथ सेवन कराएं।

नोट : क़ुर्स बंदिश ख़ून भी ख़ून की क़ै में उपयोगी है।

आमाशय की गर्मी (Stomach Heat)

जवारिश आमला सादा, जवारिश जालीनूस, जवारिश तबाशीर, जवारिश शाही, दहेल्वी गेलीनूस पिल्ज़, नोशदारू और माजून मुक़व्वी मेदा आमाशय की गर्मी को रोकती हैं।

प्यास की अधिकता (Polydipsia)

अर्क़ अजवाएन, अर्क़ कासनी, अर्क़ गावज़बां, अर्क़ गुलाब, अर्क़ बादियान, रूह अर्क़ केवड़ा, रूह अर्क़ गुलाब, शर्बत अंगूर शीरीं, शर्बत अनार शीरीं, शर्बत केवड़ा और शर्बत नीलोफ़र प्यास की अधिकता को दूर करते हैं।

अपाचन के दस्त और क़ै (Diarrhoea and Vomiting due to Indigestion)

अपाचन के क़ै व दस्तों को रोकना हानिकारक है। उन्हें आने दें बल्कि उन्हें सहायक औषधियों के द्वारा आने दें। इसके लिए इतरीफ़ल मुलय्यन या जवारिश कमूनी मुसहिल 10 ग्राम, अर्क़ पोदीना 125 मिली लीटर तथा पोदीनोल की 2–3 बूंदे मिलाकर पिलाएं। जब दस्त और क़ै आकर अंतड़ियां साफ़ हो जाएं तो आमाशय की पौष्टिकता के लिए आमाशय की दुर्बलता के अंतर्गत प्रस्तावित औषधियों का सेवन कराएं।

यकृत तथा पित्ते के रोग (Diseases of the Liver and Gall Bladder)

यकृत की सूजन और कठोरता (Hepatitis and Cirrhosis of the Liver)

अर्क़ अफसनतीन : यकृत और आमाशय की सूजन तथा गर्भाशय की सूजन में उपयोगी है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत कासनी 25 मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

अर्क़ अरबा : यकृत और आमाशय की सूजन तथा गर्भाशय की सूजन में उपयोगी है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत कासनी 25

मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

अर्क़ कासनी : यकृत की सूजन और उसकी कठोरता में उपयोगी है। यकृत की गर्मी को दूर करता है। प्यास को बुझाता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत कासनी 25 मिली लीटर में मिलाकर हल्का गर्म पिलाएं।

अर्क़ मकोह : यकृत, आमाशय और गर्भाशय की सूजन को घुलाता है। गर्मी को शांत करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत कासनी 25 मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

अर्क़ माउल्लहम मकोह कासनी वाला : यकृत तथा आमाशय को शक्ति देता है तथा शोथ को घुलाता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत कासनी 25 मिली लीटर को में मिला कर पिलाएं।

इकसीर जिगर : यकृत विकार के लिए उपयोगी है और ऐसे ज्वरों को भी दूर कर देती है जिसके कारण यकृत विकारों का जन्म होता है।
सेवन विधि : 1–1 टिकिया भोजनोपरांत दोनों समय ताज़ा पानी से खिलाएं। बच्चों को आधी टिकिया दें।

जिगरॉन कैप्सूल व सिरप : ऐसी जड़ी बूटियों से बनाए गए हैं जो यकृत को क्रियाशील करके रोगक्षय कोशिकाओं में शक्ति व सन्तुलन बढ़ाती हैं। यह यकृत की सूजन को सामान्य करते हैं, यकृत शोथ और प्यास में उपयोगी हैं। यकृत के अलावा आमाशय और गर्भाशय की सूजन, पीलिया और भूख की कमी में इनका उपयोग अचूक हैं। इनका दैनिक उपयोग मदिरापान के कारण हुए यकृत विकारों को दूर करता है। यह भूख में वृद्धि करते हैं।
सेवन विधि : कैप्सूल : 2–2 कैप्सूल प्रातः और सायंकाल पानी से दें।
सिरप : 10 मिली लीटर प्रातः और सायंकाल पानी में मिलाकर पिलाएं।

जिगरॉन–SF: इसके वही लाभ हैं जो उपर जिगरॉन सिरप के लिखे गए हैं लेकिन यह शुगर–फ्री है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रातः और सायंकाल पानी में मिलाकर पिलाएं।

जिगरॉन टैबलेट्स : मदिरापान और अत्याधिक रासायनिक औषधियां यकृत को हानि पहुंचाती हैं। यकृत विकार के कारण शरीर में ढीलापन और हर चीज़ से विरक्ति आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। जिगरॉन टैबलेट्स ऐसे समस्त लक्षणों में उपयोगी है। यह यकृत की सूजन को सामान्य करता है, यकृत शोथ और प्यास में उपयोगी है। यकृत के अलावा आमाशय और गर्भाशय की सूजन, पीलिया और भूख की कमी में इसका उपयोग अचूक है। इसका दैनिक उपयोग मदिरापान के कारण हुए यकृत विकारों को दूर करता है। यह भूख में वृद्धि करता है।
सेवन विधि : 1–2 टिकिया प्रातः और सायंकाल पानी से दें।

देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल : सदियों के आज़माए हुए माजून दबीदुल वर्द का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून दबीदुल वर्द की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यकृत की सूजन को घुलाती है। यकृत चढ़ जाने, यकृत शोथ तथा प्यास में उपयोगी है। गर्भाशय की सूजन, पीलिया और भूख की कमी में इसका अचूक उपयोग है। इसका दैनिक उपयोग मदिरापान के कारण हुए यकृत विकारों को दूर करता है। इससे भूख में वृद्धि होती है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल अर्क़ मकोह 60 मिली लीटर या पानी से खिलाएं।

मकोह कासनी रसः यकृत, वृक्क एवं प्लीहा विकारों में लाभकारी, हेपेटायटिस A, B, C वं पीलिया में लाभदायक, यकृत को विकार मुक्त रखने में सहायक, पित्त की अधिकता और यकृत के बढ़ने में लाभकारी और मूत्र नलिका को स्वच्छ रखने में सहायक है।
सेवन विधिः 10 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 10–15 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

मकोह कैप्सूल : यकृत और तिल्ली की सूजन में उपयोगी है। यकृत कठोरता, यकृत का बढ़ जाना, पीलिया, यकृत की दुष्क्रिया, जलोदर और तिल्ली का बढ़ जाना में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

माजून दबीदुल वर्द : यकृत की सूजन को घुलाती है। यकृत चढ़ जाने, यकृत शोथ तथा प्यास में उपयोगी है। गर्भाशय की सूजन, पीलिया और भूख की कमी में इसका अचूक उपयोग है। इसका दैनिक उपयोग मदिरापान के कारण हुए यकृत विकारों को दूर करता है। इससे भूख में वृद्धि होती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम अर्क़ मकोह 60 मिली लीटर

या पानी के साथ सेवन कराएं।

मुलेठी कैप्सूल : यकृत की सूजन और यकृत की कठोरता में प्रभावी है। दमा, ब्रोन्काइटिस, नज़ला ज़ुकाम, खांसी, गला बैठ जाना, गले में ख़राश, बलग़म व ज्वर में लाभदायक है। यह खांसी पर नियन्त्रण करने के लिए कोडीन की तरह प्रबल लेकिन उससे अधिक सुरक्षित है। प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहने को दूर करता है। मानसिक अवसाद में भी अति लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

शर्बत अरबा : यकृत और आमाशय की सूजन तथा गर्भाशय की सूजन में उपयोगी है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत कासनी : यकृत की सूजन और उसकी कठोरता में उपयोगी है। यकृत की गर्मी को दूर करता है। प्यास को बुझाता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत दीनार : यकृत की सूजन, यकृत पीड़ा, प्यास तथा पसलियों के दर्द में उपयोगी है। कब्ज़ को दूर करता है। पेशाब खुल कर लाता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक अर्क़ बादियान 125 मिली लीटर या पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत बज़ूरी हार : यकृत, गुर्दों तथा आमाशय के रोगों में लाभदायक है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक 125 मिली लीटर अर्क़ बादियान या पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत मुहल्लिल : यकृत की सूजन और उसकी कठोरता में उपयोगी है। यकृत की गर्मी को दूर करता है। प्यास को बुझाता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर पिलाएं।

हब्बे कबिद नौशादरी : यकृत की कठोरता और यकृत के बढ़ जाने के रोग में लाभकर है। भोजन को पचाती है। भूख लगाती है। पेट के भारीपन, अफारे और अपाचन के लिए लाभकर है। वायु को निकालती हैं। क़ब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : भोजनोपरांत 2–2 गोलियां पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ ब्रंजासिफ, एलो–वेरा कैप्सूल, एलो–वेरा रस, शिलाजीत केयर और शिलाजीत कैप्सूल भी यकृत की सूजन और उसकी कठोरता में उपयोगी हैं।

यकृत की दुर्बलता (Weakness of the Liver)

कासनी कैप्सूल : तिल्ली का बढ़ जाना, ज्वर, गैस, मुत्राशय की पत्थरी, यकृत की सूजन, यकृत का बढ़ जाना, पीलिया, वृक्क का विकार, वृक्क एवं मूत्राशाय के विकार, तिल्ली की सूजन एवं मूत्र नलियों के रोग में लाभकर है।
सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

नोट इसके अतिरिक्त अर्क़ अरबाह, एलोवेरा कैप्सूल, एलो–वेरा रस, कुश्ता ख़बसुल हदीद, कुश्ता ज़मर्रूद, कुश्ता तिला, कुश्ता नुक़रा, कुश्ता फ़ौलाद, ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला, गिलो आमला रस, जवारिश अनारैन, जवारिश जालीनूस, जवारिश मस्तगी, जिगरॉन कैप्सूल व सिरप, जिगरॉन–SF, जिगरॉन टैबलेट्स, दवाउलमिस्क मोतदिल, दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली, देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल, देहल्वी डी. एम. एम. जवाहरी कैप्सूल, देहल्वी सेहाटोन, पुनर्नवा कैप्सूल, नोशदारू, मकोह कासनी रस, मस्तगी कैप्सूल, माजून दबीदुल वर्द, मूसली केसर कैप्सूल, मूसली केसर प्राश, शर्बत अरबाह, शर्बत अंजीर, शर्बत फ़ौलाद और हब्बे ख़ास यकृत की क्षीणता में उपयोगी है।

यकृत की गर्मी (Bilious Liver)

कुलिया बज़ूरी–SF : एक विशेष शकर रहित उत्पाद है जो गुर्दो और यकृत को सामान्य रूप से कार्य करने में सहायक है ताकि यह महत्वपूर्ण अंग अपना काम स्वभाविक और प्राकृतिक ढंग से करते रहें। यह दूषित रक्त को साफ करती है और यकृत को शरीर से बेकार विषाक्त पदार्थों को बाहर करने में मदद करती है जो नशीले पदार्थ, जीवाणू, कीटाणु, खाने में मिलाए जाने वाले कृत्रिम पदार्थ, रसायन, वसा, अल्कोहल आदि। यह यकृत गुर्दो और मूत्राशय के पित्तीय असर को अधिक मात्रा में मूत्र द्वारा शरीर से बाहर करती है और पीलिया की गर्मी के कारण बुखार को कम करती है। यह पीलिया में बहुत लाभकारी है। पथरी बनने

से रोकती है और मूत्राशय व गुर्दो की पथरी को घुला कर बाहर करने में सहायक है। यह मूत्रल (diuretic) के रूप में काम करती है और मूत्र के pH को सामान्य कर मूत्र की जलन समाप्त करती है। मूत्राश्य की जलन और सूजन को दूर करती है। मूत्र नलिका के संक्रमण में भी लाभकारी है।
सेवन विधि : 10 मि.ली. प्रतिदिन सुबह–शाम।

शर्बत बज़ूरी बारिद : यकृत की गर्मी को दूर करता है। पेशाब खुलकर लाता है। पैशाब की जलन को दूर करता है। यकृत, गुर्दे व मूत्राशय के रोगों में प्रायः लाभ पहुचाता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक ठंडे पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत बज़ूरी मोतदिल : यकृत, गुर्दे और मुत्राशय के द्रव्यों को मूत्र द्वारा बाहर निकालता है। पेशाब खुलकर लाता है। यकृत की गर्मी से ज्वर रहता हो तो वह भी दूर हो जाता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अरबा, अर्क़ कासनी, अर्क़ मकोह, जवारिश अनारैन, जवारिश आमला सादा, मकोह कासनी रस, शर्बत अरबा, शर्बत कासनी, शर्बत मुहल्लिल और शर्बत संदल भी यकृत की गर्मी को दूर करने में उपयोगी हैं।

यकृत की ठंड
(Sluggish Liver)

कासनी कैप्सूल, जवारिश जालीनूस, जवारिश बिसबासा, जवारिश मस्तगी, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, मकोह कासनी रस और मस्तगी कैप्सूल यकृत की ठंड को दूर करने के लिए उपयोगी औषधियां हैं।

पित्ते की सूजन व पथरी
(Cholecystitis and Gall Bladder Stone)

कुश्ता हजरूल यहूद : गुर्दे, मूत्राशय तथा पित्ते की पथरी को तोड़कर बाहर निकालता है।
सेवन विधि : 30 से 60 मिलीग्राम या एक से दो टिकियां 5 ग्राम माजून संगसरे माही में रखकर खिलाएं।

माजून हजरूल यहूद : गुर्दे, मूत्राशय व पित्ते की पथरी को तोड़कर बाहर निकालती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः और सायंकाल पानी से या एक टिकिया इकसीर गुर्दा के साथ खिलाएं।

रोग़न ज़ैतून : पित्ते की पथरी इसके नियमित प्रयोग से घुल कर निकल जाती है। स्थायी क़ब्ज़ को दूर करता है। शरीर में शक्ति व चुस्ती पैदा करता है। स्नायुओं के लिए शक्तिदायक है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर रात को सोते समय 250 मिली लीटर दूध में मिलाकर पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त हब्बे सलाजीत भी पित्ते की सूजन व पथरी की शिकायत दूर करने के लिए लाभकर है।

जलंधर (प्यास)
(Ascites)

इकसीर जिगर, कुश्ता ख़बसुल हदीद, जिगरॉन कैप्सूल व सिरप, जिगरॉन–SF, जिगरॉन टैबलेट्स, देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल, माजून दबीदुल वर्द, शर्बत दीनार, शर्बत फ़ौलाद और हब्बे सलाजीत जलंधर के लिए उपयोगी औषधियां हैं।

तिल्ली के रोग
(Diseases of the Spleen)

तिल्ली का बढ़ जाना
(Splentitis)

जिगरॉन कैप्सूल व सिरप, जिगरॉन–SF, जिगरॉन टैबलेट्स, देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल, मकोह कैप्सूल, मकोह कासनी रस, माजून दबीदुल वर्द, शर्बत अंजीर और हब्बे सलाजीत तिल्ली बढ़ जाने की अवस्था में उपयोगी हैं।

पीलिया
(Jaundice)

कासनी कैप्सूल, कुलिया बज़ूरी–SF, गिलो आमला रस, गिलो कैप्सूल, जवारिश अनारैन, जवारिश ऊद तुर्श, जिगरॉन कैप्सूल व सिरप, जिगरॉन–SF, जिगरॉन टैबलेट्स, देहल्वी डी. वर्द कैप्सूल, माजून दबीदुल वर्द, मकोह कासनी रस, शर्बत कासनी, शर्बत बज़ूरी मोतदिल, शर्बत मुहल्लिल, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और हब्बे सलाजीत पीलिया रोग में लाभकर औषधियां हैं।

रक्त का ह्रास
(Anaemia)

कुश्ता ख़बसुल हदीद : यकृत और आमाशय के

लिए शक्तिदायक औषधि है। आमाशय के दूषित द्रव्यों को निकाल बाहर करता है जिससे शरीर में स्वच्छ, विशुद्ध रक्त उत्पन्न होता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां 5 ग्राम जवारिश जालीनूस या 1 या 2 गोली देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़ के साथ खिलाएं।

नोट : इस औषधि के अतिरिक्त कुश्ता तिला, कुश्ता फ़ौलाद, नोशदारू, स्पिरूलीना कैप्सूल, शर्बत फ़ौलाद, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और हब्बे सलाजीत भी रक्तहीनता में उपयोगी औषधियां हैं।

मोटापा
(Obesity)

अर्क़ ज़ीरा : वायु को निकालता है तथा मोटापा दूर करता है।
सेवन विधि : 75 मिली लीटर प्रातः और सायंकाल सेवन कराएं। अगर इसके साथ ओबेलीन या सफ़ूफ़ मुहज़्ज़िल खिलाई जाए तो जल्दी असर होगा।

ओबेलीन : ओबेलीन जड़ी बूटियों द्वारा बनाई गई एक ऐसी औषधि है जो बिना किसी दुष्प्रभाव के मोटापे को कम करती है यह अनेक प्रकार के शरीर के भार कम करने की तकनीकों से संबधित है। यह भूख को नियमित करने में सहायक है तथा संतुष्टि का अहसास दिलाती है जिससे खाने की इच्छा नियमित हो जाती है। यह धीरे– धीरे चर्बी को घुलाती है। यह उन औषधियों से बहतर है जो बिना किसी प्रयास के वज़न तुरंत कम कर देती हैं, वे वास्तव में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। यह कैप्सूल और टैबलेट्स दोनों में उपलब्ध है।
सेवन विधि : दो–दो कैप्सूल या पिल्ज़ दिन में दो बार भोजन से 30 मिनट पूर्व एक गिलास पानी या अर्क़ ज़ीरा के साथ दें। चावल, आलू, मक्खन, मलाई और मिठाई के सेवन से बचाएं।

विलायती इमली कैप्सूल : मोटापा, चर्बीलापन और अतिरिक्त वसा को जलाने के लिए प्रभावी रूप से प्रयुक्त और कोलेस्ट्रोल का ऊंचा एल.डी.एल. स्तर रखने में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात पानी के साथ दें।

सफ़ूफ़ मुहज़्ज़िल : मोटे लोगों के लिए उपयोगी औषधि है। मोटापे और भारीपन को कम करके शरीर को सुडौल और हल्का करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः और सायंकाल हल्के गर्म पानी या 75 मिली लीटर अर्क़ ज़ीरा से सेवन कराएं। चावल, आलू, मक्खन, मलाई और मिठाई के सेवन से बचाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अर्बियन नुस्ख़ा, गुग्गुल कैप्सूल, त्रिकटु कैप्सूल, जवारिश कमूनी, जवारिश कमूनी मुसहिल, जवारिश बिसबासा, देहल्वी इसबग़ोल, देहल्वी कमून कैप्सूल, वीटग्रास कैप्सूल व रस और सेब सिरका भी मोटापे को दूर करते हैं।

सेलुलाईट
(Cellulite)

सेलुलाईट कंट्रोल आयल : अत्यन्त प्रभावी रोग नाशक गुणों वाले तेलों से बना सेलुलाईट कंट्रोल आयल शरीर में सेलुलाईट और चर्बी वाले स्थानों पर रक्त प्रवाह को बढ़ाता है तथा एसे उतकों में चयापचय प्रक्रिया को तेज करता है अतः बाहों, जांघों, कूल्हों तथा पेट के लद्ध्ड़पन को दूर कर सुडौल बनाने में सहायक है।
प्रयोग विधि : रोज़ाना रात को 15-20 मिनट तक प्रभावित क्षेत्र पर गोल–गोल हाथ घुमाकर अच्छी तरह तेल की मालिश करें। फिर गर्म तौलिया से 15 मिनट तक ढका रहने दें और 6–8 घंटों के लिए ऐसे ही रहने दें।

आंत्रिक रोग
(Diseases of the Intestines)
दस्त व पेचिश
(Diarrhoea and Dysentery)

जवारिश मस्तगी : आमाशय, यकृत और अंतडियों को शक्ति देती है। अगर आमाशय और अंतड़ियों की कमज़ोरी से दस्त आ रहे हों तो उनको रोकती है। मुंह से राल बहने और पेशाब के ज़्यादा आने में उपयोगी है। आमाशय और यकृत की ठंड को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातः एवं सायंकाल 125 मिली लीटर अर्क़ बादयान या पानी के साथ सेवन कराएं।

बेल कैप्सूल : अतिसार, पेचिश, कृमि पर्याक्रमण और कोलन के अल्सर में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल दिन में दो बार पानी के साथ दें।

मस्तगी कैप्सूल : आमाशय, यकृत और अंतडियों को शक्ति देती है। अगर आमाशय और अंतड़ियों की कमज़ोरी से दस्त आ रहे हों तो उनको रोकती है। मुंह से राल बहने और पेशाब के ज़्यादा आने में उपयोगी है। आमाशय और यकृत की ठंड को दूर करती है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल प्रातः एवं सायंकाल पानी के साथ दें।

माजून संगदाना मुर्ग़ : आमाशय और अंतड़ियों को शक्ति प्रदान करती है। पाचन हीनता में उपयोगी है। आमाशय और अंतड़ियों की दुर्बलता से आने वाले दस्तों को रोकती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

शर्बत बेलगिरी : अतिसार, पेचिश, कृमि पर्याक्रमण और कोलन के अल्सर में उपयोगी है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

शर्बत हब्बुल आस : आमाशय को शक्ति प्रदान करता है। हर प्रकार के दस्तों को बंद करता है। मरोड़ को शांति देता है। साथ ही दस्तों के साथ ख़ून आने को रोकता है। आमाशय और आंतों को शक्ति देता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर से 50 मिली लीटर तक पानी में मिलाकर सेवन कराएं।

सफ़ूफ़ मुकलियासा : पुराने दस्तों और पेचिश में लाभकर है। दर्द और मरोड़ को दूर करता है। वायु वाली बादी बवासीर में भी उपयोग कराया जा सकता है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं। पेचिश में सफ़ूफ़ फांक कर ऊपर से रेशा ख़तमी 5 ग्राम का लुआब 125 मिली लीटर पानी में निकालकर 25 मिली लीटर शर्बत बनफ़शा में मिलाकर पिलाएं।

हब्बे पेचिश : दस्तों और पेचिश में लाभकर है। स्नायुओं को शक्ति देती है।
सेवन विधि : 1 गोलि पानी से खिलाएं।

हब्बे राल : आमाशय और अंतड़ियों के घावों के लिए उपयोगी है और उनकी कमज़ोरी से आने वाले दस्त रूक जाते हैं।
सेवन विधि : 1–1 टिकिया भोजनोपरांत खिलाएं।

हब्बे सुमाक़ : आमाशय और अंतड़ियों की कमज़ोरी से आने वाले दस्त और पेचिश में लाभकर है।
सेवन विधि : 1–1 गोलि प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ बादियान, क़ुर्स मालती बसंत, जवारिश अनारैन, जवारिश आमला सादा, जवारिश तबाशीर, देहल्वी इसबग़ोल, नोशदारू, शर्बत अंजबार और शर्बत अनार शीरीं का उपयोग भी आमाशय और आंतों की दुर्बलता से आने वाले दस्तों और पेचिश को रोकता है।

क़ब्ज़
(Constipation)

इतरीफ़ल मुलय्यन : पुराने सिर दर्द, सिर चकराना और आधी सीसी का दर्द दूर करता है। क़ब्ज़ को भी समाप्त करता है। नज़ले व ज़ुकाम और इन से पैदा होने वाले रोगों के लिए विशेषतः लाभकर है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय हल्के गर्म दूध या पानी से खिलाएं।

इसब–केयर : ये बड़ी आंत की पेशियों पर ज़ोर डालती हैं जिससे मल–त्याग आसान हो जाता है और शरीर का कोई भी तरल द्रव्य बड़ी आंत से निष्काषित नहीं होता तथा यह मल को नर्म बनाती है। यह पेट के भारीपन को कम करती है। सेन्न–केयर कैप्सूल की आदत नहीं पड़ती और लम्बे समय तक सेवन कराई जा सकती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम रात को सोते समय हल्के गर्म दूध या पानी से खिलाएं।

क़ब्ज़–क्योर सिरप व पिल्ज़ : यह ग़ैर रसायनिक यौगिक हैं, जो तंत्रिकाओं को हानि पहुंचाए बिना आंतों को प्रोत्साहित करके कार्यशील बनाते हैं, और इनके प्रयोग की आदत भी नहीं पड़ती। यह पाचन तंत्र में मल को चिकना बनने में मदद करते हैं और शिशुओं और व्यस्कों दोनों के लिए समान रूप से सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त यह दूसरे जुल्लाबों की तरह मांसपेशियों और तंत्रिकाओं को कमज़ोर नहीं करते।
सेवन विधि : सिरप : 10 मिली लीटर सोते समय हल्के गर्म पानी से पिलाएं।
पिल्ज : दो गोलियां सोते समय पानी के साथ खिलाएं।

क़ुर्स मुलय्यन : आमाशय और आंतों को गंदे द्रव्यों से साफ़ करने के लिए बहुत उपयोगी है। क़ब्ज़ को दूर करने के लिए अचूक है।
सेवन विधि : 2 टिकियां रात को सोते समय हल्के गर्म पानी या दूध से खिलाएं।

कौन्सटिवैक : आमाशय की दुर्बलता को दूर करती है। भूख लगाती है, क़ब्ज़ तोड़ती है तथा वायु को बाहर निकालती है।
सेवन विधि : 2 गोलियां रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

जवारिश कमूनी मुसहिल : पित्ती, आमाशय विकार और क़ब्ज़ के लिए उपयोगी है। मुंह में थूक अधिक पैदा होता हो या राल बहती हो तो इसके सेवन से यह शिकायत दूर हो जाती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः निहार मुंह पानी या 100 मिली लीटर अर्क़ बादयान के साथ सेवन कराएं। क़ब्ज़ को दूर करने के लिए 10 ग्राम खिलाएं।

त्रिफला अमलतास रस : समस्त त्रिफला रस के गुणों के अतिरिक्त रक्त शुद्ध करता और यकृत से विषैल पदार्थ दूर करता है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

त्रिफला एलो–वेरा रस : समस्त एलो–वेरा रस के गुणों के अतिरिक्त क़ब्ज़ दूर करता, उदर को प्राकृतिक रुप से साफ़ करता, यकृत एवं हृदय की अधिक चर्बी को घटाता, खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करता और दृष्टि बढ़ाता है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

त्रिफला रस : उदर को प्राकृतिक रुप से साफ़ करता व क़ब्ज़ दूर करता है। गैस्ट्रिक विकार, बालों का झड़ना, सिर दर्द, दुष्पचन, समय से पूर्व बुढ़ापा, समय पूर्व बाल सफ़ेद होना और नेत्र–ज्योती की कमज़ोरी में लाभदायक है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

देहल्वी इसबग़ोल : इसबग़ोल भूसी यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा में हज़ारों वर्षों से अपनी लैक्सेटिव (गर्म दूध / पानी के साथ) और दस्त रोकने के कार्य में सेवन किया गया है। यह पाचन तंत्र को उत्तेजक करता है जिससे मल–त्याग आसान हो जाता है। बड़ी आंत के भीतर एक उच्च पानी सामग्री बनाए रखने से भूसी मल के विसतार को बढ़ाता है जिससे मल–त्याग आसान हो जाता है। यह आई.बी.एस. के इलाज में कारगर है। गैसट्रिक सूजन और मूत्र मार्ग में संक्रमण को शांत करने के लिए माना जाता है। उम्मीद के विपरीत, यह दस्त के लिए एक उपयोगी उपाय है। क्योंकि भूसी फूल जाती है और परिपूर्णता की भावना पैदा करता है, इसलिए यह भूख को रोकने में मदद करता है। कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए बहुत प्रभावी है।
सेवन विधि : पैक के साथ है।

माजून इंजीर : पुराने क़ब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : 10 ग्राम सायंकाल दूध या पानी से खिलाएं।

रोग़न अरंडी : क़ब्ज़ को दूर करता है। आंतों से सुद्दों को निकालता है। सुद्दों के कारण होने वाली पेचिश में अति लाभकर है।
सेवन विधि : 25 से 50 लीटर तक 250 मिली लीटर हल्के गर्म दूध में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत अंजीर : क़ब्ज़ को दूर करता है। बलग़म निकालता है। तिल्ली की सूजन को घुलाता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत अरज़ानी : नज़ला, ज़ुकाम और खांसी के लिए उपयोगी है। आंतो से सूखे मल को फिसलाकर क़ब्ज़ को दूर करता है। सीने को कफ़ जनित द्रव्यों से शुद्ध करता है।
सेवन विधि : 25 मिली लीटर 125 मिली लीटर अर्क़ गावज़बां में मिलाकर पिलाएं।

सना कैप्सूल : गाउट, क़ब्ज़, आंतों के कीड़े, कटि–प्रदेश में शूल, माइग्रेन (आधा सीसी का दर्द), आमवात और गृध्रसी में उपयोगी है।
सेवन विधि : रात को 2 कैप्सूल सोते समय पानी के साथ दें।

सेन–केयर पाउडर व कैप्सूल : इनमें सना की पत्तियां हैं जो अत्यन्त मुद्र विरेचक और दस्तावर हैं जो कभी–कभी कब्ज़ और मल सख़्त हो जाने पर चिकित्सा के तौर पर सेवन की जाती हैं। ये बड़ी आंत की पेशियों पर ज़ोर डालती हैं जिससे मल–त्याग आसान हो जाता है और शरीर का कोई भी तरल द्रव्य बड़ी आंत से निष्काषित नहीं होता तथा यह मल को नर्म बनाती है। यह पेट के भारीपन को कम करती है। सेन्न–केयर की आदत नहीं पड़ती और लम्बे समय तक सेवन कराई जा सकती हैं।
सेवन विधि : सायंकाल 5 ग्राम या 2 कैप्सूल पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल किशनीज़ी, इतरीफ़ल ज़मानी, इतरीफ़ल मुक़िल, ख़मीरा बनफ़शा, त्रिफला कैप्सूल, जवारिश कमूनी कबीर, जवारिश कमूनी मुसहिल, जवारिश मेदा,

देहल्वी सूरंजान मुफ़ासिल कैप्सूल, माजून सूरंजान, रियाहीन चूर्ण, रोग़न ज़ैतून, रोग़न बादाम शीरीं, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी, शर्बत अंजीर, शर्बत अहमद शाही, शर्बत दीनार, हब्बे कबिद नौशादरी, हब्बे तिन्कार, हब्बे पपीता, हब्बे मुक़िल, हब्बे मुक़िल जदीद और हब्बे सूरंजान भी क़ब्ज़ को तोड़ती हैं।

बवासीर और भगंदर (Piles and Fistula)

इतरीफ़ल मुक़िल : ख़ूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर के लिए लाभकर है। इसके सेवन से फूले हुए मस्से मुरझा जाते हैं। क़ब्ज़ से सुरक्षित रखती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

क़ुर्स बवासीर ख़ास : बवासीर ख़ूनी हो या बादी, दोनो के लिए अचूक औषधि है। बवासीर के हज़ारों रोगी इससे आराम और राहत पा चुके हैं। मस्सों से आने वाला रक्त भी बंद हो जाता है।
सेवन विधि : 2 टिकिया प्रातः काल निहार मुंह या सोते समय पानी से खिलाएं।

पाएलीना कैप्सूल : नई और पुरानी बवासीर में उपयोगी है। दर्द में राहत और जलन में कमी लाती है। कीटाणु नाशक है। रक्त प्रवाह को बंद करती है। मस्सों की सूजन को दूर करती है। घाव को तेज़ी से भरती है। क़ब्ज़ से सुरक्षित रखती है।
सेवन विधि : दो कैप्सूल्स दिन में दो बार खाना खाने के बाद पानी से खिलाएं।

पाएलीना मरहम : बवासीर के मस्सों के दर्द और जलन को शांत करता है और कुछ दिनों के लगातार प्रयोग से मस्सों को सुखाकर गिरा देता है।
प्रयोग विधि : रात को सोते समय और प्रातःकाल शौच से निबट कर मरहम उंगली से मस्सों पर लगाएं।

मरहम बवासीरः बवासीरी मस्सों के दर्द और जलन को शांत करता है और कुछ दिनों के लगातार प्रयोग से मस्सों को सुखाकर गिरा देता है।
प्रयोग विधि : रात को सोते समय और प्रातःकाल शौच से निबट कर मरहम उंगली से मस्सों पर लगाएं।

मोचरस कैप्सूल : रक्तस्त्राव, पेचिश, दस्त, रक्तस्रावी बवासीर, कोलन की सूजन, फेफड़ों की टीबी में बलग़म में ख़ून आना, इन्फ्लूएंजा और अत्यार्तव में लाभकर है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल दिन में दो बार पानी के साथ दें।

रोग़न नीम : ख़ून की सफ़ाई और खाज के लिए अचूक है। घाव के कीड़े मारता है। सिर की जुंए भी मार देता है।
प्रयोग विधि : भगंदर के स्थान पर तीन या चार बूंदे टपकाएं और रूई की फुरैरी भिगोकर रखें। सिर की जुंओं के लिए बालों की जड़ों में लगाएं।

हब्बे बवासीर ख़ूनी : ख़ूनी बवासीर के लिए लाभकर है।
सेवन विधि : 2 गोलियां प्रातः काल और रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

हब्बे बवासीर बादीः बादी बवासीर के लिए लाभकर है।
सेवन विधि : 2 टिकिया प्रातः काल निहार मुंह पानी से खिलाएं।

हब्बे मुक़िल : ख़ूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर के लिए लाभकर है। क़ब्ज़ तोड़ती है। आमाशय को शक्ति प्रदान करती है।
सेवन विधि : 2 गोलियां रात को सोते समय ताज़े पानी से खिलाएं।

हब्बे मुक़िल जदीदः ख़ूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर के लिए अति लाभदायक है। मस्सों की जलन और सूजन को दूर करती है। क़ब्ज़ तोड़ती है।
सेवन विधि : 2 गोलियां रात को सोते समय ताज़े पानी से खिलाएं।

हब्बे रसौत : बवासीर ख़ूनी में लाभदायक है। बवासीर के ख़ूनी दस्तों को रोकती है।
सेवन विधि : 2–2 गोलियां प्रातः तथा सांयकाल पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल किशनीज़ी, क़ुर्स बंदिश ख़ून, जवारिश जालीनूस, जवारिश बिसबासा, देहल्वी इसबग़ोल, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और सफ़ूफ़ मुक़लियासा भी बवासीर और भगंदर में उपयोगी हैं।

अंतड़ियों के कीड़े (Intestinal Worms)

इतरीफ़ल दीदान : पेट के हर प्रकार के कीड़ों विशेषतः फ़ीता कृमि को मार कर निकाल बाहर करता है और आगे के लिए उनकी उत्पत्ति को रोक देता है।

सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं। तीन दिन लगातार खिलाने के बाद चौथे दिन रात को कुर्स मुलय्यन की दो टिकिया पानी से खिलाएं।

क़ुर्स दीदान : पेट के कीड़ों को मारता है और उन्हें पेट से बाहर निकाल देता है।
सेवन विधि : 2–2 टिकिया प्रातः एवं सायंकाल पानी से खिलाएं। सप्ताह में एक बार रोग़न अरण्डी 25–50 मिली लीटर दूध में मिलाकर पिलाएं ताकि मरे हुए कीड़े बाहर निकल जाएं।

क़ुर्स दीदान जदीद : पेट के कीड़ों को मारता है और उन्हें पेट से बाहर निकाल देता है।
सेवन विधि : 2–2 टिकिया प्रातः एवं सायंकाल पानी से खिलाएं। सप्ताह में एक बार रोग़न अरण्डी 25–50 मिली लीटर दूध में मिलाकर पिलाएं ताकि मरे हुए कीड़े बाहर निकल जाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त सेन केयर और सना कैप्सूल भी पेट के कीड़ों में उपयोगी हैं।

उदर पीड़ा
(Colic)

अर्क़ अजवाएन, अर्क़ बादियान, इतरीफ़ल ज़मानी, जवारिश कमूनी, जवारिश कमूनी कबीर, जवारिश कमूनी मुसहिल, देहल्वी कमून कैप्सूल, रोग़न अरंडी और शर्बत दीनार का सेवन उदर पीड़ा के लिए अचूक है।

आमाशय, गुर्दा और मूत्राशय रोग
(Diseases of the Pancreas, Kidney & Urinary Bladder)
गुर्दे और मूत्राशय की पथरी
(Renal and Bladder Calculus)

इकसीर गुर्दा : पथरी चाहे गुर्दे में हो या मूत्राशय में, इस औषधि के सेवन से घुलकर पेशाब के रास्ते बाहर निकल जाती है। इसके अतिरिक्त मूत्राशय के रेत कणों को भी बाहर निकाल देती है।
सेवन विधि : 1–1 टिकिया प्रातः और सायंकाल 5 ग्राम माजून हजरूल यहूद के साथ सेवन कराएं।

कुल्थी कैप्सूल : मूत्र का दर्द के साथ अथवा कठिनाई से आना, मुत्राशय की पत्थरी, मोटापा और जलोदर के लिए लाभकर है।
सेवन विधि : प्रतिदिन एक या दो कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

क़ुर्स दवाए गुर्दा : गुर्दे और मूत्राशय की पथरी को तोड़कर पेशाब के रास्ते बाहर निकालती है। संगे मुरारा को भी तोड़ती है। गुर्दे और मूत्राशय की पथरी पेशाब के रास्ते बाहर निकलने के कारण पेशाब में जलन होने को भी लाभ पहुंचाती है।
सेवन विधि : 1–1 टिकिया प्रातः और सायंकाल पानी या माजून संगसरे माही 5 ग्राम में मिलाकर खिलाएं। चिकनी, खट्टी तथा तेज़ मिर्च वाले पदार्थ और चावल का प्रयोग न कराएं।

माजून अक़रब : गुर्दे और मूत्राशय की पथरी को कण कण करके पेशाब के रास्ते बाहर निकालती है। दर्द को राहत मिल जाती है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और सायंकाल 1 टिकिया क़ुर्स दवाए गुर्दा के साथ सेवन कराएं।

माजून संगसरे माही : गुर्दे और मूत्राशय की पथरी को तोड़कर पेशाब के रास्ते बाहर निकालती है। संगे मुरारा को भी तोड़ती है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और सायंकाल 1 टिकिया क़ुर्स दवाए गुर्दा के साथ सेवन कराएं।

यूनीकैल कैप्सूल : पेशाब की पथरी के लिये अत्यन्त लाभदायक है। यह पेशाब की नली को साफ़ करता है। यह उन पदार्थों का विसर्जन भी करता है जो पाचन क्रिया की गड़बड़ी या भोजन की कमी से होते हैं तथा जिनसे गुर्दों में पथरियां बनती हैं। इसका प्रतिदिन सेवन गुर्दों और पेशाब की नली को साफ़ करता है। यह विशेषतः उन लोगों के लिये लाभदायक है जिनहें पेशाब कम आता है और जो खाने में ऐसी वस्तुओं का सेवन करते हैं जिनसे उनके मूत्र में रवे बन जाते हैं।
सेवन विधि : 1–1 कैप्सूल दिन में दो बार पानी के साथ सेवन कराएं।

शर्बत आलू बालू : ख़ूब पेशाब लाता है। गुर्दे और मूत्राशय की पथरी को तोड़कर पेशाब के रास्ते बाहर निकाल देता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर तक प्रातः और सायंकाल पानी में मिलाकर पिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त कुलिया बज़ूरी–SF, कुश्ता हजरूल यहूद, कैप्सूल कुलयाती, गोखरू कैप्सूल, जवारिश जालीनूस, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, पुनर्नवा कैप्सूल, माजून हजरूल यहूद, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल, शर्बत बज़ूरी मोतदिल और हब्बे सलाजीत

भी मूत्राशय की पथरी की शिकायत में उपयोगी हैं।

मूत्र मार्ग संक्रमण (Urinary Tract Infection)

पुनर्नवा कैप्सूल : सूजन, पित्तदोष, हेपेटाइटिस, जलोधर, रुक रुक कर पेशाब आना, गुर्दे की पथरी और अनिद्रा में उपयोगी है। अपच, पीलिया, तिल्ली का बढ़ जाना व पेट दर्द में लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन दो कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

नोट : इस औषधि के अतिरिक्त कासनी कैप्सूल, कुलिया बजूरी–SF, देहल्वी इसबग़ोल, जामुन सिरका और शर्बत बज़ूरी मोतदिल भी मूत्र मार्ग संक्रमण में उपयोगी हैं।

गुर्दे और मूत्राशय की दुर्बलता (Weakness of the Kidney and Urinary Bladder)

कैप्सूल कुलयाती : गुर्दे और मूत्राशय को शक्ति देती है। ख़ूब पेशाब लाता है।
सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

नोट : इस औषधि के अतिरिक्त कुश्ता ज़मर्रूद, कुश्ता बैज़ा मुर्ग़, जवारिश जालीनूस, जवारिश ज़रऊनी सादा, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ां कलां, देहल्वी च्यवनप्राश स्पेशल, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, डायब–ईज़, पुनर्नवा कैप्सूल, माजून अंजदान, माजून कुंदर, माजून जालीनूस लूलवी, माजून प्याज़, माजून फ़लासफ़ा, माजून मासिकुल बोल और लबूब कबीर गुर्दे और मूत्राशय की दुर्बलता में उपयोगी हैं।

पेशाब की अधिकता (Diabetes Insipidus)

कुश्ता ज़मर्रूद : यकृत और हृदय क्षीणता में लाभकर है। गुर्दों को शक्ति देता है। पेशाब की अधिकता को कम करता है और मूत्राशय को सशक्त करता है। मधुमेह में उपयोगी है। पेशाब में एलब्यूमिन आने को रोकता है। खांसी में भी लाभकर है।
सेवन विधि : 30 मिलीग्राम या एक टिकिया प्रातःकाल जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां 5 ग्राम में रखकर खिलाएं।

कुश्ता बैज़ा मुर्ग़ : मधुमेह में उपयोगी है। पेशाब की ज़्यादती को कम करता है। गुर्दों को पुष्टि देता है। पुरूषों के स्वप्नदोष और स्त्रियों के श्वेत प्रदर को रोकता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां मक्खन में रखकर खिलाएं। ऊपर से दूध पिला दें।

माजून कुंदर : बार बार पेशाब आने के रोग में लाभकर है। पेशाब के बिना चाहे निकल जाने और रात को बिस्तर पर पेशाब निकल जाने की शिकायत दूर करती है। गुर्दे और मूत्राशय को शक्ति देती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम माजून में एक टिकिया या 30 मिलीग्राम कुश्ता बैज़ा मुर्ग़ मिलाकर खिलाएं।

माजून मासिकुल बोल : मूत्राशय को शक्ति प्रदान करती है। बार बार पेशाब आने की शिकायत, मधुमेह, गुर्दे और मूत्राशय विकार तथा प्रोस्टेट ग्रंथि के बढ़ जाने में उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या रात्रि में सोते समय पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त जवारिश जालीनूस, जवारिश ज़रऊनी सादा, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, जवारिश मस्तगी, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, डायब–ईज़, मस्तगी कैप्सूल, माजून अंजदान, माजून फ़लासफ़ा, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और हब्बे सलाजीत भी पेशाब की अधिकता में उपयोगी हैं।

पेशाब में शक्कर आना (Diabetes Mellitus)

आमला एलो वेरा जामुन करेला रस : समस्त आमला, एलो वेरा एवं करेला रस के गुणों के अतिरिक्त शकर की मात्रा को सामान्य कर चयापचय पद्धति सुधारता और मधुमेह के कारण प्यास को कम करता है।
सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं।

करेला कैप्सूल : मधुमेह, गाउट, तिल्ली और यकृत के विकार, छालरोग (Psoriasis) और आमवात में उपयोगी है।
सेवन विधि : प्रतिदिन दो कैप्सूल सुबह नाश्ते के समय पानी के साथ दें।

करेला जामुन रस : समस्त जामुन व करेला रस के गुणों से परिपूर्ण है।

सेवन विधिः 10–15 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं।

करेला रस : रक्त में शकर की मात्रा कम करता, ग्लुकोज़ चयापचय में सहायक है तथा प्राकृतिक रक्त शोधक है।

सेवन विधिः 10 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं।

गुड़मार कैप्सूल : मधुमेह, शर्करामेह, एल.डी.एल. कोलेस्ट्रोल और ट्राइग्लाइसेराइड्स का स्तर बढ जाना, रक्त में ग्लूकोज़ या शक्कर की कमी और बार–बार मूत्र आना में उपयोगी है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

जामुन रस : रक्त में शकर की मात्रा नियमित करता, त्वचा संबन्धी विकारों में यहायक, इन्सूलिन बनने और पाचन क्रिया में अधिक शकर की मात्रा दूर करने व यकृत द्वारा प्रयोग करने में सहायक और बार –बार पेशाब आने व अमीबेसिस में लाभकारी है।

सेवन विधिः 20 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 40 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं।

जामुन सिरका : यह मधुमेह में उपयोगी है। उच्च कार्बोहाइड्रेट भोजन के बाद रक्त शर्करा में वृद्धि को नियंत्रित करता है।

सेवन विधि : 10–15 मि.ली. प्रतिदिन सेवन कराएं।

डायब–ईज़ : यह ऐसी जड़ी–बूटियों का मिश्रण है जिसमें अनेक असरकारक जड़ी–बूटियां प्रयोग की गई हैं जो यूनानी एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धिति में 5000 वर्षों से लगातार प्रयोग होती रहीं हैं। इस प्रकार डायब–ईज़ मधुमेह शक्करी पर नियन्त्रण पाने के लिए असरकारक औषधि सिद्ध होती है। यह रक्त में शक्कर का स्तर नियन्त्रण में रखती है जिससे अधिक इन्सुलिन लेने की आवश्यकता या रक्त में ग्लूकोज़ को कम करने की दवाओं की आवश्यकता नहीं पड़ती या कम पड़ती है। यह मीठा खाने की इच्छा को कम करती है, रक्त संचरण को बढ़ाती है, विशेषकर हाथों और पैरों में, और आंखों की तंत्रिकाओं में रक्त प्रवाह को नियन्त्रित करके इनमें होने वाले विकारों को दूर करती है। इसके अतिरिक्त कमज़ोरी, सर चकराना, पैरों व शरीर में दर्द, पेशाब की अधिकता व खुजली में भी लाभदायक है। डायब–ईज़ में सल्फोनामाइड्स और बाइग्वानाइड्स नहीं होते (जो अधिकतर एलोपैथिक दवाओं में पाए जाते हैं)। इसलिए इस दवा का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो या तीन बार पानी से सेवन कराएं। जब ख़ून में शक्कर की मात्रा कम हो जाए तो दवा की मात्रा कम कर दें।

मेथी कैप्सूल : मधुमेह शक्करी, एल.डी.एल कोलेस्ट्रॉल स्तर का अधिक बढ़ना, स्तनों का छोटा होना, माताओं में दूध की कमी एवं ज़च्चगी के कष्ट में लाभकर है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

गीली गैंग्रीन (Diabetic Gangerene)

ईज़ी–हील : मवाद युक्त गैंग्रीन में बहुत लाभप्रद है जो मधुमेह के रोगियों को हो जाता है, जिसका कारण अधिकतर साधारण घाव होता है।

सेवन विधि : 1 कैप्सूल दिन में 2 बार पानी से सेवन कराएं।

पेशाब का कठिनाई से आना (Dysuria)

अर्क़ कासनी, कुलिया बजूरी–SF, कुल्याती कैप्सूल, गोखरू कैप्सूल, प्रोस्टेट–बी एच, बनादिकुल बजूर, शर्बत आलू बालू, शर्बत कासनी, शर्बत दीनार, शर्बत बज़ूरी मोतदिल और सफ़ूफ़ इंद्रि जुल्लाब पेशाब को जारी करते हैं।

बिस्तर में पेशाब का निकल जाना (Bed Wetting)

कुश्ता बैज़ा मुर्ग़, गोखरू कैप्सूल, जवारिश जालीनूस, जवारिश ज़रऊनी सादा, जवारिश मस्तगी, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, डायब–ईज़, मस्तगी कैप्सूल, माजून कुंदर, माजून फ़लासफ़ा, माजून मासिकुल बोल, शिलाजीत केयर, शिलाजीत कैप्सूल और हब्बे सलाजीत बिस्तर पर पेशाब निकल जाने के रोग को दूर करती हैं।

बेइरादा बूंद बूंद पेशाब निकल जाना (Incontinence of Urine)

बिस्तर पर पेशाब निकल जाने के अंतर्गत शीर्षक में प्रस्तावित औषधियां बेइरादा बूंद बूंद पेशाब निकल जाने के रोग में भी लाभकर हैं।

जलन से पेशाब आना
(Burning Micturition)

बनादिकुल बज़ूर : पेशाब की जलन को दूर करता है। गुर्दे तथा मूत्राशय और मूत्र की नाली के घाव भरता है। पेशाब को खुलकर लाता है।
सेवन विधि : 5 गोलियां पानी के साथ खिलाएं।

सफ़ूफ़ इंद्रि जुल्लाब : पेशाब की रूकावट को दूर करता है और पेशाब लाता है। सूज़ाक की शिकायत में मूत्र नली को साफ़ करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम लस्सी के साथ सेवन कराएं।

नोट : अर्क़ कासनी, कुलिया बजूरी–SF, गोखरू कैप्सूल, शर्बत बज़ूरी मोतदिल और हब्बे जिर्यान ख़ास का सेवन भी पेशाब की जलन को दूर करता है।

पेशाब में एलब्यूमिन स्राव
(Albuminuria)

कुश्ता ज़मर्रूद पेशाब में एलब्यूमिन आने की शिकायत को दूर करता है।

गुर्दे और मूत्राशय की गर्मी
(Biliousness of the Kidney and Bladder)

अर्क़ कासनी, कुलिया बजूरी–SF, शर्बत कासनी, शर्बत बज़ूरी मोतदिल और शर्बत मुहल्लिल का सेवन गुर्दों और मूत्राशय की गर्मी को दूर करता है।

गुर्दे का दर्द
(Nephralgia)

इकसीर गुर्दा, कुश्ता हजरूल यहूद, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, जवारिश ज़रऊनी सादा, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल और माजून हजरूल यहूद का सेवन गुर्दों के दर्द को दूर करता है।

पेशाब में रक्त आना (रक्त मेह)
(Haematuria)

कुलिया बजूरी–SF, कुश्ता अक़ीक़, कुर्स बंदिश ख़ून, शर्बत अंजबार और शर्बत बज़ूरी मोतदिल रक्त मेह को रोकती है।

पुरूष संबंधी ख़ास रोग
(Diseases of Males)
पौरूष शक्ति की कमी
(Sexual Debility)

अल अहमर : स्नायुओं को सशक्त करती है। पुरूषत्व बढ़ाती है। यकृत क्रिया को ठीक करती है और रक्त की उत्पत्ति को बढ़ाती है। लिंग के सुस्ती और ढीलेपन को ठीक करती है। इसका सेवन शीत ऋतु मे वृद्धों तथा कफ़ स्वभाव रोगियों के लिए उपयोगी है।
सेवन विधि : 30 मिलीग्राम या एक टिकिया 6 ग्राम लबूब कबीर या मक्खन में मिलाकर खिलाएं। ऊपर से दूध पिला दें।

असबी प्लस : अगर शरीर में शिथिलता और सुस्ती रहती है, मेहनत के काम करने से जल्द थकान हो जाती है और देखने में कोई रोग नज़र नहीं आता, अच्छा भोजन खाने के बावजूद दुबले दिखाई देते हैं और स्नायु कमज़ोर हो गए हैं तो असबी प्लस उनको अच्छे स्वास्थ्य की ओर ले जाती है। यह ख़ून की लाली और लाल कणों को बढ़ा कर सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करती है। बुढ़ापे और संभोग की अधिकता से जिन रोगियों में पुरूषत्व कम हो जाता है उन रोगियों के लिए अचूक औषधि है। यह बुढ़ापे या अत्यधिक संभोग से पैदा होने वाली पौरूष शक्ति की कमी और लिंग के ढीलेपन और सुस्ती को दूर करती है।
सेवन विधि : एक एक टिकिया प्रातः और सायंकाल दूध के साथ खिलाएं।

कौंच कैप्सूल : वीर्य में शुक्राणुओं का अभाव, कामलिप्सा में कमी, मानसिक अवसाद, नपुंसकता, वीर्य का पतलापन, अधीरता, अल्पशुक्राणुता (वीर्य में शुक्राणुओं की कमी), पार्किन्सनता, शीघ्र वीर्य पतन, पौरूष शक्ति की कमी, शुक्रमेह (जिर्यान), पुरूष एवं स्त्रियों में बांझपन, वीर्य की मात्रा में कमी और गतिहीन व कमज़ोर शुक्राणु के लिए अचूक औषधि है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

जीवन तिलाई पिल्ज़ : मानवीय शक्ति का ख़ज़ाना। हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे और अंडकोष हैं जिनकी सुचारू क्रिया पर मानवीय स्वास्थ्य और यौवन निर्भर करता है। मगर इन केन्द्रीय अंगों में से किसी एक की क्रिया–प्रक्रियामें विकार उत्पन्न हो जाए तो विभिन्न प्रकार के रोग उठ खड़े होते हैं। जैसे मानसिक व शारीरिक दुर्बलता, आमाशय

विकार, सिर दर्द, नेत्र ज्योति में कमी, अनिद्रा, सुस्ती, थकान और इससे भी ख़राब रोग जैसे पौरूष शक्ति की कमज़ोरी, प्रमेह, शीघ्र पतन, वीर्य का पतलापन आदि। यह दवा ऐसे तत्वों से निर्मित हुई औषधि है जो केन्द्रीय प्रक्रिमा पर सीधा प्रभाव डालती है। यही कीरण है कि जीवन तिलाई पिल्ज़ का सेवन करने वालों की समस्त शक्तियां सुचारू करती है और उनमें उत्साह बल पैदा हो जाता है।
सेवन विधि : 1–1 गोली प्रातः और सायंकाल गर्म दूध या पानी के साथ खिलाएं।

जौहर सीन : काम शक्ति बढ़ाता है। आमाशय, यकृत, ह्रदय तथा मस्तिष्क को सशक्त करता है। स्नायुओं को शक्तिशाली बनाता है। कफ़ रोगों में उपयोगी है। शीत ऋतु में बूढ़ों और कफ़ स्वभाव लोगों के लिए विशेषकर उपयोगी है।
सेवन विधि : 30 मिलीग्राम बीज रहित मुनक्का में गुठली के स्थान पर रखकर बिना दांत लगाए पानी से निगलवाएं। ऊपर से दूध पिलाएं।

ड्रैगन फोर्स : एक प्रभावी यूनानी जड़ी बूटियों का समिश्रण है जो इन सभी विकारों से लड़ने की शक्ति देता है जिसके फलस्वरूप यौन शक्ति में कमी अपने आप ही दूर हो जाती है। ड्रैगन फोर्स आपके वैवाहिक जीवन में निराशा को फटकने नहीं देता। यह पूर्णतया प्राकृतिक उत्पाद है और इसके कोई दुष्प्रभाव नहीं है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल प्रतिदिन प्रातःकाल दूध या पानी से लें। स्थायी परिणाम के लिए कम से कम 20 दिनों तक प्रयोग करें।

देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल : सदियों की आज़मया हुआ लबूब कबीर का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। लबूब कबीर की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह मस्तिष्क तथा स्नायुओं को शक्ति प्रदान करता है। लिंग की नर्मी को दूर करता है। वीर्य में वृद्धि करता है। पुरूषत्व शक्ति को बढ़ाता है। गुर्दो को सशक्त करता है और सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। प्रमेह में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध या 50 मिली लीटर अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा के साथ खिलाएं।

देहल्वी जलाल कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई माजून जलाली का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून जलाली की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी जलाल कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। शक्तिदायक और कामशक्ति को बढ़ाता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। वीर्य की उत्पत्ति करता है और उसे गाढ़ा करती है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल : सदियों से आज़माया हुआ माजून फ़लासफ़ा का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून फ़लासफ़ा की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। स्नायुओं को शक्ति देकर और वीर्य की उत्पत्ति को बढ़ाकर काम शक्ति को बढ़ाता है। गुर्दों और मूत्राशय को शक्ति देता है और पेशाब की अधिकता को रोकता है। गठिया और कमर के दर्द को दूर करता है। भोजन को पचाता है और भूख बढ़ाता है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातः या सायंकाल 250 मिली लीटर दूध या पानी से खिलाएं।

देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल : सदियों की आज़माई हुई माजून सालब का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून सालब की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। काम शक्ति की दुर्बलता और प्रमेह को दूर करता है। शीघ्रपतन को दूर करता है तथा लिंग की सुस्ती और ढीलेपन को दूर करता है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

पावर–जैन कैप्सूल : यह जड़ी–बूटियों और खनिज पदार्थों का पूर्ण मिश्रण है जो खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कराता है और लैंगिक दुबर्लता के समस्त विकारों को दूर करता है। यह नपुंसकता की चिकित्सा में भी लाभकारी है, इसे जवान और बूढ़े दोनों टॉनिक के रूप में सेवन कर सकते हैं। पावर–जेन कैप्सूल से कोई दुष्प्रभाव नहीं होता, इसे लम्बे समय तक सेवन कराया जा सकता है।

सेवन विधि : दो कैप्सूल प्रतिदिन प्रातः व रात को दूध से सेवन कराएं।

माजून अस्पंद सोख़तनी : पुरूषत्व की रक्षा करती है। शक्ति प्रदान करती है। शीघ्रपतन को दूर करती है। काम शक्ति की दुर्बलता को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून जलाली : शक्तिदायक और कामशक्ति को बढ़ाती है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करती है। वीर्य की उत्पत्ति करती है और उसे गाढ़ा करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून जालीनूस लूलवी : हकीम जालीनूस के प्रस्तावित नुस्ख़े के अनुसार निर्मित है। पुरूषत्व में वृद्धि करती है। स्नायुओं, गुर्दे व आमाशय को शक्ति देती है। शरीर में चुस्ती, स्फूर्ति और शक्ति उत्पन्न करती है। लिंग के पुट्ठों की शक्ति और उत्साह बल को बनाए रखती है।
सेवन विधि : 5–5 ग्राम प्रातः और रात्रि में सोते समय दूध से खिलाएं।

माजून प्याज़ : पौरूष शक्ति को बढ़ाती है। गुर्दों को शक्तिशाली करती है। वीर्य की उत्पत्ति में वृद्धि करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल दूध के साथ खिलाएं।

माजून फ़लासफ़ा : स्नायुओं को शक्ति देकर और वीर्य की उत्पत्ति को बढ़ाकर काम शक्ति को बढ़ाती है। गुर्दों और मूत्राशय को शक्ति देती है और पेशाब की अधिकता को रोकती है। गठिया और कमर के दर्द को दूर करती है। भोजन को पचाती है और भूख बढ़ाती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातः और सायंकाल 250 मिली लीटर दूध या पानी से खिलाएं।

माजून सालब : काम शक्ति की दुर्बलता और प्रमेह को दूर करती है। शीघ्रपतन को दूर करती है तथा लिंग की सुस्ती और ढीलेपन को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल दूध के साथ खिलाएं।

लबूब कबीर : मस्तिष्क तथा स्नायुओं को शक्ति प्रदान करता है। लिंग की नर्मी को दूर करता है। वीर्य में वृद्धि करता है। पुरूषत्व शक्ति को बढ़ाता है। गुर्दों को सशक्त करता है और सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। प्रमेह में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 6 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध या 50 मिली लीटर अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा के साथ खिलाएं।

लबूब बारिद : जिर्यान तथा स्वप्नदोष में लाभदायक है। वीर्य को गाढ़ा करती है और पुरूषत्व शक्ति को बढ़ाती है।
सेवन विधि : 5 से 10 ग्राम तक प्रातःकाल दूध के साथ खिलाएं।

विग–विट : मस्तिष्क तथा स्नायुओं को शक्ति प्रदान करता है। लिंग की सुस्ती और ढीलेपन को दूर करता है। वीर्य में वृद्धि करता है। पुरूषत्व शक्ति को बढ़ाता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। प्रमेह में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल संभोग से 2 घंटे पूर्व भोजन पचने के पश्चात 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। कैप्सूल खिलाने के बाद संभोग तक कुछ न खाएं। अधिक कमज़ोरी की सूरत में और चिरगामी प्रभाव के लिए रोज़ाना 1 कैप्सूल प्रातःकाल गर्म दूध के साथ सेवन कराएं।

शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर : शिलाजीत में कई गुणकारी तत्त्व जैसे ऑक्सीकरण रोधी (antioxidant), Humic acid और Fulvic acid पाए जाते हैं। इसमें 80 से अधिक खनिज पदार्थ पाए जाते हैं जो मानवीय शरीर और स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डालतें हैं। वीर्य में शुक्राणु की मात्रा बढ़ाता है तथा गतिहीन व शुक्राणु की कमज़ोरी दूर कर पुरूषत्व की कमज़ोरी को दूर करता है। इसके अतिरिक्त Testosterone Levels को भी बढ़ाता है। ऐन्टीआक्सिडन्ट क्षमता के कारण यह हृदय और दीर्घायु स्वास्थ के लिए लाभदायक है। इसमें Fulvic Acid Alzhiemer's Disease के कुछ कारणों को दूर करता है। शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर स्नायुओं को शक्ति देता है और तनाव, मस्तिष्क की थकान, मिर्गी, चिन्ता और मानसिक अवसाद में लाभकर है। इसके अतिरिक्त यह स्मरण शक्ति बढ़ाता है।
सेवन विधिः 10 मि.ली. प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल पिलाएं।

हब्बे अंबर मोमियाई : हृदय, मस्तिष्क और स्नायुओं के लिए पौष्टिक है। पौरूष शक्तियों की रक्षक है। काम शक्ति में वृद्धि करती है। नपुंसकता के कारणों को दूर करती है। वीर्य में शुक्राणु की मात्रा बढ़ाती है।
सेवन विधि : 1–1 गोली प्रातः और सायंकाल गर्म दूध के साथ खिलाएं।

हब्बे जदवार : स्नायुओं को शक्ति पहुंचाकर काम शक्ति की कमी को दूर करता है। वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाकर पुरूषत्व की कमज़ोरी को दूर करता है। रूकावट की शक्ति को बढ़ाता है।
सेवन विधि : 2 गोलियां प्रातःकाल और रात को सोते समय दूध के साथ खिलाएं।

हब्बे जालीनूस : स्नायुओं को शक्ति पहुंचाकर काम शक्ति की कमी को दूर करती है।
सेवन विधि : 1 या 2 गोलियां प्रातःकाल दूध के साथ खिलाएं।

हब्बे मुक़व्वी तिलाई : स्नायुओं, हृदय और मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है। अप्राकृतिक कार्यों से पैदा होने वाली नपुंसकता के लिए अचूक औषधि है। वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाकर पुरूषत्व की कमज़ोरी को दूर करता है।
सेवन विधि : 1 गोली प्रातः नाश्ते में या रात को सोते समय गर्म दूध से खिलाएं।

नोट : अर्क़ अंबर, अर्क़ माउल्लहम ख़ास, अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा, अकरकराह कैप्सूल, अश्वगन्धा कैप्सूल, अश्वगन्धा रस (संतरा रस युक्त), औलिगो–एस, एनर्जी–एड, कुश्ता अबरक सफ़ेद, कुश्ता अबरक स्याह, कुश्ता क़लई, कुश्ता तिला, कुश्ता नुक़रा, कुश्ता फ़ौलाद, जौहर ख़ुसिया, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, टैस्ट्रॉन, तिला बेनज़ीर, देहल्वी आर्द ख़ुर्मीन कैप्सूल, माजून आर्द ख़ुर्मा, माजून मुग़ल्लिज़, माजून मुगल्लिज़ जवाहर, माजून मुग़ल्लिज़ मूसली, माजून सुपारी पाक, मूसली सफ़ेद कैप्सूल, पंबादाना कैप्सूल, बीजबंद कैप्सूल, सुपारी पाक पाउडर और हब्बे ख़ास भी काम शक्ति की दुर्बलता के लिए लाभकर हैं।

स्वप्नदोष की अधिकता और प्रमेह (Nocturnal Emmission and Spermatorrhoea)

इकसीर जिर्यान : हकीम बूअली सीना ने कहा है कि वीर्य इंसान के लिए अमृत समान है। यह नष्ट नहीं होता बल्कि अमृत नष्ट होता है। इसी लिए इसकी भरसक रक्षा करनी चाहिए। इकसीर जिर्यान वीर्य को गाढ़ा करती है। हर प्रकार के प्रमेह जैसे प्रास्टेट ग्रंथि से हो या Bulbourethral ग्रंथि का हो या वीर्यस्राव का हो सबमें लाभकर है।
सेवन विधि : एक–एक टिकिया प्रातः और सायंकाल दूध के साथ खिलाएं।

कुश्ता क़लई : प्रमेह, स्वप्नदोष, शीध्रपतन और वीर्यपात में लाभकर है। वीर्य को गाढ़ा करता है और उसकी उत्पत्ति में वृद्धि लाता है। प्रमेह के कारण पुरूषत्व की अनिच्छा में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकिया 10 ग्राम माजून आर्द खुर्मा में रखकर खिलाएं और ऊपर से 250 मिली लीटर दूध पिला दें।

कुश्ता सदफ़ : पुरूषों के प्रमेह और स्त्रियों के श्वेत प्रदर को रोकता है। हृदय को शक्ति देता है।
सेवन विधि : 60 मिलीग्राम या दो टिकियां 5 ग्राम माजून सुपारी पाक में रखकर खिलाएं।

क़ुर्स जिर्यान : संभोग की अधिकता, हस्त मैथुन और यौवन काल की अनेकानेक कुरीतियों के कारण लिंग की संवेदनशीलता अत्यधिक बढ़ जाती है। जिसके कारण ठनसइवनतमजीतंस प्रास्टेट ग्रंथियों या अधिक वीर्यपात से प्रमेह उत्पन्न हो जाता है। ऐसी अवस्थाओं में यह औषधि बहुत लाभकर है। यह लिंग की बढ़ी हुई संवेदनशीलता को कम करके वीर्य को गाढ़ा करती है जिसके कारण पेशाब के द्वारा वीर्य स्राव बंद हो जाता है।
सेवन विधि : 4 टिकियां प्रातःकाल ताज़ा पानी या गर्म दूध से खिलाएं। औषधि सेवन करने के एक घंटे बाद नाश्ता करें।

जिर्यानिल : वीर्यस्खलनता या बिना संभोग के वीर्य का स्राव (ज़्यादातर सोते समय) में लाभदायक है। यह गुर्दा और मूत्राशय को शक्ति देता है। वीर्य को गाढ़ा करता है और बार–बार पेशाब आने को रोकती है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल प्रातः और सायंकाल खिलाएं।

तिला मुमसिक ख़ास : किशोरावस्था की ग़लत गतिविधियों और अधिक संभोग के कारण जिन लोगों के लिए संभोग क्रिया बिगड़ गई है और थोड़े से स्पर्श से लिंग से वीर्य स्राव होने लगता है, उनके लिए यह सर्वश्रेष्ठ तिला है।
प्रयोग विधि : आधा ग्राम तिला लिंग की पुश्त और दांए–बाएं भागों पर हल्के हाथ से दो तीन मिनट रात को रोज़ाना मालिश करें, मगर इसे सीवन और लिंग की सुपारी पर न मलें। फिर ऊपर से मुलायम कपड़े की पट्टी लपेट दें और हल्की सी सिकाई करें। सुबह को पट्टी खोलकर गर्म पानी से लिंग को धो डालें। जब तक लिंग के समस्त विकार ख़त्म न हो जाएं कई बार करते रहें। इस बीच साइकिल पर न चढ़ें, न घुडसवारी करें और न संभोग करें।

देहल्वी आर्द ख़ुर्मीन कैप्सूल : सदियों से आज़माया हुआ माजून आर्द ख़ुर्मा का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून आर्द ख़ुर्मा की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी आर्द ख़ुर्मीन कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। प्रमेह और स्वप्नदोष में उपयोगी है। वीर्य को गाढ़ा करता है और उसकी उत्पत्ति में वृद्धि करता है। शीध्र पतन रोग को दूर करता है। पुरूषत्व बढ़ाता है।

सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून अंजदान : तीनों प्रकार के प्रमेह विकारों में लाभकर है। वीर्य ग्रंथि की सूजन और उसके विकारों को दूर करती है जिसके कारण इस प्रकार की शिकायतें पैदा होती हैं। इन ग्रंथियों को सुचारू करने के अलावा यह मांजून मूत्राशय और गुर्दे को शक्ति प्रदानकर पेशाब की ज़्यादती को रोकने में अचूक है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः और सायंकाल दूध के साथ खिलाएं।

माजून आर्द ख़ुर्मा : प्रमेह और स्वप्नदोष में उपयोगी है। वीर्य को गाढ़ा करती है और उसकी उत्पत्ति में वृद्धि करती है। शीघ्र पतन रोग को दूर करती है। पुरूषत्व बढ़ाती है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून जिर्यान ख़ास : प्रमेह के लिए उपयोगी है, वीर्य उत्पन्न करती है और उसे गाढ़ा करती है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून मुग़ल्लिज़ : शीध्र पतन और प्रमेह आदि रोगों को दूर करता है। वीर्य को गाढ़ा करता है। पुरूषत्व को बढ़ाता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून मुग़ल्लिज़ जवाहर : वीर्य के पतलेपन को ठीक करता है। वीर्य को गाढ़ा करता है। प्राकृतिक ठहराव की शक्ति उत्पन्न करता है। प्रमेह में उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम रोज़ाना प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून मुग़ल्लिज़ मूसली : शीध्र पतन और प्रमेह आदि रोगों को दूर करता है। वीर्य को गाढ़ा करता है। पुरूषत्व को बढ़ाता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

मूसली सफ़ैद कैप्सूल : नपुंसकता, सामान्य दुर्बलता, अल्पशुक्राणुता (वीर्य में शुक्राणुओं की कमी), प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहना, समय से पूर्व बुढ़ापा, वीर्य के विकार, पौरूष शक्ति की कमी और शुक्रमेह में उपयोगी है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

सबातीन : वे नवयुवक जो बचपन की ग़लत गतिविधियों से मानवीय शक्तियों को समाप्त करने वाले रोग से पीड़ित हो जाते हैं और जिनके कारण रात को अनजाने में उनका वीर्यपात हो जाता है। उनके स्वप्नदोष की अधिकता का एक कारण यह भी है कि उनका वीर्य धीरे–धीरे क्षीण होकर उनको दुर्बल बना देता है। उनके ग़लत और अप्राकृतिक कार्य तथा अधिक संभोग क्रिया से वीर्य ग्रथि में जलन और दग़दग़ा पैदा होकर रक्त और वायु के थोड़े से भी दबाव पर वीर्यपात हो जाता है। सबातीन ऐसी शांतिदायक औषधि है जो वीर्य ग्रंथि की जलन और दग़दगे को समाप्त करके स्वप्नदोष बंद कर देती है।
सेवन विधि : 5 टिकिया निहार मुंह प्रातः काल दूध या पानी से खिलाएं। औषधि सेवन करने के एक घंटे बाद नाश्ता करें। भारी, बादी, खट्टी तथा चिकने पदार्थ का सेवन न करें। खाना सोने से कम से कम 2 घंटे पूर्व लेना चाहिए।

सफ़ूफ़ असलुस्सूस : वीर्य के पतलेपन और तीनों प्रकार के प्रमेह में लाभकर है। शीघ्रपतन को दूर करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल दूध से खिलाएं।

सफ़ूफ़ बीजबंद : वीर्य को गाढ़ा करता है। प्रमेह, शीघ्रपतन, वीर्यस्राव और स्वप्नदोष के लिए अति लाभकर है।
सेवन विधि : 5 ग्राम ताज़ा दूध से प्रातः काल खिलाएं।

हब्बे जिर्यान ख़ास : हर प्रकार के प्रमेह को दूर करती है। गुर्दे और मूत्राशय को शक्ति देती है। पेशाब के साथ या बाद में धात का आना या धात की बिगड़ी हुई क्रिया को ठीक करती है। पेशाब की जलन को दूर करती है।
सेवन विधि : 1–1 गोली प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

नोट : अप्सरा एड, औलिगो–एस, कुश्ता नुक़रा, कुश्ता बैज़ा मुर्ग़, कुश्ता मरवारीद, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल, बीजबंद कैप्सूल, माजून अस्पंद सोख़्तनी, माजून सालब, लबूब बारिद, लबूब कबीर, विग–विट, शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर, शिलाजीत कैप्सूल, हब्बे जदवार और हब्बे सलाजीत भी स्वप्नदोष और प्रमेह की अधिकता को दूर करते हैं।

शीघ्र वीर्य पतन
(Premature Ejaculation)

अप्सरा एड : स्नायविक विकारों तथा शरीर के प्रमुख अंगों की शारीरिक अव्यवस्था को दूर करती है। शारीरिक अवयवों, मासपेशियों तथा ऊतकों को मज़बूत बनाती है, शक्ति प्रदान करती है तथा संभोग कार्य में सक्षम बनाती है। सहनशक्ति, स्तम्भनता तथा काम शक्ति को बढ़ाती है। वीर्य की प्रचुर मात्रा में उत्पत्ति करती है और रूकावट की शक्ति को बढ़ाती है।
सेवन विधि : 1 गोली संभोग से 2 घंटे पूर्व भोजन पचने के पश्चात 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग तक कुछ न खाएं। अधिक कमज़ोरी की सूरत में और चिरगामी प्रभाव के लिए रोज़ाना आधी गोली सोते समय गर्म दूध के साथ सेवन कराएं।

गोली वाजिद नवाबी : स्नायविक विकारों तथा शरीर के प्रमुख अंगों की शारीरिक अव्यवस्था को दूर करती है। शारीरिक अवयवों, मासपेशियों तथा ऊतकों को मज़बूत बनाती है, शक्ति प्रदान करती है तथा संभोग कार्य में सक्षम बनाती है। सहनशक्ति, स्तम्भनता तथा काम शक्ति को बढ़ाती है। वीर्य की प्रचुर मात्रा में उत्पत्ति करती है और रूकावट की शक्ति को बढ़ाती है।

सेवन विधि : 1 गोली संभोग से 2 घंटे पूर्व भोजन पचने के पश्चात 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग तक कुछ न खाएं। अधिक कमज़ोरी की सूरत में और चिरगामी प्रभाव के लिए रोज़ाना आधी गोली सोते समय गर्म दूध के साथ सेवन कराएं।

हब्बे निशात : रूकावट तथा पुरूषत्व शक्ति को बढ़ाती है। इसके लगातार सेवन से वीर्य का पतलापन तथा शीघ्र पतन की शिकायत जल्द दूर हो जाती है।
सेवन विधि : 1 गोली संभोग से 2 घंटे पूर्व भोजन पचने के पश्चात 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग तक कुछ न खाएं। अधिक कमज़ोरी की सूरत में और चिरगामी प्रभाव के लिए नित्य आधी गोली रोज़ाना सोते समय गर्म दूध के साथ सेवन कराएं।

हब्बे मुक़व्वी नुक़रई : शीघ्र प्रभावी व शक्तिदायक होने के साथ उत्तेजना को रोकने वाली गोलियां हैं। धीरे–धीरे आंतरिक विकारों को ठीक करके पुनः शक्ति और यौवन का संचार करती हैं।
सेवन विधि : एक गोली संभोग से दो घंटे पूर्व भोजन पूरी तरह पच जाने के बाद 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग तक कुछ न खिलाएं। यह गोली दो घंटे में अपना प्रभाव दिखाती है। समूचे लाभ के लिए आधी गोली रोज़ाना रात को सोते समय दूध से खिलाएं।

हब्बे मुमसिक ख़ास : बहुत शक्तिदायक और वीर्य स्खलन में ठहराव लाने वाली, संभोग क्रिया में ठहराव और आनंद लाने वाली हैं।
सेवन विधि : एक गोली रोज़ाना रात को सोते समय दूध से खिलाएं। सामयिक लाभ के लिए संभोग से दो घंटे पूर्व खाना पूरी तरह पच जाने के बाद एक गोली 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग क्रिया तक कुछ न खिलाएं। यह अपना लक्षण एक घंटे में प्रकट करती है।

हब्बे मुमसिकी नुक़रई : बहुत शक्तिदायक और वीर्य स्खलन में ठहराव लाने वाली, संभोग क्रिया में ठहराव और आनंद लाने वाली हैं।
सेवन विधि : एक गोली रोज़ाना रात को सोते समय दूध से खिलाएं। सामयिक लाभ के लिए संभोग से दो घंटे पूर्व खाना पूरी तरह पच जाने के बाद एक गोली 250 मिली लीटर गर्म दूध से खिलाएं। गोली खिलाने के बाद संभोग क्रिया तक कुछ न खिलाएं। यह अपना लक्षण एक घंटे में प्रकट करती है।

नोट : अक़रक़राह कैप्सूल, कुश्ता क़लई, कुश्ता तिला, कुश्ता नुक़रा, कौंच कैप्सूल, गोखरू कैप्सूल, तिला मुमसिक ख़ास, जीवन तिलाई पिल्ज़, देहल्वी जलाल कैप्सूल, माजून अस्पंद सोख़तनी, माजून जलाली, माजून मुग़ल्लिज़, माजून मुग़ल्लिज़ जवाहर, माजून मुग़ल्लिज़ मूसली, मूसली सफ़ैद कैप्सूल, सफ़ूफ़ असलुस्सूस, सफ़ूफ़ बीजबंद, हब्बे जदवार, हब्बे मुक़व्वी तिलाई तथा हब्बे सलाजीत भी शीघ्र वीर्य पतन के लिए अचूक औषधियां हैं।

वीर्य स्राव
(Hydrospermia)

औलिगो–एस, इकसीर जिर्यान, कुश्ता क़लई, कुश्ता तिला, कुश्ता नुक़रा, कुर्स जिर्यान, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, जवारिश ज़रऊनी सादा, जीवन तिलाई पिल्ज़, टैस्ट्रॉन, देहल्वी आर्द खुर्मीन कैप्सूल, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल, बीजबंद कैप्सूल, माजून आर्द खुर्मा, माजून मुग़ल्लिज़, माजून मुग़ल्लिज़ जवाहर, माजून मुग़ल्लिज़ मूसली, माजून सालब, शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर, सुपारी पाक

पाउडर, सफूफ़ असलुस्सूस, सफूफ़ बीजबंद, हब्बे अंबर मोमयाई, हब्बे जिर्यान ख़ास, हब्बे निशात, हब्बे मुक़्वी तिलाई तथा हब्बे मुक़्वी नुक़रई वीर्य स्राव के लिए अचूक औषधियां हैं।

वीर्य की कमी (Oligospermia)

औलिगो–एस : इस में शुक्राणुओं को उत्पन्न करने वाले पदार्थ होते है। जिन लोगों को सन्तान नही होती उनके अन्दर शुक्राणु उत्पन्न करके उनकी इस कमी को पूरा करता है। शरीर की सामान्य गरिमा को भी बढ़ाता है।

सेवन विधि : दो कैप्सूल दिन में दो बार एक गिलास दूध के साथ सेवन कराएं। इसे 3–4 माहं तक सेवन कराएं।

गोखरू कैप्सूल : अशुक्राणुता (वीर्य में शुक्राणुओं का अभाव), कामलिप्सा में कमी, नपुंसकता, प्रोस्टेट ग्रन्थि का आकार बढ़ना, मूत्राशय में पथरियां, मूत्र में जलन, ग्लीट, सुज़ाक, वीर्य का पतलापन, मूत्र को रोकने में अक्षमता, वृक्क की दुष्क्रिया, पुरूषों में प्रसवन अशक्ति, अल्पशुक्राणुता, शीघ्र वीर्य पतन, वृक्क में कष्ट और पौरूष शक्ति की कमी के लिए अचूक औषधि है।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक या दो कैप्सूल भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

जौहर ख़ुसिया : वीर्य की उत्पत्ति बढ़ाकर उसे गाढ़ा करता है तथा वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाकर पुरूषत्व की कमज़ोरी को दूर करता है। साथ ही सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। शरीर की सामान्य गरिमा को भी बढ़ाता है।

सेवन विधि : एक ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं। अगर 5 ग्राम लबूब कबीर या माजून सालब में मिलाकर खिलाएं तो ऊपर से दूध अवश्य पिलाएं।

टैस्ट्रॉन : वीर्य की उत्पत्ति बढ़ाकर उसे गाढ़ा करता है तथा वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाकर पुरूषत्व की कमज़ोरी को दूर करता है। साथ ही सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। शरीर की सामान्य गरिमा को भी बढ़ाता है।

सेवन विधि : 2 कैप्सूल प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

नोट : अप्सरा एड, कुश्ता क़लई, कुश्ता तिला, कौंच कैप्सूल, गोली वाजिद नवाबी, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, जवारिश ज़रऊनी सादा, जीवन तिलाई पिल्ज़, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, देहल्वी जलाल कैप्सूल, देहल्वी ज़रऊन सादा कैप्सूल, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल, माजून जलाली, माजून प्याज़, माजून फ़लासफ़ा, माजून सालब, मूसली सफ़ैद कैप्सूल, लबूब कबीर, शिलाजीत एक्स्ट्रा पावर, हब्बे अंबर मोमियाई, हब्बे जदवार तथा हब्बे मुक़्वी नुक़रई वीर्य की कमी में भी उपयोगी हैं।

लिंग का ढीला और टेढ़ापन (Atrophy of the Penis and Loss of Erection)

तिला ख़ास : लिंग की दुर्बलता और स्थिलता दूर करता है। लिंग में रक्त प्रवाह को तेज़ करता है और सेक्स आनन्द को बढ़ाता है।

प्रयोग विधि : आधा ग्राम यह तिला लेकर लिंग की पुश्त और दाएं–बाएं भाग पर धीरे–धीरे हल्के हाथ से तीन मिनट तक मालिश करें। लिंग का मुंह और सीवन बचाएं। ऊपर से गर्म पान बांध दें। सुबह को पान खोलकर गर्म पानी से लिंग को धो लें। अगर कुछ दाने निकल आएं या छाला पड़ जाए तो समझें यह अच्छा लक्षण है। तब तिला का प्रयोग बंद करके चंबेली का तेल दानों पर दिन में तीन बार लगाएं। जब दाने ठीक हो जाएं तो फिर यही क्रिया दौहराएं। कई बार करते रहें। इस बीच न तो घोड़े की सवारी करें, न साइकिल पर चढ़ें और न संभोग करें।

तिला दारचीनी : जवानी के कुकर्मों की वजह से लिंग की कोमल रगों में गंदा पानी जमा हो जाता है। जिसके कारण लिंग दुर्बल हो जाता है और उस पर विषैले स्राव से भरी हुई नीली रगें स्पष्ट होने लगती है। यह तिला इन शिकायतों के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से लिंग के भीतरी स्नायुओं में शक्ति उत्पन्न होकर समस्त विकार दूर हो जाते हैं।

प्रयोग विधि : आधा ग्राम यह तिला लेकर लिंग की पुश्त और दाएं–बाएं भाग पर धीरे–धीरे हल्के हाथ से तीन मिनट तक मालिश करें। लिंग का मुंह और सीवन बचाएं। ऊपर से गर्म पान बांध दें। सुबह को पान खोलकर गर्म पानी से लिंग को धो लें। अगर कुछ दाने निकल आएं या छाला पड़ जाए तो समझें यह अच्छा लक्षण है। तब तिला का प्रयोग बंद करके चंबेली का तेल दानों पर दिन में तीन बार लगाएं। जब दाने ठीक हो जाएं तो फिर यही क्रिया दौहराएं। कई बार करते रहें। इस बीच न तो घोड़े की सवारी करें, न साइकिल पर चढ़ें और न संभोग करें।

तिला बेनज़ीर : बचपन के कुकर्मों के कारण या बुढ़ापे की वजह से जो लैंगिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें दूर करता है।
प्रयोग विधि : आधा ग्राम यह तिला लेकर लिंग की पुश्त और दाएं बाएं भागों पर धीरे–धीरे हल्के हाथ से तीन मिनट तक मालिश करें। लिंग का मुंह सीवन छोड़ दें। ऊपर से गर्म पान बांध दें। सुबह को पान खोल कर गर्म पानी से लिंग को धो डालें। अगर कुछ दाने निकल आएं या काला पड़ जाए तो यह शुभ लक्षण है। तब तिला का प्रयोग बंद करके चंबेली का तेल दानों पर दिन में तीन बार लगाएं। जब दाने ठीक हो जाएं, फिर यही क्रिया करें। जब तक लिंग के विकार दूर न हों इसी प्रकार कई बार करें। इस बीच घोड़े या साइकिल पर न चढ़ें और न संभोग करें।

तिला मुक़व्वी : लिंग की दुर्बलता और स्थिलता दूर करता है। लिंग में शक्ति और हरकत पैदा करता है। बुढ़ापे के कारण काम शक्ति में जो स्थिलता आ जाती है उसे दूर करता है।
प्रयोग विधि : आधा ग्राम यह तिला लेकर लिंग का मुंह और सीवन बचाकर पुश्त और दाएं–बाएं भागों पर धीरे–धीरे हाथ से तीन मिनट तक मालिश करें। बाद में मुलायम कपड़े की पट्टी लपेट दें और हल्की सी सिकाई करें। सुबह को पट्टी खोलकर गर्म पानी से लिंग को धो डालें। अगर कुछ दिनों में दाने निकल आएं या छाला पड़ जाए जो अच्छा लक्षण है, तब तिला का प्रयोग बंद करके चंबेली का तेल दानों पर दिन में तीन बार लगाएं। जब दाने ठीक हो जाएं तो फिर यही क्रिया दोहराएं। जब तक लिंग के समस्त विकार ख़त्म न हो जाएं कई बार करते रहें। इस बीच न तो घोड़े की सवारी करें, न साइकिल पर चढ़ें और न संभोग करें।

तिला सुर्ख़ : प्रमेह, सम लैंगिकता (हस्तमैथुन) जैसे कुकर्मों के कारण से लिंग की कोमल संरचना विकृत हो जाती है और लिंग में टेढ़ापन और ढीलापन आ जाता है। ये समस्त दोष इस तिला के प्रयोग से ठीक हो जाते हैं।
प्रयोग विधि : आधा ग्राम यह तिला लेकर लिंग की पुश्त और दाएं बाएं भागों पर धीरे–धीरे हल्के हाथ से तीन मिनट तक मालिश करें। सीवन और लिंग का मुंह बचाएं। ऊपर से पान गर्म करके बांधे। सुबह को पान खोलकर गर्म पानी से लिंग को धो डालें। अगर कुछ दिनों में दाने निकल आएं तो समझें आप का प्रयोग सफल है। तब तिला का प्रयोग बंद करके चंबेली का तेल दानों पर दिन में तीन बार लगाएं। जब दाने ठीक हो जाएं तो फिर यही क्रिया दोहराएं। कई बार करते रहें। इस बीच न तो घोड़े की सवारी करें, न साइकिल पर चढ़ें और न संभोग करें।

दवाए टकोर : इस औषधि का प्रयोग दवाए मालिश के बाद कराया जाता है। इसके प्रयोग से लिंग की स्फंजी रचना में ख़ून का बहाव ठीक प्रकार होने लगता है जिसके कारण लिंग में फैलने और बढ़ने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है और यौवनकाल के कुकर्मों तथा अप्राकृतिक गतिविधियों से उत्पन्न लैंगिक विकार दूर हो जाते हैं। जिससे लिंग पर मले जाने वाले शक्तिशाली तिलाओं का शीघ्र प्रभाव होने लगता है।
प्रयोग विधि : इस दवा की तीन–तीन ग्राम की दो पोटलियां कपड़े की बनाकर 25 मिली लीटर गर्म सरसों के तेल में मिलाकर के लिंग पर चारों ओर जड़ और पेडू और जंघासों में टकोर की जाती है। जब एक पोटली ठंडी हो जाए तो दूसरी पोटली गर्म तेल में भिगोकर प्रयोग कराएं। ठंडी पोटली को गर्म करने के लिए उसी गर्म तेल में भिगोकर प्रयोग कराएं। ठंडी पोटली को गर्म करने के लिए उसी गर्म तेल में डाल दें। लगभग पंद्रह–बीस मिनट बाद यही क्रम जारी रखें। उसके बाद फलोलैन या मुलायम कपड़े की पट्टी लिंग पर लपेट दें।

दवाए मालिश : यह दवाए टकोर से पूर्व प्रयोग की जाती है। इस दवा के प्रयोग से लिंग के पुट्ठे नर्म हो जाते हैं और लिंग की बनावट को बढ़ने में सहायता मिलती है।
प्रयोग विधि : एक ग्राम थोड़ा गर्म करके लिंग, पेडू, जंघासों में हल्के हाथ से दस मिनट तक मालिश कराएं। मालिश के बाद लिंग पर कपड़े की पट्टी लपेट दें। सुबह को पट्टी खोलकर गर्म पानी से धो दें।

पीनाइल ऑयल : लिंग के मोटा होने के लिए बहुत उपयोगी है। लिंग की कमज़ोरी भी दूर करता है।
सेवन विधि : लिंग पर हल्के गर्म तेल की मालिश करें।

पीनाइल कैप्सूल : शिश्न को आवश्यक आहार पहुंचाती है। शिश्न को प्राकृतिक ढ़ंग से लंबा और मोटा करने के साथ–साथ उसके स्वास्थ्य के कई पहलुओं को सुधारती है। यह शिश्न को प्राकृतिक ढंग से लंबा और मोटा करने की औषधि है जो सम्भोग के दौरान पुरूष के शिश्न में रक्त प्रवाह को बढ़ाती है जिससे कठोरता व देर तक लेंगिक उत्तेजना बनी रहती है। पीनाइल कैप्सूल सेक्स आनन्द को बढ़ाती है। इसके प्रयोग से कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।

सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में 2 बार खाने के साथ सेवन कराएं।

रोग़न ख़रातीन : लिंग में शक्ति और लंबाई लाता है।
प्रयोग विधि : लिंग पर हल्के गर्म तेल की मालिश करके गर्म पान बांध दें।

रोग़न जोंक : लिंग के स्नायुओं और पुट्ठों को शक्ति देकर लिंग में रक्त प्रवाह को तेज़ करता है।
प्रयोग विधि : लिंग पर हल्के गर्म तेल की मालिश करके गर्म पान बांध दें।

रोग़न बीर बहूटी : लिंग के मोटा होने के लिए बहुत उपयोगी है। लिंग की कमज़ोरी भी दूर करता है।
प्रयोग विधि : लिंग पर हल्के गर्म तेल की मालिश करके गर्म पान बांध दें।

वाजिद नवाबी ऑयल : शिश्न को आवश्यक आहार पहुंचाती है। शिश्न को प्राकृतिक ढ़ंग से लंबा और मोटा करने के साथ–साथ उसके स्वास्थ्य के कई पहलुओं को सुधारती है। यह शिश्न को प्राकृतिक ढंग से लंबा और मोटा करने की औषधि है जो सम्भोग के दौरान पुरूष के शिश्न में रक्त प्रवाह को बढ़ाती है जिससे कठोरता व देर तक लेंगिक उत्तेजना बनी रहती है। इसके प्रयोग से कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।
सेवन विधि : लिंग पर हल्के गर्म तेल की मालिश करें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अल अहमर, असबी प्लस, कुश्ता तिला, तिला मुमसिक ख़ास, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, देहल्वी सालब मिसरी कैप्सूल, माजून जालीनूस लूलवी, माजून सालब और लबूब कबीर का सेवन भी लिंग का ढीला और टेढ़ापन में उपयोगी हैं।

बैनाइन प्रोस्टेटिक हाइपरप्लेसिया (Benign Prostatic Hyperplasia)

प्रोस्टेट–बी एच : बैनाइन प्रोस्टेटिक हाइपरप्लेसिया के लिए बिना हानि के गुणकारी औषधि है। ये मूत्र की मात्रा को बढ़ाती है, सूजन को कम करती है जिससे मूत्र खुलकर आता है।
सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार पानी से सेवन कराएं।

नोट : गोखरू कैप्सूल भी इसमें लाभदायक है।

अंडकोषों की सूजन (Orchitis)

ज़माद वर्म उन्सेयेन : अंडकोषों में चोट लग जाने तथा झटका लगने से सूजन आ जाती है। यह कमी किसी रोग से भी हो जाती है। सूजन नई हो या पुरानी, इस ज़माद के प्रयोग से ठीक हो जाती है।
प्रयोग विधि : 10 ग्राम ज़माद हरी मकोह के पानी में मिलाकर लेप करें और उपर से अरंड का पत्ता बांध दें।

नोट : इतरीफ़ल शाहतरा और माजून उश्बा भी अंडकोषों की सूजन दूर कर देते हैं।

अंडकोषों की खाज (Itching of the Testicles)

माजून चोबचीनी, शर्बत उन्नाब, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन अंडकोषों की खाज को दूर करता है।

स्त्रियों के विशेष रोग (Diseases of Females)

श्वेत प्रदर और गर्भाशय की सूजन (Leucorrhoea and Metritis)

माजून मोचरस : बच्चेदानी के गंदे पदार्थ को खुश्क करती है। गर्भाशय को शक्ति देती है तथा श्वेत प्रदर में उपयोगी है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ सेवन कराएं।

ल्यूको–क्योर : श्वेत प्रदर तथा गर्भाशय की सूजन की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत आदि कोमल अंगों को शक्ति देती है और सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करती है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में 2 बार पानी के साथ सेवन कराएं।

सफ़ूफ़ सीलान : श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) के लिए उपयोगी औषधि है।
सेवन विधि : 5 ग्राम ताज़े पानी से खिलाएं।

सीलानी : आजकल 75 प्रतिशत स्त्रियां श्वेत प्रदर रोग से ग्रस्त है। इस रोग में योनि (टंहपदं) में खाज होती है। कमर में दर्द, पेंडू में भारीपन और

दर्द की शिकायत रहती है। अंडे की सफेदी की तरह एक सफेद चिपचिपा द्रव्य निकलता है। पेशाब बार–बार आता है, चेहरा बेरौनक़ हो जाता है तथा तबीअत निढाल रहती है। ऐसी अवस्था में सीलानी बहुत लाभकर है।

सेवन विधि : 2 टिकिया प्रातः काल दूध से खिलाएं। अगर दूध में मक्खन मिलाकर पिलाया जाए तो जल्दी आराम होता है। भारी, बादी, खट्टी तथा चिकने पदार्थ का सेवन न करें।

हब्बे मर्वारीदी : श्वेत प्रदर तथा गर्भाशय की सूजन की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत आदि कोमल अंगों को शक्ति देती है और सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करती है।

सेवन विधि : एक–एक गोली प्रातः और सायंकाल दूध या 20 मिली लीटर अर्क़ अंबर के साथ सेवन कराएं। गर्मी के मौसम में केवल पानी के साथ खिलाएं। गर्भावस्था में इसका सेवन कभी न कराएं।

नोट : अशोका कैप्सूल, इकसीर ख़वातीन, इकसीर ख़वातीन–SF, कुश्ता बैज़ा मुर्ग़, कुश्ता मरवारीद, कुश्ता सदफ़, ख़मीरा मरवारीद, देहल्वी डी वर्द मुरक्कब कैप्सूल, फ़ीमोन जेली, मरहम दाख़लियून, माजून दबीदुल वर्द, माजून मुक़व्वी रहम, माजून सुपारी पाक, मूसली सफ़ैद कैप्सूल, सतावर कैप्सूल और सुपारी पाक पाउडर भी श्वेत प्रदर व गर्भाशय की सूजन में लाभकर हैं।

बच्चेदानी की कमज़ोरी (Atony of the Uterus)

माजून मुक़व्वी रहम : बच्चेदानी के रोग जैसे बच्चेदानी की सूजन, बीजवाहिनी की सूजन, बीज कोष की सूजन आदि में उपयोगी है। बच्चेदानी के लिए शक्तिदायक होने के कारण बांझपन और गर्भपात रोकने में अचूक है। इसके अतिरिक्त श्वेत प्रदर और हिस्टीरीया में भी सेवन कराया जा सकता है। यह माजून खाने वाली स्त्रियों का सौंदर्य और स्वास्थ्य सदा के लिए बना रहता है।

सेवन विधि : 5 ग्राम रोज़ाना प्रातःकाल गर्म दूध के साथ खिलाएं।

सुपारी पाक पाउडर : स्त्रियों के श्वेत प्रदर और मासिक धर्म की अनियमितता के लिए सर्वश्रेष्ठ औषधि है। यह बच्चेदानी के उन विकारों को दूर करती है जिनके कारण गर्भ धारण नहीं होता। जोड़ों और कमर के दर्द को दूर करती है। स्त्रियों के स्वास्थ्य की रक्षा करती है। उस के अतिरिक्त यह औषधि पुरूषों की क्षीण कामशक्ति और वीर्यपतन में भी उपयोगी है।

सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रोज़ाना प्रातःकाल निहार मुंह दूध से खिलाएं। अगर रोग पुराना न हो तो यही मात्रा शाम को भी खिलाएं। स्त्रियों को मासिक धर्म के दिनों में और गर्भ के नवें महीने से बच्चा पैदा होने के 20 दिन बाद तक यह दवा न खिलाएं। पुरूषों को भी उन के विशेष रोगों के लिए उपर्युक्त विधि के अनुसार सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अशोका कैप्सूल, इकसीर ख़वातीन, इकसीर ख़वातीन–SF, अर्क़ माउल्लहम ख़ास, अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा, फ़ीमोन जेली, माजून सुपारी पाक, माजून हमल अंबरी अलवी ख़ानी और सतावर कैप्सूल भी बच्चेदानी की दुर्बलता में लाभकर हैं।

गर्भपात (Threatened Abortion)

माजून हमल अंबरी अलवी ख़ानी : गर्भाशय की दुर्बलता से जिन स्त्रियों का बार–बार गर्भपात होता है या जिन के बच्चे जन्मोपरांत बाल मिर्गी से ग्रस्त होकर जीवित न रहते हों या सूख–सूख कर मर जाते हों इस माजून के सेवन से गर्भपात से राहत मिल जाती है और अगला बच्चा स्वस्थ पैदा होता है। इसका सेवन गर्भ के तीसरे महीने से शुरू कराकर गर्भ के सातवें महीने के अंत तक चालू रखें।

सेवन विधि : गर्भ के तीसरे महीने से सातवें महीने तक रोज़ाना 5 ग्राम प्रातःकाल 250 मिली लीटर दूध के साथ सेवन कराएं।

नोट : माजून मुक़व्वी रहम और सतावर कैप्सूल का सेवन भी गर्भपात से बचाए रखता है।

गर्भ धारण में असुविधा (Inability to Conceive)

फ़ीमोन जेली : गर्भ धारण की क्रिया को सुचारू करती है और जनन के बाद की दुर्बलता को दूर करती है। श्वेत प्रदर की शिकायत को दूर करती है। कमर के दर्द को राहत देती है। पौरूष शक्ति में वृद्धि करती है।

सेवन विधि : प्रातःकाल 10 ग्राम 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

माजून सुपारी पाक : गर्भ धारण की क्रिया को सुचारू करती है और जनन के बाद की दुर्बलता को दूर करती है। श्वेत प्रदर की शिकायत को दूर

करती है। कमर के दर्द को राहत देती है। पौरूष शक्ति में वृद्धि करती है।
सेवन विधि : प्रातःकाल 10 ग्राम 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

हब्बे हमल : जिन स्त्रियों को मासिक धर्म नियमानुसार आता है परन्तु किसी भीतरी विकार के कारण गर्भ स्थापना न होती हो तो इसका सेवन उस ख़राबी को दूर करके गर्भ धारण में सहायक सिद्ध होता है।
सेवन विधि : 1 गोली मासिक धर्म के दिनों से निबटने के पश्चात प्रातः तथा सायंकाल 250 मिली लीटर दूध से खिलाएं। 3 दिन खिलाने के पश्चात चोथे दिन संभोग कराएं। इसी प्रकार दूसरे तीसरे महीने सेवन कराएं जब तक गर्भ धारण न हो जाए।

नोट : माजून मुक़व्वी रहम और सतावर कैप्सूल भी गर्भस्थापन में उपयोगी हैं।

रक्तप्रदर (Metrorrhagia)

अशोका कैप्सूल : रक्तप्रदर, गर्भाशय विकार, मासिक धर्म बन्द होना (एमेनोरिया), कष्टार्तव, श्वेतप्रदर, अत्यार्तव, गर्भाश्य/डिम्बग्रंथि फाइब्रॉएड और गर्भाश्य का नीचे उतरना में लाभकर है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1–1 कैप्सूल दो बार पानी से सेवन कराएं।

मासिक धर्म का अधिक मात्रा में आना (अत्यार्त्तव) (Menorrhagia)

कुश्ता अक़ीक़, कुश्ता मरजान, कुश्ता सदफ़, कुर्स कहरूबा, कुर्स बंदिश ख़ून, माजून मोचरस, माजून सुपारी पाक, मोचरस कैप्सूल, फ़ीमोन जेली और शर्बत अंजबार भी अत्यार्त्तव में उपयोगी औषधियां हैं।

कष्टार्त्तव और अनार्त्तव (Dysmenorrhoea and Amenorrhoea)

इकसीर ख़वातीन : मासिक धर्म के दिनों में गर्भाशय की असहनीय पीड़ा को दूर करती है। प्रायः स्त्रियों को गर्भाशय की दुर्बलता अर्थात बीजकोष प्रक्रिया के बिगाड़ से मासिक धर्म की अवधि के दौरान असहनीय पीड़ा भोगनी पड़ती है। सारे शरीर में दर्द, पिंडलियो में ऐंठन और पेट में ज़बर्दस्त बेचैनी होती है। मासिक धर्म खुलकर नहीं होता। इकसीर ख़वातीन मासिक धर्म की अनियमितता, रूकावट या दर्द के साथ आने, हिस्टीरिया आदि में उपयोगी है। यह गर्भाशय को शक्ति प्रदान करती है और बीजकोष के बिगाड़ को दूर करके रूके हुए रक्त को अपेक्षित मात्रा में बाहर निकालती हैं। श्वेत प्रदर में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रतिदिन गुनगुने पानी या दूध के साथ सेवन कराएं। गर्भावस्था तथा मासिक धर्म के दिनों में सेवन न कराएं।

इकसीर ख़वातीन–SF : इसके वही लाभ हैं जो उपर इकसीर ख़वातीन सिरप के लिखे गए हैं लेकिन यह शुगर–फ्री है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर प्रतिदिन गुनगुने पानी या दूध के साथ सेवन कराएं। गर्भावस्था तथा मासिक धर्म के दिनों में सेवन न कराएं।

रेग्युलेट : अनियमित मासिक धर्म, प्राइमरी व सेकण्ड्री एमेनोरिया और थोड़ी मात्रा में अथवा कभी–कभी मासिक धर्म होने की स्थिति में लाभदायक है। यह हार्मोन रहित जड़ी बूटियों से तैयार की हुई औषधि है जो औरतों के सन्तानोत्पत्ति के अंगों को मज़बूत करता है और मासिक धर्म को सामान्य करता है।
सेवन विधि : 1–1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के बाद पानी से सेवन कराएं। गर्भावस्था तथा मासिक धर्म के दिनों में सेवन न कराएं।

हब्बे मुदिर : मासिक धर्म खुलकर लाती हैं।
सेवन विधि : मासिक धर्म आरम्भ होने से 3 दिन पूर्व यह गोलियां प्रातः, दोपहर और सायं पानी के साथ दें। मासिक धर्म के दिनों में सेवन न कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अशोका कैप्सूल और सतावर कैप्सूल भी कष्टार्त्तव और अनार्त्तव में उपयोगी हैं।

मासिक धर्म या ऋतु स्त्रव का रुक जाना (Pre and Post Menopause)

मैनसो–पी : यह प्राकृतिक जड़ी बूटियों के मिश्रण से बनी असरकारक दवा है जिसका सेवन या तो मासिक धर्म रुकने से पहले या बीच में या मासिक धर्म के रुकने के बाद होता है। इसमें बहुत सी जड़ी बूटियां हैं जिनमें नारी लिंग हार्मोन शामिल है। मैनोपॉज़ के बहुत से सामान्य लक्षण हैं जैसे अचानक गर्मी की लहरें दौड़ना और उसके पश्चात पसीना आना, चिड़चिड़ापन, मांसपेशियों में दर्द, यौनइच्छा में बदलाव, रात में पसीना आना, सिर दर्द, बार–बार पेशाब आना, जल्दी जागना,

जननांगों में सूखापन, मूड में बदलाव, नींद न आना, थकावट, शारीरिक भार बढ़ना, होंठ व ठोड़ी पर बाल उगना आदि। मैनसो–पी से उपर्युक्त रोगों में आराम मिलता है और हड्डियों में कैल्सियम को सोखने में मदद करके हड्डियों को मज़बूत बनाता है।

सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार दूध के साथ सेवन कराएं। इसे 6 महीने या उससे भी ज़्यादा दिन तक सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधि के अतिरिक्त अशोका कैप्सूल, मेथी कैप्सूल, रूह अर्क़ गुलाब और सतावर कैप्सूल भी उपयोगी हैं।

योनि का फैलाव (Vaginal Laxation)

माजून मोचरस, माजून सुपारी पाक, फ़ीमोन जेली, सतावर कैप्सूल, सीलानी और हब्बे मर्वारीदी फैली हुई योनि की शिकायत को दूर करने में लाभप्रद है।

योनि की खाज (Pruritus Vulvae)

इतरीफ़ल शाहतरा, माजून मोचरस, फ़ीमोन जेली, शर्बत उन्नाब और सीलानी का सेवन योनि में होने वाली खाज के लिए लाभकर है।

बच्चेदानी का बाहर निकलना (Prolapse of the Uterus)

अशोका कैप्सूल, माजून मुक़व्वी रहम, माजून मोचरस, माजून सुपारी पाक और फ़ीमोन जेली का सेवन बच्चेदानी (गर्भाशय) के बाहर निकल आने की अवस्था मे उपयोगी है।

यौनइच्छा की कमी (Depressed Libido)

फ़िमॉन : यह प्राकृतिक जड़ी बूटियों के मिश्रण से बनी असरकारक दवा है जो स्त्री की जननेंद्रियों में ख़ून का संचरण बढ़ाकर यौन, शारीरिक व मानसिक संतुष्टि प्रदान करती है। यौन, शारीरिक व मानसिक संतुष्टि मिलने से योनि में तरी आती है, योनि की मांसपेशियां ढ़ीली होती हैं जिसके कारण संभोग के दौरान आनन्द पैदा होता है। जिन स्त्रियों को संभोग उत्कर्ष प्राप्ति में कठिनाई होती है उनके लिए भी फ़िमॉन लाभदायक है। स्त्रियों की जननेंद्रियों में सुग्राहिता बढ़ाकर संभोग के दौरान ज़्यादा आनन्द पैदा करती है। फ़िमॉन संभोग उत्कर्ष प्राप्ति की तीव्रता को भी बढ़ाती है और सामान्य थकावट तथा सामान्य कमज़ोरी में भी लाभदायक है।

सेवन विधि : दो कैप्सूल रात को संभोग से 1 घंटा पहले और खाने के 1 घंटे बाद दूध के साथ सेवन कराएं। थकावट तथा सामान्य कमज़ोरी में एक कैप्सूल सुबह पानी के साथ सेवन कराएं।

सतावर कैप्सूल : कामलिप्सा में कमी, स्त्रियों में बांझपन, अनार्तव, कष्टार्तव, श्वेतप्रदर, मासिक धर्म के रुक जाने के उपरान्त बदलाव, मासिक धर्म के कारण ऐंठन, मासिक धर्म से पूर्व के कष्ट, जनने के पश्चात् दूध में कमी और योनि का सूखापन में उपयोगी है।

सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त कौंच कैप्सूल, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, फ़ीमोन जेली, लबूब कबीर और हब्बे अंबर मोमियाई भी यौनइच्छा की कमी को दूर करते हैं।

स्तन के आकार में कमी (Underdeveloped Breasts)

फ़र्म–अप : स्तन की कोशिकाओं में कार्य–कुशल विकास पैदा करता है। इसकी जड़ी बूटियों के गुण नारी लिंग हार्मोन जैसे होते हैं। इसके सेवन से शरीर उत्तेजित होकर यौवनारंभ के समय जो बढ़ने की प्रक्रिया का अनुभव होता है उसकी नक़ल करता है। स्तन–ग्रन्थियां दुबारा सक्रिय हो जाती हैं और नई व स्वस्थ स्तन की कोशिकाओं में विकास पैदा होता है और मौजूदा कोशिकाएं फूलने लगती हैं। फ़र्म–अप न केवल स्तन को दृढ़ रखता है बल्कि दबे हुए स्तन फूलने लगते हैं और ढीले स्तन सुडौल बनने लगते हैं। औरतें जिनके स्तन बढ़े और झुके हुए होते हैं उनके स्तन स्थिर रहते हैं या दृढ़ता के साथ बढ़ने लगते हैं। यह विकास प्राकृतिक, सुरक्षित और बहुत प्रभावशाली है। कैप्सूल में कोई रासायनिक हर्मोन्स नहीं हैं।

सेवन व प्रयोग विधि : कैप्सूल : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार खाने के बाद एक गिलास पानी के साथ दें। इसका परिणाम 20 दिन में नज़र आना शुरु हो जाएगा लेकिन इसके पूरे परिणाम में 3 से 6 महीने लग सकते हैं जो व्यक्तिगत एवं स्वास्थय तथा आयु पर निर्भर है।

लोशन : अपनी उंगली के सिरों पर आवश्कतानुसार लोशन को लेकर प्रत्येक स्तन पर लगाएं और धीरे–धीरे अपनी हथेली से गोलाई में उपर की ओर 3–5 मिनट तक मालिश करें ताकि लोशन त्वचा में सूख जाए। दांए हाथ से घड़ी की दिशा में और बायें हाथ घड़ी की उल्टी दिशा में इस प्रकार मालिश करें कि निपल पर हाथ न लगे। अधिक लाभ के लिए दिन में दो बार प्रयोग करें। केवल 20 दिनों में लाभ दिखने लगेगा फिर भी संपूर्ण लाभ के लिए उसे 6 माह का समय लगेगा। आयु, स्वास्थ्य, जेनेटिक तथ अन्य कारणों से अलग–अलग परिणाम आ सकते हैं।

नोट : मेथी कैप्सूल भी स्तन के आकार में कमी की दूर करते हैं।

बांझपन
(Sterility)

गोखरू कैप्सूल, देहल्वी एल0 कबीर कैप्सूल, फ़ीमोन जेली, माजून मुक़व्वी रहम, माजून मोचरस, माजून सुपारी पाक और लबूब कबीर का सेवन बांझपन की अवस्था में उपयोगी है।

वातोन्माद
(Hysteria)

इकसीर ख़वातीन, इकसीर ख़वातीन–SF, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला, तगर कैप्सूल, दवाउश्शिफ़ा, माजून नजाह और माजून मुक़व्वी रहम का सेवन वातोन्माद रोग को दूर भगाता है।

गर्भाशय की सख़्ती
(Hardening of the Uterus)

मरहम दाख़लियून : गर्भाशय की सूजन, बीजवाहिनी की सूजन, बीजकोष की सूजन को घुलाने के लिए अचूक औषधि है। बच्चेदानी की सूजन और सख़्ती को दूर करके बच्चेदानी की गतिविधि में नियमितता लाता है। रसौलियां और गिल्टियां इसके लगातार लगाने से घुल जाती है।
प्रयोग विधि : 5 ग्राम मरहम में 5 मिली लीटर हरी मकोह का पानी मिलाकर साफ़ कपड़े की बत्ती उसमें भिगोकर दाई से योनि में रखवाएं। अगर हरी मकोह न मिले तो केवल मरहम ही प्रयोग कराएं।

दूध की कमी
(Supressed Lactation)

पंबादाना कैप्सूल : जनने के पश्चात् दूध में कमी को दूर करता है। बच्चे की पैदाइश के बाद गर्भाशय के रुके हुए रक्त आदि को बाहर निकाल कर गर्भाशय को साफ़ करता है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 या 2 कैप्सूल दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

लैक्टा–एम : प्राकृतिक जड़ी बूटियों के मिश्रण से बनी असरकारक दवा है जो औरतों के स्तनों में दूध के बहाव को सुरक्षात्मक ढंग से बढ़ाती है और दूध की मात्रा में वृद्धि करती है। प्राचीन युग से दूध बढ़ाने के लिए जड़ी बूटियां सेवन होती आई हैं और पिछले दशक से इनकी लोकप्रियता और बढ़ गई है। इन जड़ी बूटियों में एक हार्मोन पाया जाता है जो दूध के बहाव को बढ़ाता है। बहुत सी औरतों में दूध पिलाने के दौरान उनका बच्चा शरीर में मौजूद मिनरल्ज़ (जो दूध के बहाव को बढ़ाते हैं) उन्हें वह ज़्यादा मात्रा में पहले ही चूस लेता है इसलिए उनमें दूध की कमी हो जाती है। ये जड़ी बूटियां दूध के बहाव और मात्रा में वृद्धि करने के साथ–साथ मां के शरीर में मिनरल्ज़ की मात्रा भी बढ़ाती हैं।
जब किसी मां के स्तनों में दूध की कमी हो जाती है चाहे वह गर्भनिरोधक गोलियों के सेवन के कारण हो या कभी–कभी बिना किसी कारण के जब बच्चा तीन या चार महीने का हो तो लैक्टा–एम मां के स्तनों में दूध की पैदावार बढ़ा देती है।
सेवन विधि : 2–3 कैप्सूल दिन में 2 बार दूध के साथ सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त मूसली सफ़ैद कैप्सूल, मेथी कैप्सूल और सतावर कैप्सूल भी दूध की कमी को दूर करते हैं।

दूध की अधिकता
(Galactorrhoea)

अगर किसी औरत की छातियों में दूध की उत्पत्ति आवश्यकता से अधिक बढ़ जाए तो माजून नानख़ाह के सेवन से सामान्य हो जाती है।

बच्चे की पैदाइश के बाद
(Post-Delivery)

अर्क़ ज़च्चा : बच्चे की पैदाइश के बाद गर्भाशय के रुके हुए रक्त आदि को बाहर निकाल कर गर्भाशय

को साफ़ करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर अर्क़ 25 मिली लीटर शर्बत बज़ूरी मोतदिल में मिलाकर प्रातः पिलाएं। सर्दी के मौसम में अर्क़ को गुनगुना सेवन कराएं।

अर्क़ दशमूल : बच्चे की पैदाइश के बाद गर्भाशय के रुके हुए रक्त आदि को बाहर निकाल कर गर्भाशय को साफ़ करता है। इसके कारण सर्दी लगने या नाक बहने से ज्वर और शरीर में पीड़ा होने को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर अर्क़ 25 मिली लीटर शर्बत बज़ूरी मोतदिल में मिलाकर प्रातः पिलाएं। सर्दी के मौसम में अर्क़ को गुनगुना सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अरबा, अर्क़ मकोह, कुल्थी कैप्सूल, कुलिया बज़ूरी–SF, पंबादाना कैप्सूल, शर्बत बज़ूरी मोतदिल और सतावर कैप्सूल भी बच्चे की पैदाइश के बाद लाभदायक हैं।

जोड़ों के रोग
(Diseases of the Joints)
गठिया, सन्धिशोथ, जोड़ों का दर्द तथा कमर का दर्द
(Rheumatism, Arthritis, Gout and Backache)

ओस्टोपेन आइण्टमेंट : कमर दर्द, अकड़ा हुआ कंधा, रीढ़ का दर्द, मोच, अर्क़ुन्निसा, जोड़ों का दर्द, शरीर में खिंचाव और दर्द और ऐंठन में लाभकर है।
प्रयोग विधि : दिन में 2–3 बार थोड़ा सा आइण्टमेंट दर्द के स्थान पर लगाएं और धीरे–धीरे मलें यहां तक कि तेल सूख जाए।

ओस्टोपेन टैबलेट्स : गठिया, कमरदर्द, मोच तथा पुट्ठों के दर्द एवं ऐंठन में उपयोगी है।
सेवन विधि : 2–2 टिकियां भोजनोपरांत दोनों समय पानी से दें।

ओस्टोपेन मसाज आयॅल : कमर दर्द, अकड़ा हुआ कंधा, रीढ़ का दर्द, मोच, अर्क़ुन्निसा, जोड़ों का दर्द, शरीर में खिंचाव और दर्द और ऐंठन में लाभकर है।
प्रयोग विधि : दिन में 2–3 बार थोड़ा सा तेल दर्द के स्थान पर लगाएं और धीरे–धीरे मलें यहां तक कि तेल सूख जाए।

एलोवेरा जेली : गठिया और कमर दर्द को दूर करता है। खांसी तथा दमे में उपयोगी है। आयु वर्ग के व्यक्तियों तथा नौजवानों के लिए जाड़ो में इसका सेवन विशेषकर उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

कुश्ता गौदन्ती : आतशक, जोड़ों का दर्द, जोड़ों की सूजन, फ़ालिज, लक़वा और हकलाहट के लिए लाभकर है। हर प्रकार के ज्वरों में भी लाभ पहुंचाता है।
सेवन विधि : 60 मिली ग्राम या दो टिकियां माजून सूरंजान या माजून जोगराज गूगल मे रख कर खिलाएं।

देहल्वी पी आर टैबलेट्स : कमर दर्द, अकड़ा हुआ कंधा, रीढ़ का दर्द, मोच, अर्क़ुन्निसा, जोड़ों का दर्द, शरीर में खिंचाव और दर्द और ऐंठन में लाभकर है।
सेवन विधि : 2–2 टिकियां भोजनोपरांत दोनों समय पानी से दें।

देहल्वी रोग़न फ़ास्फ़ोरस : कमर दर्द, रीढ़ का दर्द, मोच, अर्क़ुन्निसा, जोड़ों का दर्द और ऐंठन में उपयोगी है।
प्रयोग विधि : रूई की फुरैरी से थोड़ा सा तेल प्रभावित स्थान पर लगाकर धीरे–धीरे मलें यहां तक कि तेल सूख जाए। यह कार्य दिन में दो–तीन बार दौहराएं। तेल लगाते समय गर्मी का महसूस होना और धुंए का उठना और अंधेरे में चमकना इस बात के लक्षण हैं कि तेल में फ़ास्फ़ोरस मौजूद है।

देहल्वी सूरंजान मुफ़ासिल कैप्सूल : सदियों की आज़मया हुआ माजून सूरंजान का विकसित रूप है जो कैप्सूल के रूप में प्रस्तुत है। माजून सूरंजान की समस्त विशेषताओं के साथ देहल्वी सूरंजान मुफ़ासिल कैप्सूल निःसंदेह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करता है। गठिया, जोड़ों का दर्द और अर्क़ुन्निसा में राहत देती है। जोड़ों से गठिया के तत्वों को निकालती है। कब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

नोपेन टैबलेट्स : गठिया, कमरदर्द, मोच तथा पुट्ठों के दर्द एवं ऐंठन में उपयोगी है।
सेवन विधि : 2–2 टिकियां भोजनोपरांत दोनों

समय पानी से दें।

माजून चोबचीनी : समस्त शरीरांगों के दर्द को दूर करती है। विशेषतः कमर और जोड़ों के दर्द के लिए जिसका कारण आतशक हो बहुत लाभकर है। रक्त साफ़ करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या सायंकाल पानी से खिलाएं।

माजून सूरंजान : गठिया, जोड़ों का दर्द और अर्कुन्निसा में राहत देती है। जोड़ों से गठिया के तत्वों को निकालती है। कब्ज़ को दूर करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

रह्युमा : यह जड़ी बूटियों से बनायी जाने वाली अनोखी औषधि है जो सूजन को कम करती है और संधिवात व आमवात को रोकती तथा उसमें आराम पहुंचाती है। यह प्रोस्टेग्लैण्डिन के संश्लेषण को सुचारु करती है, जोड़ों की संवेदनशीलता को कम करती है, दर्द, सूजन और सख़्ती को बिना किसी दुष्प्रभाव के घटाती है। अतः इसे लम्बे समय तक सेवन कराया जा सकता है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में दो बार खाने के बाद सेवन कराएं।

रोग़न दर्द : कमर दर्द, अकड़ा हुआ कंधा, रीढ़ का दर्द, मोच, अर्कुन्निसा, जोड़ों का दर्द, शरीर में खिचाव और दर्द तथा ऐंठन में उपयोगी है।
प्रयोग विधि : दिन में 2–3 बार थोड़ा सा तेल प्रभावित स्थान पर लगाकर धीरे–धीरे मलें यहां तक कि तेल सूख जाए।

रोग़न बाबूना : गठिया के दर्द, कान के दर्द तथा अन्य प्रकार के दर्दों को शान्ति देता है। सूजन को घुलाता है।
प्रयोग विधि : हल्के गर्म तेल की मालिश करके रूई गर्म करके बांध दें। कान के दर्द में इसकी 1–2 बूंदे कान में डालें।

रोग़न मालकंगनी : स्नायुओं को शक्ति देता है। फ़ालिज, लक़्वा, जोड़ों के दर्द, जोड़ों की सूजन, अर्कुन्निसा और कमर के दर्द के लिए उपयोगी है।
प्रयोग विधि : हल्के गर्म तेल की मालिश करके ऊपर से गर्म रूई बांध दें।

सलाई–गुग्गुल कैप्सूल : सन्धिशोथ, कन्धे और घुटने के जोड़ के बर्सा का शोथ, फाइब्रोसाइटिस, कमर के निचले भाग में दर्द, प्रातः को जोड़ों का अकड़ जाना, मांसपेशियों की सूजन, अस्थिसन्धिशोथ, आमवात, गठियारूप सन्धिशोथ, और खेल के दौरान लगने वाली चोट में उपयोगी है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

हलवा घीकवार : गठिया और कमर दर्द को दूर करता है। खांसी तथा दमे में उपयोगी है। आयु वर्ग के व्यक्तियों तथा नौजवानों के लिए जाड़ो में इसका सेवन विशेषकर उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रात को सोते समय पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अक़रक़राह कैप्सूल, अश्वगन्धा कैप्सूल, अश्वगन्धा रस (संतरा रस युक्त), इम्यूनो–हल्दी, क़ुर्स मुसक्किन, कैलविट–सी, गुग्गल कैप्सूल, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, जौहर मुनक़्क़ा, देहल्वी जौहरी कैप्सूल, देहल्वी फ़लासफ़ीन कैप्सूल, देहल्वी ब्लू बाम, मांजून अज़ाराक़ी, माजून उश्बा, माजून तल्ख़, माजून फ़लासफ़ा, माजून सीर अलवी ख़ानी, रोग़न कीमिया, रोग़न सुर्ख़, रोग़न सूरंजान, सना कैप्सूल, हब्बे अज़ाराक़ी, हब्बे असगंद, हब्बे सूरंजान और हल्दी कैप्सूल भी गठिया, सन्धिशोथ, जोड़ों का दर्द तथा कमर का दर्द में सेवन व प्रयोग कराएं जा सकते हैं।

हड्डियों में छिद्रलता (Osteoporosis)

ऑस्टो–पी : यह जड़ी बूटियों व खनिज पदार्थों से बनाई जाने वाली असरकारक औषधि है जो हड्डियों की चयापचय में सहायता करती है और हड्डियों के घनत्व को बढ़ाती है। इसके सेवन से हड्डियों की छिद्रलता कम हो जाती है और हड्डियां कम टूटती हैं। इसमें प्राकृतिक कैल्सियम होता है इसलिए यह ख़ून में कैल्सियम का सन्तुलन बनाती है जिस से मूत्र ग्रंथि में कैल्सियम से बनने वाली पथरियों का ख़तरा नहीं होता। ऑस्टो–पी में शामिल प्राकृतिक नारी हार्मोन बिना किसी दुष्प्रभाव के विभिन्न हार्मोन बनाता है तथा उनमें सन्तुलन बनाये रखता है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में दो बार खाने के साथ सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधि के अतिरिक्त कैलविट–सी और पर्ल कैल्सियम भी हड्डियों में छिद्रलता में लाभदायक हैं।

खेल के दौरान घाव
(Sports Injuries)

हल्दी कैप्सूल : खेल के दौरान होने वाले घाव, जोड़ों के दर्द तथा संधिवात में लाभदायक है। यह प्रभावित जोड़ों और मांसपेशियों में रक्त संचारण बढ़ाकर मांसपेशियों, स्नायुओं तथा हड्डियों को शक्ति प्रदान करता है।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में दो बार खाने के साथ सेवन कराएं।

नोट : इस औषधि के अतिरिक्त इम्यूनो–हल्दी भी लाभदायक है।

कैल्सियम हीनता संलक्षण
(Calcium Deficiency)

कैलविट–सी : इसमें प्राकृतिक कैल्सियम और विटामिन–सी शामिल हैं। कैल्सियम स्वस्थ हड्डियों और मज़बूत दांतों के विकास के लिए आवश्यक है। गर्भवती महिलाओं, दूध पिलाने वाली मांओं, बच्चों और किशोरावस्था में कैल्सियम की आवश्यकता इस अवस्था में भोजन से प्राप्त होने वाले कैल्सियम की मात्रा से अधिक होती है। कैल्सियम हड्डियों की छिद्रलता (ऑस्टियोपोरोसिस) के लिये लाभदायक है तथा खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रण में रखता है। कैल्सियम स्नायुओं, मांसपेशियों तथा पाचन क्रिया को सहायता देती है, हृदय की मांसपेशियों तथा नींद को नियंत्रण में रखती है। कैल्सियम बच्चों के बढ़ने वाली उम्र में स्वस्थ हड्डियों के लिए, हड्डियों के जुड़ने में तथा कैल्सियम हीनता संलक्षण में लाभदायक है। विटामिन–सी उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) और कोलेस्ट्रॉल को कम करती है, ख़ून को पतला करती है और ऑक्सीकरण से बचाती है। विटामिन–सी धमनियों की दीवारों को मोटा एवं कठोर होने से रोकती है। विटामिन–सी की पर्याप्त मात्रा लेने से मस्तिष्क में रक्तस्राव तथा दिल का दौरा पड़ने से भी बचाव होता है।
सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार पानी के साथ दें।

पर्ल कैल्सियम कैप्सूल : इस कैप्सूल में 38 से 45 प्रतिशत प्राकृतिक कैल्सियम होता है जो स्वस्थ हड्डियों के विकास तथा मज़बूत दांतों के लिये अत्यन्त आवश्यक होता है। यह अस्थिभंगुरता (ऑस्टियोपोरोसिस) और ख़ून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रण में रखती है। कैल्सियम स्नायुओं, मांसपेशियों तथा पाचन क्रिया को सहायता देती है, हृदय की मांसपेशियों तथा नींद को नियंत्रण में रखती है। पर्ल कैल्सियम बच्चों के बढ़ने वाली उम्र में स्वस्थ हड्डियों के लिए, दूध पिलाने के समय, हड्डियों के जुड़ने में तथा कैल्सियम हीनता संलक्षण में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 1–1 कैप्सूल पानी के साथ दिन में दो बार सेवन कराएं। गर्भावस्था और दूध पिलाने के दौरान दिन में तीन बार सेवन कराएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त कुश्ता गाउदन्ती, कुश्ता मरवारीद, कुश्ता सदफ और ख़मीरा मरवारीद भी कैल्सियम हीनता संलक्षण में लाभकारी हैं।

रक्त विकार और त्वचा रोग
(Diseases due to Impure Blood and of the Skin)
फ़ुन्सी, घाव और खुजली
(Boils, Ulcers and Scabies)

अर्क़ उश्बा : ख़ून साफ़ करता है। आतशक में भी उपयोगी है। आतशक जनित रोग जैसे जोड़ों का दर्द, गठिया आदि को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर 5 ग्राम माजून उश्बा के साथ खिलाएं।

अर्क़ चिरायता : पित्तीय रोग, आतशक, प्यूमेह आदि में उपयोगी है। रक्त को विशुद्ध करके फ़ोड़े फ़ुन्सियों को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर 25 मिली लीटर शर्बत उन्नाब में मिलाकर सेवन कराएं।

अर्क़ मुण्डी : रक्त को साफ़ करता है। नेत्र ज्योती को सशक्त करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर शर्बत उन्नाब 25 मिली लीटर मिलाकर पिलाएं।

अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून : पित्तीय रोग, आतशक, प्यूमेह आदि में उपयोगी है। रक्त को विशुद्ध करके फ़ोड़े फ़ुन्सियों को दूर करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर 25 मिली लीटर शर्बत उन्नाब में मिलाकर सेवन कराएं।

अर्क़ शाहतरा : रक्त विकार के सारे रोगों में सेवन कराया जा सकता है। रक्त की बढ़ी हुई गरिमा और जोश को कम करता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर में 25 मिली लीटर शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलाएं।

नीम कैप्सूल : मुहासे, रक्त अशुद्धता, बालतोड़, मधुमेह, एग्ज़िमा, गर्मी दाने, आंत में कृमि, पीलिया, श्वेत कुष्ठ (बर्स), मलेरिया ज्वर, प्रतिरक्षा क्षमता के कारण निरन्तर संक्रमण, फुन्सी, त्वचा की सूजन एवं घाव में लाभदायक है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

फ्रेशेन अप : एक प्राकृतिक उत्पाद है जो सूजन नाशक है, एलर्जी दूर करने और त्वचा को मुलायम करने में गुणों से परिपूर्ण है। त्वचा को धूल आदि से साफ कर ठंडा रखता और निखारता है, साथ ही दाग धब्बों को दूर कर चिकनेपन को सामाप्त करता है। त्वचा में पानी की मात्रा सामान्य कर उसे चमकदार लचीला बनाता है। यह कोई सामान्य गुलाब जल नहीं बल्कि बोलत में बंद सुदर त्वचा है। अचानक गर्मी की लहर दौड़ना व पसीना आना, धूप से झुलसी त्वचा या सर्दियों के सूखेपन में जादू सा असर दिखाता है। नहाते समय पानी में फ्रेशन अप को थोड़ा स्प्रे, गिरी हुई तबियत अनिद्रा और उदासी दूर कर देता है। संक्रमण नाशक विरोधी, प्रतिदूषक और कीटाणुनाशक व ऐस्ट्रिंजेन्ट व सूजन नाशक होने की वजह से इसे छिलने, कटने या त्वचा पर चोट लगने में स्प्रे किया जा सकता है, त्वचा की एलर्जी और कीड़ों के काटने में भी लाभकारी है।
प्रयोग विधि : 2–3 बार चेहरे या ग्रस्त भाग पर स्प्रे करें अथवा आवश्यकतानुसार।

माजून उश्बा : ख़ून को साफ़ करता है। रक्त विकार से पैदा होने वाले समस्त रोग जैसे फ़ोड़े, फुन्सियों, गठिया, दाद, उपदंश, प्यूमेह और कोढ़ आदि में उपयोगी है। जोड़ों के दर्द में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातः और सायंकाल पानी से सेवन कराएं।

मुसफ़्फ़ी आज़म : रक्त सफ़ा है। फ़ोड़े, फुन्सी, दाद, खाज को दूर करता है। उपदंश और प्यूमेह में उपयोगी है। घावों को जल्दी सुखाता है। गठिया और कोढ़ में भी सेवन कराया जा सकता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातः और सांयकाल पानी के साथ सेवन कराएं।

शर्बत उन्नाब : ख़ून सफ़ा होने के अलावा खांसी, सिरदर्द और सीने के रोगों में फ़ायदा करता है। ख़ून के उबाल को रोकता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत उश्बा ख़ास : ख़ून साफ़ करता है। ख़ून की ख़राबी के समस्त रोग जैसे खुजली, फ़ोड़े, फुन्सी आदि में उपयोगी है। आतशक और प्यूमेह में भी सेवन कराया जा सकता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून : ख़ून साफ़ करता है। ख़ून की ख़राबी के समस्त रोग जैसे खुजली, फ़ोड़े, फुन्सी आदि में उपयोगी है। आतशक और प्यूमेह में भी सेवन कराया जा सकता है।
सेवन विधि : 25 से 50 मिली लीटर पानी में मिलाकर पिलाएं।

स्किन–क्लिअर कैप्सूल : यह ऐसी जड़ी बूटियों का मिश्रण है जो शरीर के विषैले पदार्थों को बाहर निकालती हैं जो प्रतिदिन प्रदूषित वातावरण एवं खाद्य पदार्थ और पानी में रसायनिक अवशेष के कारण शरीर में प्रवाहित होने वाले रक्त में एकत्रित हो जाते हैं। स्किन–क्लिअर हर प्रकार के त्वचा रोगों में अपनी रक्त की शुद्धता के कारण अत्यधिक लाभदायक है। चेहरे को निखारता है और उसमें आकर्शण पैदा करता है।
सेवन विधि : 1–1 कैप्सूल पानी के साथ दिन में दो बार सेवन कराएं। गर्भावस्था और दूध पिलाने के दौरान दिन में तीन बार सेवन कराएं।

स्किन–क्लिअर सिरप : रक्त को साफ़ करती है। फ़ोड़ों, फुन्सियों और खुजली को बहुत जल्दी दूर करती है। चेहरे को निखारता है और उसमें आकर्शण पैदा करता है। जब मोसम बदलता है तब भी इसे निवारक के तोर पर सेवन कराया जाता है। गर्मी के मोसम में जब मलेरिया फैला हो तो स्किन–क्लिअर सिरप तब इसे निवारक के तोर पर सेवन कराया जाता है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर दूध, पानी या ताज़ें फलों के रस में प्रातः और सायंकाल मिलाकर पिलाएं। बच्चों को 5 मिली लीटर दें।

स्किन–क्लिअर SF : इसके वही लाभ हैं जो उपर स्किन–क्लिअर सिरप के लिखे गए हैं लेकिन यह शुगर–फ्री है।
सेवन विधि : 10 मिली लीटर दूध, पानी या ताज़ें फलों के रस में प्रातः और सायंकाल मिलाकर पिलाएं। बच्चों को 5 मिली लीटर दें।

हब्बे मुसफ़्फ़ी ख़ून : रक्त को साफ़ करती है। फ़ोड़ों, फुन्सियों और खुजली को बहुत जल्दी दूर करती है। आतशक में भी उपयोगी है।
सेवन विधि : 2–2 गोलियां प्रातः और सायंकाल पानी के साथ खिलाएं।

हुस्ने राना : मुख के दाग़ों, झाइयों, छीप तथा मुहासों को दूर करके मुख को निखारता है तथा सुन्दरता उत्पन्न करता है।
प्रयोग विधि : रात को सोते समय 5 ग्राम थोड़े पानी में मिला कर मुख पर लगाएं तथा प्रातः पानी से मुंह धो डालें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त इतरीफ़ल शाहतरा, करेला कैप्सूल, माजून चोबचीनी, माजून चोबचीनी बनुस्ख़ा ख़ास, माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास, मरहम काफ़ूरी, मरहम राल और रोग़न नीम भी फुन्सी, ज़ख़्म और खुजली में रक्त को विशुद्ध करने के लिए सेवन कराए जा सकते हैं।

एक्ज़ीमा
(Eczema)

एक्ज़ी क्रीम : खुजली में आराम देती है, सूखेपन को दूर कर त्वचा मुलायम करती है और लाली को दूर करती है। दानों के बनने को रोकती है तथा सूखी परत का बनना बंद करती है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार ऑइण्टमेंट को सुबह–शाम त्वचा के प्रभावी हिस्से पर लगाएं।

नोट : इस के अतिरिक्त नीम कैप्सूल, रोग़न नीम माजून उश्बा, माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF भी एक्ज़ीमा के लिए सेवन कराए जा सकते हैं।

सोरिएसिस
(Psoriasis)

सोरो–एड ऑइण्टमेंट : त्वचा को आराम देता है और प्रभावित स्थान का सूखापन सामाप्त कर त्वचा को मोटा होने और परत बनाने से रोकता है। कम करता, परत बनने को रोकता और त्वचा की परतों को दोहरी होने से रोकता है। यह त्वचा की परत को साफ कर देता है।
प्रयोग विधि : प्रभावित भाग पर दिन में दो बार ऑइण्टमेंट को लगाएं।

घाव
(Wounds)

मरहम काफ़ूरी : उन घावों के लिए उपयोगी है जिनमें दर्द तथा जलन हो यह उनको शान्ति देता और शीघ्र भरता है। इसके अतिरिक्त उन जलनदर फुन्सियों को भी लाभ देता है जिनसे पीले रंग का पानी सा निकलता रहता है।
प्रयोग विधि : नीम के पत्तों को पानी में उबाल कर उससे घाव तथा फुन्सियों को धो दें। उसके पश्चात यह मरहम कपड़े पर लगा कर घाव पर चिपका दें, प्रतिदिन इसी प्रकार करें।

मरहम राल : प्रत्येक प्रकार के घावों को भरता, घावों को मैल कुचैल से साफ़ करके उनको शीघ्रता से भरता है।
प्रयोग विधि : नीम के पत्तों को पानी में उबाल कर उससे घाव तथा फुन्सियों को धो दें। उसके पश्चात यह मरहम कपड़े पर लगा कर घाव पर चिपका दें, प्रतिदिन इसी प्रकार करें।

रसौलियां (कंठ माला)
(Scrofula)

इतरीफ़ल ग़दूदी : कंठ माला में उपयोगी है। मस्तिष्क और अमाशय के गंदे द्रव्यों को निकाल बाहर करता है।
सेवन विधि : 5 ग्राम से 10 ग्राम तक प्रातः और सायंकाल पानी से सेवन कराएं।

नोट : इस के अतिरिक्त इतरीफ़ल शाहतरा, कुश्ता क़र्नुलएल, माजून उश्बा, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF कंठ माला में उपयोगी हैं।

सफ़ेद दाग़
(Leucoderma)

डर्मा–एड ऑइण्टमेंट : विटिलिगो (सफेद दाग़) में रंग बनाने वाली कोशिकाएं ठीक से काम करना बंद कर देती है। डर्मा–एड आइण्टमेंट त्वचा पर स्थानीय धमनी छिद्रों को फैला कर प्लाज़्मा की उत्पत्ति को बढ़ाने में सहायता करता है। इस प्रकार त्वचा लाल हो जाती है और रंग बनाने वाली कोशिकाएं, सक्रिय हो जाती है। इसके लगातार प्रयोग से त्वचा का प्राकृतिक रंग वापस आ जाता है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार ऑइण्टमेंट को सुबह–शाम सफेद दाग़ों पर लगाएं।

रोग़न बाबची : सफ़ेद दाग़ के लिए लाभकर है।
प्रयोग विधि : सफ़ेद दागों पर लगाएं।

सफ़ूफ़ बर्स : शरीर के सफ़ेद दागों के लिए अचूक है। इसके कुछ दिन के सेवन के बाद सफ़ेद दाग त्वचा का प्राकृतिक रंग लाने लगते हैं।
प्रयोग विधि : 5 ग्राम सफ़ूफ़ 25 मिली लीटर गर्म पानी में रात को भिगों दें और सुबह सिर्फ पानी निथार कर पी लें। फोक में थोड़ा सा देसी सिरका या पानी मिलाकर पीस लें और दाग़ों पर लगाएं।

यह दवा कम से कम 40 दिन नियमित रूप से प्रयोग कराएं। खाने में केवल बेसनी रोटी (बिना नमक की) घी लगाकर खिलाएं। तेल और लाल मिर्च खिलाने से सावधानी बरतें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त रक्त शोधक औषधियां विशेषतः स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन बहुत ज़रूरी हैं।

मुहासे
(Acne)

देहल्वी मुहासा पैक : चेहरे के मुहासों को दूर करता है। झाईयों को दूर करता है।
प्रयोग विधि : रात को सोते समय 5 ग्राम थोड़े पानी में मिला कर मुख पर लगाएं तथा प्रातः पानी से मुंह धो डालें।

नोट : अर्क़ चिराएता, अर्क़ मुरक्क़ब मुसफ़्फ़ी ख़ून, अर्क़ शाहतरा, अर्बियन नुस्ख़ा, इतरीफ़ल शाहतरा, नीम कैप्सूल, माजून उश्बा, शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप, स्किन–क्लिअर SF और सेब सिरका मुहासों को दूर करने के लिए लाभदायक औषधियां हैं।

दाद
(Ringworms)

एक ही स्थान पर होने वाले दाद पर रोग़न गंदुम लगाएं। अगर दाद शरीर पर जगह जगह फैला हुआ हो तो इतरीफ़ल शाहतरा, नीम कैप्सूल, शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF औषधियों का सेवन कराएं।

पित्ती उछलना
(Urticaria)

जवारिश कमूनी मुसहिल, स्किन–क्लिअर कैप्सूल, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन पित्ती उछलने की अवस्था में लाभकर हैं।

रतिज रोग
(Venereal Diseases)
उपदंश
(Syphilis)

जौहर मुनक़्क़ा : उपदंश और उपदंश के कारण पैदा होने वाले गठिया और जोड़ों के दर्द में बहुत लाभकर है। पुराने प्रमेह में भी लाभकर है। शरीर में वात रक्त के कारण हृदय की अनियमित धड़कन और घबराहट रहती हो वह भी इसके सेवन से दूर हो जाती है।
सेवन विधि : 20 मिलीग्राम बीज निकली मुनक्का में यह गुठली की जगह रखकर गोली सी बनाकर बिना दांत लगाए पानी से निगलवाएं। ऊपर से 250 मिली लीटर दूध पिलाएं।

देहल्वी जौहरी कैप्सूल : उपदंश और गठिया की अचूक दवा है। उपदंश नया हो या पुराना, दोनों दशाओं में अचूक औषधि है। उपदंश के कारण पैदा होने वाले रोग जैसे गठिया, जोड़ों का दर्द, फ़ालिज़, कपकपाहट आदि में भी लाभकर है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल 250 मिली लीटर दूध के साथ सेवन कराएं।

मरहम आतशक : घातक कीटाणु नाशक औषधियों का मिश्रण है जो आतशक के घाव के अंदर मौजूद उपदंश के कीटाणुओं को मारता है और घाव को भरता है। घाव को सड़ने नहीं देता।
सेवन विधि : आवश्यकतानुसार उपदंश के घाव पर लगाएं।

माजून मुसफ़्फ़ी ख़ास : उपदंश में उपयोगी है। उपदंश के अतिरिक्त कोढ़, दाद, खुजली, पुराने प्यूमेह तथा फ़ोड़े, फुन्सियों में भी लाभदायक है।
सेवन विधि : 10 ग्राम प्रातःकाल 50 मिली लीटर शर्बत उश्बा ख़ास के साथ सेवन कराएं।

हब्बे लीमू : उपदंश में उपयोगी है। उपदंश के कारण पैदा होने वाले गठिया तथा अन्य रोग भी इसके सेवन से दूर हो जाते है।
सेवन विधि : 1 गोली प्रातः तथा सायंकाल पानी से खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ उश्बा, अर्क़ मुरक़्क़ब मुसफ़्फ़ी ख़ून, अर्क़ राहत, अर्क़ शाहतरा, इतरीफ़ल शाहतरा, गोखरू कैप्सूल, नीम कैप्सूल, माजून उश्बा, माजून चौबचीनी, माजून जोगराज गूगल, माजून लना, मुसफ़्फ़ी आज़म, रोग़न संदल, शर्बत मुरक़्क़ब मुसफ़्फ़ी ख़ून, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF भी उपदंश में उपयोगी हैं।

मूत्रनली में मवाद पड़ना (Gonorrhoea)

अर्क़ राहत : यह नए प्यूमेह की अचूक औषधि है। मूत्रनली में मौजूद प्यूमेह के जीवाणुओं को मार कर मूत्रनली के घाव को भरता है और मूत्रनली की सूजन भी दूर करता है।
सेवन विधि : 10—10 मिली लीटर सुबह दोपहर और शाम को खिलाएं।

इंदमाल : नए व पुराने प्यूमेह में उपयोगी है। इसके सेवन से पेशाब की जलन, सोज़िश, पीप और मवाद का आना शीघ्र ठीक हो जाता है। प्यूमेह के बाद प्रायः लोगों को मूत्रनली में जलन के कारण वीर्यपतन की शिकायत हो जाती है, वह नहीं हो पाती।
सेवन विधि : 1—1 टिकिया प्रातः और सायंकाल ताज़े पानी या शर्बत बज़ूरी मोतदिल 50 मिली लीटर के साथ सेवन कराएं।

रोग़न संदल : मूत्रनली के घाव को भरता और जलन को दूर करता है। नए व पुराने प्यूमेह और आतशक में उपयोगी है।
सेवन विधि : एक मिली लीटर बताशे पर डालकर 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून, इतरीफ़ल शाहतरा, कुश्ता क़लई, गोखरू कैप्सूल, नीम कैप्सूल, जौहर मुनक्क़ा, दहेल्वी जौहरी कैप्सूल, माजून उश्बा, मुसफ़्फ़ी आज़म, शर्बत मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून, स्किन—क्लिअर सिरप, स्किन—क्लिअर SF और सफ़ूफ़ इंद्रि जुल्लाब प्यूमेह में लाभकर औषधियां हैं।

बालों के रोग (Diseases of the Hair)

बालों का गिरना (Falling of Hair)

ट्रीट पाउडर : बालों को कोमल और लम्बा करता है। साथ ही बालों को ख़ुश्की से बचा कर साफ़ रखता है।
प्रयोग विधि : दो बड़े चमचे (25 ग्राम) ट्रीट पाउडर रात को थोड़े से गर्म पानी में भिगो दें। सुबह को बालों में अच्छी तरह लगाकर दस—पंद्रह मिनट बाद बालों को अच्छी प्रकार पानी से धो डालें। बालों को तौलिया से सुखाकर ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल की मालिश करें।

ट्रीट बालों का काला साबुन : बालों को लम्बा, घना, चमकदार और काला बनाए रखता है। बालों की जड़ों को मज़बूत करता है। ख़ुश्की को दूर करता है और बालों को समय पूर्व सफ़ेद होने से बचाता है।
प्रयोग विधि : रोज़ाना स्नान करते समय या आवश्यकतानुसार इस साबुन के झाग सिर के तमाम बालों पर और विशेषतः बालों की जड़ों में नर्म उगलियों से अच्छी तरह मलें और कुछ देर बाद सिर को हल्के गर्म पानी से धो डालें। यही क्रम फिर करें। अच्छे परिणाम के लिए स्नानोपरांत बालों में ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल लगाएं। बहुत गर्म पानी से बालों को बिल्कुल न धोएं।

ट्रीट हर्बल शैम्पू : आठ हर्बल औषधियों का मिश्रण है। यह बालों को उगाने और उन्हें प्राकृतिक रूप से काला रखने में सहायता करता है। बालों को सभी रोगों से बचाता है और लम्बा, चमकदार, घना मुलायम और सुन्दर बनाता है। यह रूसी को दूर करता है और बाल झड़ने से रोकता है। ट्रीट हेयर शैम्पू एक देसी मिश्रण है जो पूरी तरह सुरक्षित है। हर मौसम में सभी आयुवर्ग के लोग प्रयोग कर सकते है। इसका निरंतर उपयोग बालों को घना और चमकीला बनाता है।
प्रयोग विधि : भीगे बालों पर 3—5 मि.ली. शैम्पू धीरे—धीरे 1 मिनट तक मलें और पानी से धो दें। आवश्यकता हो तो दोबारा प्रयोग करें।

ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल : 19 अमूल्य जड़ी बूटियों तथा मग़ज़ियात के विशुद्ध तेलों से निर्मित और कृत्रिम सुगंध, रंग और कैमिकल रहित और रिसर्च द्वारा निर्मित ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल बालों को गिरने और समय पूर्व सफ़ेद होने से बचाता है। ख़ुश्की से पूरी तरह मुक्ति दिलाता है। ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल बालों के लिए सर्वश्रेष्ठ आहार है। ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल ऐसी मूल्यवान जड़ी बूटियों से निर्मित है जो बालों को घने, लंबे और चमकीले बालों की उत्पत्ति के लिए सदियों से जानी मानी जाती है। ट्रीट हर्बल हेयर ऑयल का नियमित रूप से प्रयोग आपके क़ीमती बालों को हमेशा के लिए मज़बूत और स्याह रखता है।
प्रयोग विधि : रोज़ाना स्नान के बाद और रात को सोते समय दस—पंद्रह मिनट तक हल्के हाथों से मालिश करें। बालों के अच्छे परिणामों के लिए बालों को ट्रीट बालों का काला साबुन या ट्रीट पाउडर से धोएं। अगर नहाने के बाद ट्रीट हरबल

हेयर आयल लगाना हो तो पहले तौलिया से बालों को सुखा लें।

ट्रीट हेयर केयर कैप्सूल : मस्तिष्क और बालों के लिए अत्यन्त प्रभावशाली 15 जड़ी बूटियों का मिश्रण है जो बाल बढ़ने और उन्हें प्राकृतिक रूप से काला रखने में सहायक होता है। यह समस्त रोगों से मुक्त कर बालों को चमकदार, लम्बा और घना करता है।
सेवन विधि : 1 कैप्सूल दिन में एक या दो बार सेवन कराऐं।

रोग़न आमला ख़ास : बालों की जड़ों को सशक्त बनाता और उन्हें गिरने से रोकता है। साथ ही बालों का कालापन बनाए रखता है और उन्हें कोमल और चमकीला बनाता है। सिर की ख़ुश्की दूर करने और दिमाग़ को तरो ताज़ा रखने में उपयोगी है।
प्रयोग विधि : बालों पर लगाएं

रोग़न चंबेली : बालों को लंबा करता है तथा उन्हें चमकीला भी करता है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार बालों पर लगाएं।

हिम तुलसी : बालों की जड़ों को सशक्त बनाता और उन्हें गिरने से रोकता है। यह बालों को उगाने और उन्हें प्राकृतिक रूप से काला रखने में सहायता करता है। साथ ही बालों का कालापन बनाए रखता है और उन्हें कोमल और चमकीला बनाता है। सिर की ख़ुश्की दूर करता है।
प्रयोग विधि : बालों पर लगाएं

नोट : देहल्वी रोग़न ज़रारीह और रोग़न बैज़ा मुर्ग़ भी बालों को गिरने से रोकते हैं।

समय पूर्व बालों का सफ़ेद होना
(Premature Graying of Hair)

बालों का समय पूर्व सफ़ेद होने की सूरत में आमला कैप्सूल, इतरीफ़ल उस्तख़ुद्दूस, जवारिश जालीनूस, जवारिश ज़रऊनी अंबरी बनुस्ख़ा कलां, ट्रीट पाउडर, ट्रीट बालों का काला साबुन, ट्रीट हेयर शैम्पू, ट्रीट हर्बल हेयर आयल, ट्रीट हेयर केयर कैप्सूल, देहल्वी जारुब दिमाग़ (उस्तख़ुद्दूस) कैप्सूल, देहल्वी गेलीनूस पिल्ज़, देहल्वी रोग़न ज़रारीह, रोग़न आमला ख़ास और रोग़न बैज़ा मुर्ग़ का सेवन और प्रयोग लाभकर है।

बालख़ोरा
(Alopecia Areata)

दवाए बालख़ोरा : चकत्तों के रूप में बाल झड़ जाने की शिकायत की ख़ास दवा है। चिकने चकत्तों पर बालों को नए सिरे से उगाती है।
प्रयोग विधि : कार्बोलिक साबुन या नीम के पत्तों के जोशांदे से बालख़ोरा वाले स्थान को धोएं और उसके बाद इस दवा की मालिश करें।

देहल्वी रोग़न ज़रारीह : बालख़ोरा में लाभकारी है। बालों की जड़ों को मज़बूत करता है और उनको गिरने से बचाता है।
प्रयोग विधि : सिर के जिस स्थान पर बाल उगाना चाहें वहां इस तेल की रोज़ाना मालिश करें।

रोग़न बैज़ा मुर्ग़ : बालख़ोरा में लाभकर है। जिस स्थान पर बाल न निकलते हों इस रोग़न की अर्से तक मालिश करने से बाल निकल आते हैं। बालों को बढ़ाता भी है और उन्हें समयपूर्व सफ़ेद होने से रोकता है।
प्रयोग विधि : जिस स्थान पर बाल उगाना चाहें वहां इस तेल की रोज़ाना मालिश करें।

नोट : इन औषधियों के अतिरिक्त सेब सिरका भी बालख़ोरा में अचूक है।

सिर की जुंए
(Lice)

रोग़न नीम सिर के बालों में लगाने से जुंऐं मर जाती हैं।

विभिन्न प्रकार के रोग
(Miscellaneous Diseases)

सामान्य ज्वर
(Fever)

अर्क़ नीलोफ़र : पित्त की तेज़ी को कम करता तथा गरमी को शांति देता है, प्यास को बुझाता है।
सेवन विधि : 125 मिली लीटर 25 मिली लीटर शर्बत नीलोफ़र में मिलाकर पिलाएं।

गिलो कैप्सूल : ज्वर, मलेरिया, प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहना यकृत के ऊतकों का व्यपजनन, मधुमेह, यकृत की सूजन, पीलिया, यकृत के विकार और तिल्ली की सूजन में लाभकर है।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात पानी से सेवन कराएं।

दाफ़े बुख़ार : हर प्रकार के कफ़, पित्त व अन्य ज्वरों में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1–1 टिकिया प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

शर्बत ख़ाकसी : मोती झर्रा, चेचक, ख़सरा और मयादी बुख़ार में लाभकर है।
सेवन विधि : 5 से 10 मिली लीटर पानी में मिलाकर दिन में 3 बार पिलाएं।

नोट : अर्क़ अजवायन, कुश्ता गौदन्ती, क़ुर्स मुसक्किन, गावज़बां कैप्सूल, गिलो आमला रस, नीलोफ़र कैप्सूल, शर्बत नीलोफ़र, शर्बत बनफ़शा, सेहत बख़्श और हब्बे शिफ़ा भी सामान्य ज्वर को दूर करते हैं।

डेंगू बुख़ार (Dengue Fever)

पपीता लीफ़ कैप्सूल : डेंगू बुख़ार में रक्त में Platelet Count कम हो जाता है। इसके सेवन से वह जल्दर अपने सही स्तर पर आ जाता है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 2 कैप्सूल दो बार भोजन के पूर्व पानी के साथ दें।

मलेरिया (Malaria)

अर्क़ चिराएता, अर्क़ गावज़बां, अर्क़ ब्रंजासिफ़, अर्क़ नीलोफ़र, कुलिया बज़ूरी–SF, कुश्ता गौदन्ती, त्रिफला कैप्सूल, दाफ़े बुख़ार, शर्बत नीलोफ़र, शर्बत बज़ूरी मोतदिल, शर्बत बनफ़शा, सेहत बख़्श और हब्बे शिफ़ा भी मलेरिया में राहत देतें हैं।

मोती झर्रा (Typhoid)

कुश्ता गौदन्ती, कुश्ता मरजान, कुश्ता मरवारीद, ख़मीरा मरवारीद, ख़मीरा मरवारीद बनुस्ख़ा कलां, शर्बत ख़ाकसी और सेहत बख़्श मोती झर्रा में अचूक हैं।

ख़सरा (Measles)

ख़मीरा मरवारीद, जवाहर मोहरा, शर्बत ख़ाकसी, स्किन–क्लिअर सिरप और स्किन–क्लिअर SF का सेवन ख़सरा में लाभ पहुंचाता है।

बाल रोग
Diseases of Children

अजीर्ण तथा क़ब्ज (Indigestion and Constipation)

देहल्वी नैचूरल घुट्टी : बच्चों में अफ़ारा, बदहज़मी, दूध डालना, कै व भूख की कमी की शिकायत, साथ ही दांत निकालने की अवधि की पीड़ा में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1 बूंद से 30 बूंदों तक आयु अनुसार सुबह शाम पिलाएं।

देहल्वी नैचूरल बेबी टॉनिक : शरीर में कैलशियम की कमी को पूरा करके हड्डियों को सशक्त एवं सुद्रढ़ करता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता, क़ब्ज़, अजीर्ण, दूध डालना, नज़ला, ज़ुकाम में सहायक है। भूख बढ़ाता है। दांत निकालने में सहायक है।
सेवन विधि : चाय के एक चौथाई से 2 चमचे तक आयु अनुसार पानी में मिलाकर या बिना पानी सुबह शाम पिलाएं।

नोट :एनर्जाईन, देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक और पुदिनोल का सेवन अजीर्ण तथा क़ब्ज़ में भी उपयोगी है।

बाल मिर्गी (Infantile Epilepsy)

ख़मीरा मरवारीद : दिल की धड़कन, परेशानी और घबराहट को दूर करता है। हृदय को पुष्ट करता है। बाल मिर्गी और सामान्य शारीरिक दुर्बलता में बहुत लाभ पहुंचाता है। मोती झर्रा और ख़सरा जैसे रोगों में दिल और सामान्य गरिमा की रक्षा करता है। इन रोगों के बाद की कमज़ोरी को बहुत जल्दी दूर करता है।
सेवन विधि : बच्चों को उन की आयु के अनुसार एक ग्राम से 3 ग्राम तक और बड़ी आयु वालों को 5 ग्राम सुबह निहार मुंह और शाम पानी या अर्क़ गावज़बां के साथ खिलाएं।

हब्बे जुन्द: बच्चों की मिर्गी में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1 गोली 3–4 घंटे के अन्तर से मां के दूध में घोल कर दें।

नोट : ऐपी–कैप, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जदवार ऊद सलीब वाला, देहल्वी नैचूरल बेबी टॉनिक और

हब्बे सरा भी बाल मिर्गी में लाभदायक हैं।

सामान्य दुर्बलता (General Debility)

आमलीना, एनर्जाईन, ख़मीरा मरवारीद, देहल्वी नैचूरल घुट्टी, देहल्वी नैचूरल बेबी टॉनिक, देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक, ब्रेनी, ब्रेनी मिक्स और मूसली केसर प्राश सामान्य दुर्बलता में उपयोगी हैं।

बच्चों के दस्त (Diarrhoea)

देहल्वी नैचूरल घुट्टी, देहल्वी नैचूरल बेबी टॉनिक और पुदिनोल बच्चों के दस्तों को रोकते हैं।

पसली चलना (Infantile Pneumonia)

क़ैरूती आर्द क्रसना और कुश्ता क़र्नुलएल बच्चों की पसली चलने में लाभकर हैं।

बच्चों की काली खांसी (Whooping Cough)

कफ़नो सिरप, कफ़नो–SF, लऊक़ बादाम, लऊक़ सपिस्तां, लऊक़ सपिस्तां ख़्यार शंबरी, वसाका कैप्सूल और शर्बत एजाज़ काली खांसी में उपयोगी हैं।

सामान्य शारीरिक दुर्बलता (General Debility)

अर्क़ माउल्लहम ख़ास : जाना माना टॉनिक है जो हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को पौष्टिकता उपलब्ध करता है। स्नायुविक और सामान्य शारीरिक दुर्बलता, ख़ून की कमी, तबीयत के बुझेपन को दूर करता है। शरीर में शक्ति, स्फूर्ति पैदा करता है और भूख बढ़ाता है। पौष्टिकता से भरपूर टॉनिक है। बीमारी के बाद की कमज़ोरी को दूर करता है। पुरूषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से लाभकर है। पौरूष शक्ति में वृद्धि करता है। गर्भाशय को शक्ति देता है। सर्वश्रेष्ठ जनरल टॉनिक है जो जाड़ों में परिवार के हर व्यक्ति के लिए उपयोगी है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ताज़ा जूस या दूध में मिलाकर पिलाएं। दिन में दो बार 25–25 मिली लीटर सुबह व शाम भी पिला सकते हैं।

अर्क़ माउल्लहम दो आतिशा : जाना माना टॉनिक है जो हृदय, मस्तिष्क और आमाश्य को पौष्टिकता उपलब्ध करता है। स्नायविक और सामान्य शारीरिक दुर्बलता, ख़ून की कमी, तबीयत के बुझेपन को दूर करता है। शरीर में शक्ति, स्फूर्ति पैदा करता है और भूख बढ़ाता है। पौष्टिकता से भरपूर टॉनिक है। बीमारी के बाद की कमज़ोरी को दूर करता है। पुरूषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से लाभकर है। पौरूष शक्ति में वृद्धि करता है। गर्भाशय को शक्ति देता है। सर्वश्रेष्ठ जनरल टॉनिक है जो जाड़ों में परिवार के हर व्यक्ति के लिए उपयोगी है। यह अर्क़ माउल्लहम ख़ास से अधिक शक्तिशाली है।
सेवन विधि : 50 मिली लीटर ताज़ा जूस या दूध में मिलाकर पिलाएं। दिन में दो बार 25–25 मिली लीटर सुबह व शाम भी पिला सकते हैं।

अश्वगन्धा कैप्सूल : भूल (स्मृतिलोप), रक्त की कमी, चिंता व परेशानी, सन्धिशोथ, दमा, अशुक्राणुता (वीर्य में शुक्राणुओं का न होना या न बनना), हृदय गति का मन्द होना, मस्तिष्क की थकन, श्वास नलियों की श्लेष्मिक कला की सूजन (ब्रोन्काइटिस), कैंसर, रोग की समाप्ति के पश्चात की कमज़ोरी, मधुमेह, मानसिक अवसाद, दुष्पचन, नपुंसकता, थकावट, उक्ताहट, सामान्य दुर्बलता, शुक्राणु का पतला होना, उच्च रक्तचाप, बांझपन, अनिद्रा, भूख कम लगना, शारीरिक बल में कमज़ोरी, श्वेतप्रदर, कमर में दर्द, मानसिक थकावट, अल्पशुक्राणुता, मूत्र का अधिक मात्रा में आना, समय से पूर्व वृद्धावस्था, आमवात, गठियारुप सन्धिशोथ, वीर्य के विकार, वृद्धावस्था में क्षीणता, पौरूष शक्ति की कमी, शुक्रमेह (जिर्यान), मनोवैज्ञानिक दबाव, दूग्ध में कमी और विखण्डित मनस्कता (शाइज़ोफ्रेनिया) में उपयोगी है।
सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

अश्वगन्धा रस (संतरा रस युक्त) : चुस्ती, फुर्ती बढ़ाने के लिए प्रसिद्ध औषधि, दीर्घायु बनाता व यौवन बढ़ाता, मस्तिष्क को शांत कर स्वास्थ वर्धक नींद लाता, तनाव के कारण कमज़ोरी व उच्च रक्तचाप आदि में सहायक, उत्तेजना बढ़ाता, स्तंभन शक्ति बढ़ाता, लिंग की दृढ़ता बढ़ाता, शिथिलता और उलझन दूर करता तथा लम्बी बीमारी के बाद शारीरिक स्फूर्ति वापस लाता है। सस्वाद बढ़ाता, विटामिन 'सी' की कमी दूर करता और रोग सुरक्षा प्रणाली मज़बूत करता है।

सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

आमलीना : यह औषधि सर से पैर तक तन्दुरुस्ती देती है। आज के तेज़ रफ़्तार आधुनिक सामाजिक जीवन के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य को स्वनिर्मित कुप्रभावों ने काफ़ी हानि पहुंचाई है। अतः देहल्वी रेमेडीज़ ने देसी जड़ी बूटियों की प्राचीन एवं आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक के समिश्रण से एक नया प्रोडक्ट आमलीना तैयार किया है। यह अपने आप में एक संपूर्ण टॉनिक है जो मानव शरीर की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करता है।

यह प्रोटीन शक्ति के अभाव को समाप्त करता है क्योंकि इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं विटामिन, विशेषकर ''विटामिन सी'' मौजूद हैं। आमलीना का विशेष हर्बल फार्मूला शरीर को वे सभी आवश्यक तत्व देता है जो मांसपेशियों में खिचाव दूर करते हैं और शरीर को आराम देते हैं। आमलीना उन लोगों के लिए लाभदायक है जो मानसिक परिश्रम में व्यस्त रहते हैं जैसे विद्यार्थी, वैज्ञानिक, वकील, अकाउन्टेन्ट एवं इंजीनियर आदि। अधिक समय तक मानसिक परिश्रम एक प्रकार की शून्यता को जन्म देता है फलस्वरूप मस्तिष्क बोझल हो जाता है जो मानसिक थकावट के लक्षण हैं। यह दवा खिलाड़ियों, शारीरिक श्रमिकों, गृहणियों आदि के लिए समान रूप से लाभकारी है जिनकी मांसपेशियों को अधिक शक्ति चाहिए। भूलने, मानसिक तनाव, मानसिक दबाव एवं थकावट, शिथिलता, सुस्ती, अलगाव, शोथ तथा दस्त आदि में भी आमलीना लाभकारी है। कुल मिलाकर आमलीना एक संपूर्ण शारीरिक टॉनिक है जो सर से पैर तक प्रत्येक अंग को लाभ पहुंचाता है।
सेवन विधि : 20 ग्राम प्रातःकाल नाश्ते में रोज़ाना खिलाएं। ब्रेड–स्लाइस पर लगाकर खिलाने में स्वादिष्ट है।

एनर्जाईन : यह विशुद्ध वनस्पतिक तत्वों के सत्त से निर्मित्त बहुत उपयोगी जनरल टॉनिक है। यह रासायनिक तत्वों तथा किसी भी प्रकार के हारमोन से पुर्णरूप से पावित्र है। इसके सेवन से भूख बढ़ती है। पाचन क्रिया ठीक रहती है। बदहज़मी के दोष दूर होते हैं और कार्य क्षमता और शक्ति बहाल रहती है। शारीरिक और मानसिक श्रम करने वाले लोगों के लिए उपयोगी है। शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति को बढ़ाता है और लंबी बीमारी और आपरेशन के बाद की कमज़ोरी को दूर करता है। दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी को दूर करता है। आमाशय और यकृत के क्रम को सुचारू करके विशुद्ध रक्त पैदा करता है। दूध पिलाने वाली गर्भवती स्त्रियों के लिए भी समान उपयोगी है। गर्भाशय में पलने वाले बच्चे के लिए भी उपयोगी आहार उपलब्ध कराता है। बच्चों को स्वस्थ करके शरीर को मज़बूत और ठोस बनाता है और उनकी बढ़ोत्तरी के दौरान बढ़ती हुई आयु की आवश्यकताओं को पूरा करता है। आम शारीरिक और मानसिक थकन को दूर करके काम में जी लगाने का मार्ग उभारता है। यह केवल हर आयु के दुर्बल और रोगी लोगों ही नहीं बल्कि प्रायः स्वस्थ लोगों के लिए भी हर मौसम में बिना किसी हानिकारक प्रभाव के सेवन किया जाने वाला एक भरपूर जनरल टॉनिक है।
सेवन विधि : रोज़ाना बड़ों के लिए 20 मिली लीटर नाश्ते से पूर्व और शाम के भोजन से पूर्व और बच्चों के लिए 10 मिली लीटर नाश्ते से पूर्व और शाम के खाने से पूर्व।

एनर्जी–एड : तंत्रिका तंत्र को पौष्टिकता प्रदान करता है। दिन–प्रतिदिन के जीवन में ऊर्जा बनाए रखने में मदद करता है। तनाव से संबंधित विकारों जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह, सामान्य दुर्बलता आदि में दोनों पुरूषों और महिलाओं में सेवन कराया जा सकता है। एक कायाकल्प (rejuvenative) के रूप में यह ऊतकों, विशेष रूप से मांसपेशियों और हड्डियों की उचित पोषण बनाए रखने के कतमदंसे और प्रजनन प्रणाली के समुचित कार्य का समर्थन करते हुए मदद करता है।
सेवन विधि : 2–2 टिकिया प्रातः और सायंकाल पानी से खिलाएं।

कलौंजी कैप्सूल : शारीरिक थकन, सुस्ती को दूर करके शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति पैदा करता है, रक्तोत्पत्ति बढ़ाता है, गर्भावस्था और प्रसव के बाद के काल, बच्चे को दूध पिलाने के समय में स्त्रियों की दुर्बलता दूर करके शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है। भूख बढ़ाता है। पाचन क्रिया ठीक करता है। बीमारी के बाद की दुर्बलता और अन्य शारीरिक दुर्बलता में उपयोगी है। पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों के लिए हर मौसम में सर्वोत्तम है।
सेवन विधि : प्रतिदिन 1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

कुश्ता तिला : यह 99.9 प्रतिशत विशुद्ध सोने से निर्मित कुश्ता है जो शरीर के कोमल अंगों को पौष्टिकता प्रदान करके सामान्य गरिमा की रक्षा करता है। आम शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। भूख को बढ़ाकर पौरूष शक्ति बढ़ाता है। सर्वश्रेष्ठ स्नायु पोषक टॉनिक है। जाड़े के मौसम में जवान और बूढ़े दोनों उपयोग में ला सकते हैं।

सेवन विधि : 30 मिलीग्राम या एक टिकिया दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली 5 ग्राम या लबूब कबीर 5 ग्राम के साथ खिलाएं। ऊपर से 250 मिली लीटर दूध पिलाएं।

जीवन–रक्षक : दुबले शरीर को हृष्टपुष्ट बनाता है तथा शरीर को मज़बूत व गठीला बनाकर शरीर को हर तरह से स्वस्थ रखता है। इसके सेवन से चेहरे पर लाली आ जाती है और बल में वृद्वि होती है।
सेवन विधि : 3 कैप्सूल दिन में दो बार सेवन कराएं।

देहल्वी कलोंजी ऑयल : शारीरिक थकन, सुस्ती को दूर करके शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति पैदा करता है, रक्तोत्पत्ति बढ़ाता है, गर्भावस्था और प्रसव के बाद के काल, बच्चे को दूध पिलाने के समय में स्त्रियों की दुर्बलता दूर करके शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है। भूख बढ़ाता है। पाचन क्रिया ठीक करता है। बीमारी के बाद की दुर्बलता और अन्य शारीरिक दुर्बलता में उपयोगी है। पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों के लिए हर मौसम में सर्वोत्तम है।
सेवन विधि : दवा के साथ है।

देहल्वी माजून कलोंजी : शारीरिक थकन, सुस्ती को दूर करके शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति पैदा करता है, रक्तोत्पत्ति बढ़ाता है, गर्भावस्था और प्रसव के पश्चात, बच्चे को दूध पिलाने के समय में स्त्रियों की दुर्बलता दूर करके शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है। भूख बढ़ाता है। पाचन क्रिया ठीक करता है। बीमारी के बाद की दुर्बलता और अन्य शारीरिक दुर्बलता में उपयोगी है। पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों के लिए हर मौसम में सर्वोत्तम है।
सेवन विधि : 5 ग्राम सुबह खिलाएं।

देहल्वी नैचूरल हैल्थ टॉनिक : हर्बल टॉनिक है जो शारीरिक थकन, सुस्ती को दूर करके शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति पैदा करता है, रक्तोत्पत्ति बढ़ाता है, गर्भावस्था और प्रसव के बाद, बच्चे को दूध पिलाने के समय में स्त्रियों की दुर्बलता दूर करके शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है। भूख बढ़ाता है। पाचन क्रिया ठीक करता है। बीमारी के बाद की दुर्बलता और अन्य शारीरिक दुर्बलता में उपयोगी है। पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों के लिए हर मौसम में सर्वोत्तम है।
सेवन विधि : बच्चों के लिए 5 मिली लीटर से 10 मिली लीटर (चाय के एक से दो चमचे) तक सुबह नाश्ते से पहले और शाम को पिलाएं। बड़ों के लिए 20 मिली लीटर (चाय के चार चमचे) सुबह नाश्ते से पहले और शाम को पिलाएं।

देहल्वी सेहाटोन : हृदय को पुष्टि देती है। हृदय की अनियमित प्रक्रिया को संतुलित करती है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता, मूर्च्छा, घबराहट तथा रोगावस्था के बाद की दुर्बलता में लाभकर है। रक्त प्रवाह और रक्त उत्पत्ति को बढ़ाती है। यकृत तथा आमाशय को भी शक्ति प्रदान करती है।
सेवन विधि : 5 ग्राम प्रातःकाल या आवश्यकतानुसार खिलाएं।

ब्रेनी मिक्स : सभी मौसमों के लिए एक प्राकृतिक स्वादिष्ट पौष्टिक मिश्रण। थायमिन (विटामिन बी 1), राइबोफ्लेविन (विटामिन बी 2), विटामिन ई, कैल्शियम, आयरण और प्रोटीन शामिल हैं। इसमें शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट गुण हैं। ऊर्जा का स्तर बढ़ाता है, मूड ठीक करता है, स्मरण शक्ति में सुधार करता है, पाचन शक्ति और भूख बढ़ाता है। गर्मी से राहत देता है और प्यास बुझाता है।
सेवन विधि : ब्रेनी मिक्स का 1 चम्मच (10 ग्राम) ठंडा या गर्म दूध में मिलाकर पिलाएं।

मूसली केसर कैप्सूल : एक विशिष्ट मिश्रण युक्त नुस्ख़ा है जिसमें 23 नवजीवन दायिनी जड़ी बूटियां हैं। मूसली केसर कैप्सूल औषधि नहीं बल्कि स्वास्थ परिपूरक हैं जो शरीर को दिनभर फिट रखता है। सर से पैर तक, मूसली केसर कैप्सूल, शरीर के समस्त अंगों को बल प्रदान करता है। मूसली केसर का प्रत्येक तत्व, शरीर के हर एक ऊतक को सक्रिय करता है। मूसली केसर कैप्सूल हर मौसम में सभी आयू वर्ग के लोगों को बिना किसी दुष्प्रभाव के समान रूप में दिया जा सकता है।
सेवन विधि : 15 वर्ष और अधिक – एक कैप्सूल दिन में एक या दो बार, दूध या पानी से,
7 से 14 वर्ष के बच्चों को एक कैप्सूल प्रतिदिन दूध या पानी से।
नोट : मूसली केसर खाली पेट भी लिया जा सकता है।

मूसली केसर प्राश : मूसली केसर प्राश एक विशिष्ट मिश्रण युक्त नुस्खा है जिसमें 23 नवजीवन दायिनी जड़ी बूटियां हैं। मूसली केसर प्राश औषधि नहीं बल्कि स्वास्थ परिपूरक हैं जो शरीर को दिनभर फिट रखता है। सर से पैर तक, मूसली केसर प्राश शरीर के समस्त अंगों को बल प्रदान करता है। मूसली केसर प्राश का प्रत्येक तत्व, शरीर के हर एक ऊतक को सक्रिय करता है। मूसली केसर प्राश हर मौसम में सभी आयू वर्ग के लोगों को बिना किसी दुष्प्रभाव के समान रूप में दिया जा सकता है।

सेवन विधि : 3 से 7 वर्ष – 1/2 चमचा दूध या पानी से दिन में एक बार।
8 से 14 वर्ष – 1 चमचा एक या दो बार दूध या पानी से दे।
15 वर्ष से ऊपर – 2 चमचा 1 या 2 बार दूध या पानी से दे।

मौरिंगा कैप्सूल : रक्त की कमी, संधिवात, जीवाणु, कवक, विषाणुजनित तथा परजीवी के संक्रमण, दमा, केंसर, क़ब्ज़, मधुमेह, दस्त, मिर्गी, तरल अवरोधन (वॉटर रिटेंशन), सिर दर्द, उच्च रक्तचाप, आंतों की ऐंठन, पेट के अल्सर, मुत्राशय की पत्थरी, आमवात, उदर पीड़ा और पेट संबंधी व थायराइड विकार में उपयोगी है।

सेवन विधि : प्रतिदिन एक कैप्सूल दिन में दो बार पानी से दें।

शर्बत फ़ौलाद : सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। ख़ून के पतलेपन को दूर करता है। हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करता है और ख़ून की लाली बढ़ाकर चेहरे को सुर्ख़ बनाता है। यकृत की कार्य शक्ति को सुचारू करता है जिससे पाचन क्रिया ठीक होकर भूख की कमी दूर हो जाती है।
सेवन विधि : 5 से 10 मिली लीटर भोजनोपरांत पिलाएं।

शिलाजीत केयर : शिलाजीत में कई गुणकारी तत्त्व जैसे ऑक्सीकरण रोधी (antioxidant), Humic acid और Fulvic acid पाए जाते हैं। इसमें 80 से अधिक खनिज पदार्थ पाए जाते हैं जो मानवीय शरीर और स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डालतें हैं। शिलाजीत केयर स्नायुओं को शक्ति देता है और तनाव, मस्तिष्क की थकान, मिर्गी, चिन्ता और मानसिक अवसाद में लाभकर है। इसके अतिरिक्त यह स्मरण शक्ति बढ़ाता है। मधुमय, बुढ़ापे की स्मरण शक्ती, गठिया व जोड़ो का दर्द और मोटापे में लाभकारी है।
सेवन विधिः 10 मि.ली. प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल पिलाएं।

शिलाजीत कैप्सूल : रक्त की कमी, जलोदर, दमा, पित्त संकुलन, रक्त की ख़राबी, ब्रोन्काइटिस, मूत्रनली में जलन, क़ब्ज़, मधुमेह, यकृत और प्लीहा का बढ़ जाना, मिर्गी, अत्यधिक प्यास लगना, थकावट, हड्डी–टूटना, पित्ते की पत्थरी, सामान्य दुर्बलता, रक्त में वसा की अधिकता, हिस्टीरिया, अपाचन, पागलपन, पीलिया, भूख की कमी, अधीरता, मोटापा, प्रतिरक्षा क्षमता में कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहना, बार–बार मूत्र आना, बवासीर, वृक्क एवं मूत्राशय की पत्थरी, पौरूष शक्ति की कमी, लैंगिक थकावट, वृद्धावस्था में पौरूष शक्ति की कमी, त्वचा–रोग, सुस्त पाचन क्रिया एवं तपेदिक में उपयोगी है।
सेवन विधि : 1 या 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात् पानी के साथ दें।

स्पिरूलीना कैप्सूल : पोषण की कमी, प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहना, रक्ताल्पता (Anaemia), कैंसर, यकृत रोग, यकृत बढ़ जाना (हेपेटाइटिस) और यकृत की कठोरता।
सेवन विधि : 2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पूर्व पानी के साथ दें।

हब्बे ख़ास : हृदय, मस्तिष्क, यकृत और आमाशय की दुर्बलता को दूर करती है। स्नायविक प्रक्रिया और पौरूष शक्ति पर अच्छा प्रभाव डालती है। लो ब्लड प्रैशर को सामान्य करती है।
सेवन विधि : एक गोली प्रातः और सायंकाल या आवश्यकतानुसार पानी या दूध से खिलाएं।

हब्बे सलाजीत : मशहूर वैद्य चरक लिखते हैं कि कोई भी क़ाबिले इलाज बीमारी ऐसी नहीं है जिसे सलाजीत के सेवन से दूर न किया जा सकता हो। पेशाब संबधी रोगों, मधुमेह, पित्ते की पथरी, पीलिया, ख़ूनी बवासीर, तिल्ली और यकृत के बड़ा हो जाने, पाचन व्यवस्था के रोग, भूख की कमी, पेट के कीड़े, प्यास, गुर्दे व आमाशय की पथरी, उपदंश, हिस्टीरिया, ख़ून की कमी, मोटापा और हड्डियों के टूट जाने में ख़ास टॉनिक का काम करता है।
सेवन विधि : एक गोली प्रातः और सायंकाल दूध के साथ खिलाएं।

नोट : उपर्युक्त औषधियों के अतिरिक्त अर्क़ अंबर, असबी प्लस, ख़मीरा आबरेशम हकीम अर्शद वाला, ख़मीरा गावज़बां अंबरी जवाहरवाला, ख़मीरा मर्वारीद, जवाहर मोहरा, दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहर वाली, पावर–जैन कैप्सूल, देहल्वी अंबर शिलाजीत कैप्सूल, देहल्वी अर्शद गोल्ड पिल्ज़, देहल्वी डी. एम. एम. जवाहरी कैप्सूल, ब्रेनी, मूसली सफ़ैद कैप्सूल, हब्बे अंबर मोमियाई, हब्बे जवाहर और हार्ट–केयर भी आम शारीरिक दुर्बलता को दूर करते हैं।

घरेलू औषधियां
(Household Medicines)

ज़ाफ़रान (केसर) : यह तंत्रिकों को शांति देती है और ज्वर, विषाद रोग और यकृत का बढ़ जाना में लाभदायक है। खांसी, दमा और बच्चों के नज़ले में लाभदायक है। रक्त की कमी, हरिद्रोग (आएरन की कमी से रंग उड़जाना) और मौलिक दुर्बलता में भी लाभदायक है। रक्त परिसंचरण में सुधार लाती है और हृदय, मस्तिष्क और यकृत को शक्ति प्रदान करती है। केसर मासिक धर्म खुलकर लाती है तथा मासिक धर्म की अवधि के दौरान असहनीय पीड़ा और गर्भाशय रक्तस्राव में लाभकर है। केसर में crocetin नाम का एक केमिकल होता है जो रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है जिससे धमनियों की गंदगी कम हो जाती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण हैं जो ऑक्सीकरण के हानिकारक प्रभावों से जिस्म की रक्षा करती है।
सेवन विधि : 250 मिग्राम से 500 मिग्राम तक।

तुलसी कैप्सूल : पेट फूलना, अल्ज़ाइमर रोग, संधिवात, दमा, रक्त दोष, ब्रोंकाइटिस, हृदय रोग, नज़ला-जुकाम, सिर दर्द, खाँसी, कण्ठशोथ, अवसाद, मधुमेह, दस्त, पेचिश, मूत्र का दर्द के साथ अथवा कठिनाई से आना, Eosinophilia, बुख़ार, उदर वायु, गैस्ट्रिक विकार, धमनीकलाकाठिन्य, उच्च रक्तचाप, हिस्टीरिया, अपच, फ्लु, भूख की कमी, मलेरिया, जलोदर, अल्पशुक्राणुता, प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण लगातार रोगों में लिप्त रहना, बलग़म, आमवात, मौसमी बुख़ार, पुरूषत्व में कमी, वायुविवरशोथ, त्वचा रोग, गले में ख़राश, तनाव, स्तनों में दूध के बहाव और उत्पादन में कमी, तपेदिक, उल्टी और सांस बाहर छोड़ने में सीटी बजने जैसी आवाज़ निकलना में लाभदायक है।
सेवन विधि : 1–1 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन से पहले सेवन कराएं।

त्रिफला कैप्सूल : पेट फूलना, संधिवात, दमा, रक्त दोष, ब्रोंकाइटिस, हृदय रोग, नज़ला.जुकाम, कब्ज़, खाँसी, बुख़ार, उदर वायु, गैस्ट्रिक विकार, बालों का झड़ना, सिर दर्द, दुष्पचन, भूख की कमी, बवासीर, समय से पूर्व बुढ़ापा, समय पूर्व बाल सफ़ेद होना और नेत्र–ज्योती की कमज़ोरी में लाभदायक है।
सेवन विधि : 2–2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन के पश्चात सेवन कराएं।

देहल्वी ब्लू बाम : सिर दर्द, नज़ला, जुकाम, सीने की जकड़न, गले की ख़राश, खांसी, हड्डियों के दर्द जैसे अर्क़ुन्निसा, जोडों की सूजन और जोड़ों के दर्द के अतिरिक्त चोट लग जाने, मोच आ जाने और दैनिक विभिन्न प्रकार के कष्टों को दूर करने की अचूक औषधि है।
प्रयोग विधि : आवश्यकतानुसार प्रयोग कराएं।

देहल्वी नैचूरल शहद : शहद के लाभ उसके मज़ेदार स्वाद से कहीं बहुत अधिक हैं। शहद कार्बोहाड्रेट का एक महान प्राकृतिक स्रोत है, जो हमारे शरीर को शक्ति और उर्जा प्रदान करता है, इसीलिए यह खिलाड़ियों की प्रतिभा और मज़बूती को बढ़ाता है, साथ ही मांसपेशियों की थकान कम करने के लिए भी अति प्रभावशाली माना गया है। स्कूल जाने व व्यायामक रने से पहले शहद का एक चम्मच अवश्य लेना चाहिय। यह पूरी तरह से प्राकृतिक है, शहद में चीनी नहीं मिलाई गई है।
सेवन विधि : एक चम्मच दिन में दो बार सेवन कराएं।

नौरस : 9 गुणकारी जड़ी–बूटियों का मिश्रण, विषाक्त प्रभाव नाशक, रोग सुरक्षा प्रणाली मज़बूत करता, हृदय को स्वस्थ व सामान्य रखता, मांसिक तनाव डर को दूर करता, रक्तचाप व हृदय का संचालन नियमित करता, शरीर फुर्तीला व प्रसन्नचित करता, दीर्घायु बनाता व यौवन बढ़ाता, तनाव के कारण कमज़ोरी व उच्च रक्तचाप आदि में सहायक, शिथिलता और उलझन दूर करता, यकृत को विकार मुक्त रखने में सहायक, अपचन, अफारा, सीने की जलन, क़ब्ज़, अम्लपित्त व नासूर में लाभकारी, बुढ़ापे की प्रक्रिया को कम करता, सामान्य शारीरिक शक्ति बढ़ाता, मांसिक सतर्कता व चिंतन शक्ति बढ़ाता और स्मरण शक्ति तेज़ करता तथा त्वचा व बालों पर निखार लाता है।
सेवन विधिः 20–30 मि.ली. प्रतिदिन दो बार। स्वादानुसार 20–30 मि.ली. पानी भी मिला सकते हैं। शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

पुदीनौल : आपातकालीन स्थिति में उत्पन्न हो जाने वाले रोग जैसे चोट, घाव, सूजन, विषैले कीड़े का काटना व डंक मारना, सिर, कान व दांत का दर्द, पेट का दर्द, अंत्रशूल, दस्त, मतली, क़ै, उदर वायु व बदहज़मी में उपयोगी है । हैज़े की आरम्भिक स्थिति में क़ै और दस्तों को रोकती है और आमाशय की दुर्बलता को दूर करती है। हैज़ा जब बड़े स्तर पर फैला हुआ हो तो सावधानी स्वरूप पिलाई जा सकती है।
सेवन विधि : दवा के साथ है।

सेब सिरका : सेब सिरका मांस और सब्ज़ियों में मोटे फाइबर को तोड़ कर पाचन में मदद करता है। यह क्षारीय विषाक्तता के लिए भी दिया जाता है और मुहासे, दाद, सिर की जुंए और गंजापन के लिए इसे लगाया भी जाता है। यह एच.डी.एल. (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) को बढ़ाता है और ट्राइग्लिसराइड्स के स्तर को कम करता है। इसमें मैग्नीशियम होता है जो रक्त वाहिनियों को आराम देता है जिससे उच्च रक्तचाप कम हो जाता है। मोटापे में भी उपयोगी है।

सेवन विधि : दवा के साथ है।

आयुर्वेदिक औषधियां
(Ayurvedic Medicines)

आरोग्यवर्द्धिनी : सब प्रकार के हृदय रोग और हृदय शूल में उपयोगी है। मानसिक दुर्बलता को दूर कर अनिद्रा, घबराहट आदि में लाभकारी है।

सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

चंद्रप्रभावटी : मधुमेह और एलब्यूमिनूरिया के लिए उपयोगी है। मूत्राशय की दुर्बलता से बार–बार पेशाब आता हो या बूंद–बूंद टपकता हो, रात को सोते में पेशाब निकल जाता हो या अंडकोष बढ़ गए हो। ये तमाम रोग इसके सेवन से दूर हो जाते हैं। उपदंश, शीघ्रपतन, वीर्यपात के लिए भी लाभकर है। गुर्दों और आमाशय को शक्ति देती है। पुरूष और स्त्रि दोनों के लिए लाभ पहुंचाती है।

सेवन विधि : दो–दो गोलियां सुबह शाम 250 मिली लीटर दूध के साथ खिलाएं।

चिन्तामणि रस (स्वर्णयुक्त) : सब प्रकार के हृदय रोग और हृदय शूल में उपयोगी है। मानसिक दुर्बलता को दूर कर अनिद्रा, घबराहट आदि में लाभकारी है।

सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

त्रिफला चूर्ण : सूजन, मलेरिया बुख़ार, ख़ून, वीर्य विकार, क़ब्ज़, नेत्र रोग और पित्त की अधिकता को दूर करता है। इसके सेवन से शारीरिक गरिमा बढ़ती है। इससे सिर के बाल धोने से बाल मज़बूत और काले होते हैं।

सेवन विधि : 2 ग्राम से 6 ग्राम तक दिन में एक या दो बार खिलाएं।

देहल्वी च्यवनप्राश स्पेशलः यह आयुर्वेद का मशहूर जनरल टॉनिक है जो ताज़ा हरे आमले, केसर और चुनी हुई जड़ी बूटियों के साथ ख़ास मिश्रण से तैयार होता है। जिसके संबंध में वैद्यिक पुस्तकों में लिखा हुआ है कि महात्मा च्यवन जो बहुत बूढ़े और कमज़ोर थे, इसके सेवन से दोबारा नौजवान हो गए थे। दुर्बल शरीर को जवानी की शक्ति देने के लिए सर्वश्रेष्ठ टॉनिक होने के साथ–साथ यह नज़ला, ज़ुकाम, खांसी व दमे में लाभकर है। मुंह से ख़ून आने में फेफड़ों को सशक्त करता है। स्थायी ज्वर, गले की ख़राबी, आवाज़ बैठ जाना, ख़ून की कमी, कैलशियम की कमी और क़ब्ज़ को दूर करता है। दिल, दिमाग़, आमाशय और यकृत को पौष्टिकता उपलब्ध कराता है। स्मरण शक्ति में वृद्धि करता है। हर मौसम में हर उम्र के व्यक्ति इसका सेवन कर सकते हैं।

सेवन विधि : आयु के अनुसार एक से दो चम्मच (10 ग्राम से 20 ग्राम) रोज़ाना पानी या दूध के साथ खिलाएं।

बसंत कुसुमाकर रस (स्वर्णयुक्त) : मधुमेह में बहुत लाभकारी है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है। वीर्य की उत्पत्ति को बढ़ाता है और उसे गाढ़ा करता है। उपदंश की शिकायत को दूर करता है, वीर्य में गर्भ स्थापना की शक्ति पैदा करता है। मस्तिष्क और हृदय की दुर्बलता में भी उपयोगी है। शरीर के हर भाग से रक्त निकलने को रोकता है।

सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

बसन्तमालती रस (स्वर्णयुक्त) : यह पुराने बुख़ार, दौर्बल्य, राजयक्ष्मा, ग्रहणी, श्वेत प्रदर एवं सूखा फक्वरोग (रिकेटस) में विशेष लाभकारी है।

सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

बृहत वातचिन्तामणि रस (स्वर्णयुक्त) : सब प्रकार के हृदय रोग, हृदय शूल और हृदय की बढ़ी हुई गति में अत्यन्त लाभदायक है। वातवाहिनियों की निर्बलता, हिस्टीरिया आदि में इसका प्रयोग कराना उत्तम है।

सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

महायोगराज गूगल : आमवात, गठिया, फ़ालिज और लक़वे में उपयोगी है।

सेवन विधि : एक गोली दिन में दो बार पानी से खिलाएं।

महालक्ष्मीविलास रस (स्वर्णयुक्त) : यह सन्निपात जैसे भयंकर ज्वरों तथा वातज और कफज रोगों को नष्ट करता है। सब प्रकार के प्रमेह रोगों का भी यह नाशक है। नासूर, भगंदर, फीलपॉव, गले

की सूजन, अन्त्र–वृद्धि, अतिसार, खांसी, राजयक्ष्मा, बवासीर, दुर्गन्धयुक्त पसीना निकलना, आमवात, गलग्रह, गलगण्ड, वातरक्त, उदररोग, कर्णरोग, नाक के रोग, आंख के रोग, सब प्रकार के शूल, सिर दर्द व स्त्री–रोग को नष्ट करता है।
सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

लवण भासकर चूर्ण : आमाशय और अंतड़ियों के रोगों को दूर करता है। बदहज़मी, भूख न लगना, क़ै, दस्त, खट्टी डकारें, पेट में दर्द, संग्रहणी के पतले दस्त, गर्भावस्था की क़ै आदि सब रोगों में समान रूप से उपयोगी है।
सेवन विधि : एक ग्राम से 3 ग्राम तक छाछ से खिलाएं।

लक्ष्मीविलास रस (स्वर्णयुक्त) : यह सन्निपातजनित उपद्रवों को नष्ट करता है। नासूर, अर्श, भगंदर, फीलपॉव, अन्त्र–वृद्धि, गलशेथ, अतिसार, आमवात, गलग्रह, उदररोग, कर्णरोग, कास रोग, राजयक्ष्मा, दुर्गन्धयुक्त पसीना निकलना, सब प्रकार के शूल, सिर दर्द व स्त्री–रोग को नष्ट करता है। काम–शक्ति और नेत्र ज्योति की अपूर्व वृद्धि हाती है।
सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम खिलाएं।

सिद्ध मकरध्वज : पुरूषत्व की रक्षा करती है। शक्ति प्रदान करती है।
सेवन विधि : 1/2 से एक टिकिया तक सुबह शाम खिलाएं।

सीतोप्लादी चूर्ण : पुराने ज्वर, आम शारीरिक दुर्बलता, खांसी, दमे, मुंह से खून आने, नज़ले, ज़ुकाम और हाथ पैर में जलन के लिए सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
सेवन विधि : 1 ग्राम से 3 ग्राम तक 10 ग्राम शहद में मिलाकर सुबह शाम चटाएं।

सूतशेखर रस बृहत (स्वर्णयुक्त) : अम्लपित्त, वमन, संग्रहणी, खांसी, गुल्म, मन्दाग्नि, पेट फूलना, हिचकी आदि रोग नष्ट करता है। श्वास तथा राजयक्ष्मा में भी इसका प्रयोग कराया जाता है। पित्त और वातजन्य विकारों को शांत करता है।
सेवन विधि : एक टिकिया सुबह शाम शहद से खिलाएं।

हींगवाष्टक चूर्ण : बदहज़मी, आमाशय की दुर्बलता, संग्रहणी के दस्त, बाऊगोला, उदर वायु के दर्द, अफारा आदि को दूर करता है। भूख लगाता और भोजन को पचाता है। जब आमाशय में भोजन न पचता हो इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।
सेवन विधि : 2 ग्राम से 4 ग्राम तक सुबह शाम खाना खाने के बाद थोड़े पानी से खिलाएं।